जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

चूरू

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 256906, 256907, फैक्सः- 01562-256908 वर्षः 16 संख्याः 91 प्रभात चूरू, रविवार 28 जुलाई, 2024 पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा का कार्यकाल छः माह और बढ़ा

ऐसा माना जा रहा है कि प्र.मंत्री मोदी व संघ प्रमुख मोहन भागवत के बीच पार्टी को कंट्रोल करने के लिये चल रही खींचतान के कारण नड्डा को एक्सटैंशन देना आवश्यक हो गया था

- रेणु मित्तल -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 जुलाई। भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा अगले 6 माह तक पार्टी अध्यक्ष पद पर बने रहेंगे। उनका कार्यकाल समाप्त हो चुका है तथा अब वे कार्यकाल विस्तार पर हैं।

उनका कार्यकाल क्यों बढ़ाया गया, जबकि उनके स्थान पर कोई अन्य नेता अध्यक्ष बनना था। इसीलिये तो उन्हें एन.डी.ए. सरकार के गठन के समय केन्द्रीय मन्त्री बनाया गया था।

नया अध्यक्ष न बनाये जाने के पीछे मूल कारण आर.एस.एस. प्रमुख मोहन भागवत एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बीच चल रही रस्साकशी है। भागवत चाहते हैं कि उनकी पसंद का कोई कट्टर आर.एस.एस. समर्थक व्यक्ति भाजपा अध्यक्ष बने, जिससे पार्टी का नियन्त्रण फिर से उनके हाथों में आ जाये, जो मोदी-शासन के दस वर्षों के दौरान, उनके हाथों से निकल गया है।

दूसरी तरफ, मोदी अपनी पसन्द का कोई व्यक्ति चाहते हैं, जिससे पार्टी तथा सरकार दोनों में ही सत्ता उनके नियन्त्रण में रहे। इसलिए, नए अध्यक्ष का निर्णय अभी टाल दिया गया है।

अगले छः महीने, मोदी 75 वर्ष की आयु को पार कर लेंगे। यही आयु-सीमा रिटायर होने के लिये तय की गई है, जिससे अपेक्षाकृत युवा नेता सत्ता के संचालन तन्त्र में आ सकें।

यहाँ यह याद दिलाना उचित होगा कि एल.के.आडवाणी तथा मुरली मनोहर जोशी तथा अन्य उम्रदराज नेताओं को रिटायर कर सत्ता से बाहर कर दिया गया था, क्योंकि वे लोग 75 वर्ष के हो चुके थे। आर.एस.एस. मोदी शासन का अन्त करने तथा उनके स्थान पर अपनी पसंद का नेता लाने के लिये कारणों की तलाश रही है। जब 2024

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- यह भी माना जा रहा है कि मोहन भागवत नया भाजपा अध्यक्ष पूर्णतया आर.एस.एस. का कट्टर समर्थक चाहते हैं। जिससे पुनः भाजपा पर उनका पूर्णतया नियंत्रण हो।
- मोदी शासन के गत दस वर्षों में संघ का भाजपा में प्रभाव कम हो गया था तथा नये पार्टी अध्यक्ष के मार्फत भागवत पुनः भाजपा पर संघ का प्रभाव स्थापित करना चाहते हैं।
- छः माह में मोदी 75 वर्ष के हो जायेंगे तथा आडवाणी व मुरली मनोहर जोशी की भांति उन्हें भी रिटायर होना पड़ेगा तथा बागडोर युवा पीढ़ी के नेता को सौंपनी पड़ेगी।
- आर.एस.एस. मोदी को लोकसभा चुनाव के बीच ही रिटायर करना चाहती थी, जब भाजपा लोकसभा में अल्पमत में आ गयी थी, पर, मोदी ने सीधे एन.डी.ए. की ओर से प्र.मंत्री पद का उम्मीदवार बनकर भाजपा के संसदीय बोर्ड की भूमिका गौण कर दी थी।
- अब मोदी की आयु 75 वर्ष होने के बाद एक संघर्ष की स्थिति बनेगी तथा आर.एस.एस. मूल के सांसदों की भूमिका निर्णायक हो जायेगी। ऐसा माना जा रहा है कि योगी आदित्यनाथ का रोल भी महत्वपूर्ण होगा, क्योंकि निरंतर चर्चा जोर पकड़ती जा रही है कि मोदी-शाह द्वय योगी को हटाना चाहते हैं।

जे.डी.ए. सचिव गिरफ्तारी वॉरंट और जे.डी.सी. जमानती वॉरंट से तलब

जयपुर, 27 जुलाई (का.सं.)। जिला उपभोक्ता आयोग, चतुर्थ ने पृथ्वीराज नगर (पी.आर.एन.) में भूखंड देने से जुड़े मामले में सुप्रीम कोर्ट तक केस हारने के बाद भी, 11 साल में आयोग के आदेश की पालना नहीं करने पर जे.डी.ए. सचिव हेमपुष्पा शर्मा के गिरफ्तारी वारंट जारी किए हैं।

- जिला उपभोक्ता आयोग ने पृथ्वीराज नगर योजना में भूखंड देने के एक मामले में यह आदेश दिए। इस मामले में जे.डी.ए. सुप्रीम कोर्ट में भी हार चुका है फिर भी परिवादी शंभुदयाल अग्रवाल को भूखंड नहीं दिया गया।

आयोग ने गांधी नगर एस.एच.ओ. को निर्देश दिया है कि वे सचिव को गिरफ्तार कर 12 अगस्त को आयोग के समक्ष पेश करें। इसी के साथ आयोग ने जे.डी.सी. मंजू राजपाल को भी 10 हजार रुपए के जमानती वारंट से 12 अगस्त को तलब किया है और वारंट की तामील की जिम्मेदारी गांधीनगर एस.एच.ओ. को दी है। आयोग ने यह आदेश परिवादी शम्भूदयाल अग्रवाल के प्रार्थना पत्र पर दिया। प्रार्थना पत्र में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नीति आयोग प्रकरण में ममता बनर्जी की मजबूरी झलकती है?

नीति आयोग की बैठक में उन्होंने महसूस किया कि वे अलग-थलग पड़ गईं और एकमात्र गैर-भाजपा मु.मंत्री बनकर रह गईं, जो नीति आयोग की बैठक में भाग ले रही हैं

- अंजन रॉय -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 जुलाई। हर तरीके से ममता बनर्जी राष्ट्र का ध्यान उनकी ओर आकर्षित करने के लिए बेताब हो रही हैं क्योंकि अब वो राष्ट्रीय राजनीति में शुन्य पर चली गईं हैं।

ममता बनर्जी ने दिल्ली में आयोजित नीति आयोग की बैठक पर अपने क्रोध का इज़हार किया और दावा किया कि उन्हें बैठक में अपनी बात रखने का पर्याप्त समय नहीं दिया गया। उन्होंने उनके साथ हुई घटना के बारे में दावे के साथ कहा कि उनका माइक जानबूझकर बंद कर दिया गया था।

उनके इस बेबुनियाद आरोप के जवाब में केन्द्र सरकार ने उनके इस दावे का खंडन किया कि उनका माइक बंद कर दिया गया था, सरकार ने दावे के साथ कहा कि यह आरोप सत्य नहीं है।

दुसरी तरफ, बंगाल से उनके इंडिया गठबंधन के एक प्रतिनिधि ने उनके इस दावे को बकवास बताया।

पश्चिम बंगाल से कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी जो एक बार संसद में विपक्ष के नेता रह चुके हैं उन्होंने ममता बनर्जी पर आरोप लगाया कि वे राहुल गांधी के राष्ट्रीय राजनीति में मुख्य भूमिका में आने के कारण उनसे बहुत "ईर्ष्या" करती हैं।

अधीर रंजन ने कहा कि ममता बनर्जी यह जानती थीं कि नीति आयोग की बैठक में क्या होने वाला है इसलिए उन्होंने अपनी ओर ध्यान केन्द्रित करने के लिए जानबूझकर यह सब नाटक किया था। ममता बनर्जी प्रधानमंत्री की उपस्थित में दिल्ली में आयोजित नीति

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- अतः उनके पास कोई अन्य विकल्प नहीं बचा, इसके अलावा नीति आयोग की बैठक के बीच में बायकॉट का नाटक रचकर वॉकआउट करें।
- प्रैस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो (पी.आई.बी.) ने "फैक्ट चैक" करके अपना निर्णय सुनाया कि ममता बनर्जी का दावा गलत है कि उनका "माइक" बंद कर दिया गया और उन्हें बोलने का पर्याप्त समय नहीं दिया गया। पी.आई.बी. के अनुसार उन्हें जो समय आवंटित था, उन्होंने न केवल उसका पूरा उपयोग किया, बल्कि अपने आवंटित समय से ज्यादा समय लिया और उनका समय खत्म होने के बाद भी उनको रोकने के लिये घंटी भी नहीं बजाई थी।
- कांग्रेस के बंगाल के नेता अधीर रंजन चौधरी, जो लोकसभा में विपक्ष के नेता भी रह चुके हैं, ने सार्वजनिक बयान में कहा, ममता बनर्जी को भारी जलन हो रही है राहुल गांधी से, क्योंकि वे लोकसभा में विपक्ष के नेता ही नहीं बने, बल्कि इण्डिया गठबंधन की राजनीति अब उनके चारों तरफ ही घूम रही है।

राजस्थान से बैंगलुरू भेजा गया 14,000 किलोग्राम संदिग्ध "डॉग मीट" जब्त

समझा जाता है कि बैंगलुरू में रैस्त्रां अपने ग्राहकों को मटन के नाम पर डॉग मीट परोस रहे हैं

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 जुलाई। संभावना है कि बेंगलुरू के रैस्त्रां और भोजनालय अपने ग्राहकों को कुत्ते का मांस (डॉग मीट) परोस रहे हैं। यह बात तब सामने आई, जब पुलिस व स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने राजस्थान से आई एक ट्रेन से कार्टनों में भरकर आया संदिग्ध डॉग मीट जब्त किया।

स्थानीय पुलिस के अनुसार, व्यापारी लोग आमतौर पर ट्रेन से मांस के कार्टन भेजते हैं। कुछ आकलनों के अनुसार, राजस्थान से तकरीबन 14,000 किलो मांस ट्रेन से बेंगलुरू भेजा जाता है। शुक्रवार को स्थानीय पुलिस तथा फूड सेफ्टी एण्ड स्टैण्डर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इण्डिया के कर्मियों ने जयपुर- मैसूर एक्सप्रेस से आए संदिग्ध डॉग मीट के 150 कार्टन जब्त किए। फूड सेफ्टी एण्ड स्टैण्डर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इण्डिया (एफ.एस.एस.ए.आई.) ने एक प्रेस कॉन्फ्रैंस में बताया कि मांस के सैम्पल जांच व परीक्षण के लिए लैबोरेटरी भेजे गए हैं। यह भी कहा गया कि प्रतिबंधित पशु मांस भेजने और रैस्त्रां तथा भोजनालयों को बेचने के दोषी पाए गए लोगों को सख्त सजा दी जाएगी।

गौ रक्षक समूहों के अनुसार, राजस्थान से हर रोज बड़ी तादाद में मांस ट्रेन से बेंगलुरू आता है। शुक्रवार को अधिकारियों ने बेंगलुरू के यशवंतपुर रेलवे स्टेशन पर मीट के ट्रकों को पकड़ा, जिन पर शहर में वितरण के लिए मांस के कार्टन लादे जा रहे थे। यह माल जयपुर- मैसूर एक्सप्रेस से आया था। सूचना मिलने पर बी.बी.एम.पी. (बृहत बेंगलुरू महानगर पालिका) के स्वास्थ्य अधिकारी तुरंत रेलवे स्टेशन पहुँचे।

ज्ञातव्य है कि डॉग मीट के व्यापार पर प्रतिबंध है तथा नागालैण्ड, मिज़ोरम और अरुणाचल प्रदेश में, जहाँ कथित

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- स्थानीय पुलिस ने बताया कि जयपुर-मैसूर एक्सप्रैस से 14,000 किलोग्राम मांस के कार्टन राजस्थान से बैंगलोर भेजे गए थे।
- स्थानीय पुलिस व फूड सेफ्टा एण्ड स्टैंडर्ड अथॉरिटी ऑफ इंडिया के अधिकारियों को खबर मिली कि कार्टनों में संभवतया "डॉग मीट" है।
- बेंगलुरू के यशवंतपुर रेल्वे स्टेशन पर जब ये कार्टन ट्रकों में लादे जा रहे थे तब पुलिस ने इन्हें जब्त कर लिया और सैम्पल टैस्ट के लिए भेजे हैं।
- अगर साबित हो गया कि यह डॉग मीट है तो दोषियों पर सख्त कार्यवाही की जाएगी।

दिल्ली: कोचिंग सैन्टर के बेसमैंट में पानी भरा, दो स्टूडैंट्स की मौत

नई दिल्ली, 27 जुलाई। दिल्ली में बारिश के बाद कई इलाकों में पानी भर जाने की जानकारी सामने आई है। सेंट्रल दिल्ली के राजेंद्र नगर में यू.पी.एस.सी. एग्जाम की तैयारी कराने वाले एक कोचिंग सेंटर के बेसमेंट में पानी भर गया। घटना में दो छात्राओं के मौत की खबर है। घटना की जानकारी मिलते ही फायर और एनडीआरएफ की टीमें बचाव के लिए पहुंचीं। घटना राव आई.ए.एस. स्टडी सैंटर की बताई जा रही है। दिल्ली सरकार ने घटना की मजिस्ट्रेट जांच के आदेश दे दिए हैं।

घटना पर डी.सी.पी. सैंट्रल एम हर्षवर्धन ने बताया कि शाम 7 बजे हमें सूचना मिली कि राजेंद्र नगर में एक यू.पी.एस.सी. कोचिंग संस्थान के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- दिल्ली के राजेन्द्र नगर इलाके में बारिश के बाद कोचिंग के बेसमैंट में पानी भर गया, जिससे वहां क्लास ले रहे कई स्टूडैंट्स फंस गये तथा दो छात्राओं की मौत की जानकारी सामने आई है।

ममता बनर्जी ने भविष्य में आयोजित नीति आयोग की किसी भी बैठक में भाग न लेने की धमकी दी

विपक्ष के नेता ममता बनर्जी का समर्थन करते हुए नज़र आये

- श्रीनन्द झा -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 जुलाई। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी आज नीति आयोग की चल रही बैठक से बीच में ही बाहर आई और आरोप लगाया कि उन्हें बैठक में बहुत कम समय बोलने दिया। उन्होंने सिर्फ इतना ही नहीं कहा बल्कि यह भी धमकी दी कि वे भविष्य में आयोजित होने वाली बैठकों में उपस्थित नहीं होंगी। बनर्जी ने कहा कि नीति आयोग के पास कोई वित्तीय शक्तियां नहीं हैं। इस संस्था को या तो वित्तीय शक्तियों से समर्थ बनाया जाए, या फिर जो पहले योजना आयोग था उसे पुनर्जीवित किया जाए।"

विपक्षी नेताओं ने भी बनर्जी की इस शिकायत का साथ दिया कि बैठक में उनके भाषण को छोटा कर दिया क्योंकि उनके भाषण के दौरान उनके माइक की आवाज बंद कर दी गई थी। इस घटना पर स्टालिन ने अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि "क्या यही सहभागिता वाला संघवाद है? क्या एक मुख्यमंत्री से व्यवहार का यही तरीका है? भाजपा की केन्द्र सरकार को यह समझ लेना चाहिए कि विपक्षी दल हमारे लोकतंत्र का अभिन्न हिस्सा हैं और उन्हें चुप कराने के लिए उनके साथ शत्रुओं जैसा व्यवहार नहीं करना चाहिए।"

इस मामले पर लालू प्रसाद की पार्टी राष्ट्रीय जनता दल (आर.जे.डी.) ने भी सरकार को आड़े हाथों लिया और नीति आयोग को एक "विफल विचार" बताया। राजद के राज्यसभा सांसद मनोज झा ने नीति आयोग पर टिप्पणी करते हुए कहा "नीति आयोग क्या है? यह वह निकाय है जिसे एक विशेष अकादमिक अभ्यास के लिए गठित किया है। इससे क्या उपलब्धि प्राप्त हुई है? साफतौर से कुछ भी नहीं। योजना आयोग से क्या परेशानी थी? सिर्फ यह कि वह नेहरू के समय से चली आ रही थी, इसलिए नीति आयोग का गठन किया गया। परन्तु आप नेहरू युग की कई चीजों को अभी तक चला आ रहा था।

मीडिया के एक वर्ग ने ममता बनर्जी के नीति आयोग की आज की बैठक में उपस्थित होने के निर्णय को इंडिया गठबंधन में बढ़ती हुई दरार कहा था, क्योंकि विपक्ष-शासित सात राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने "भेदभावपूर्ण बजट प्रस्तावों" के विरोध में नीति आयोग की बैठक का बहिष्कार करने का निर्णय किया था। उन्होंने बजट प्रस्तावों को विपक्ष शासित राज्यों की उपेक्षा और उनके साथ भेदभाव करने के समान बताया। इसका बनर्जी ने बैठक में लगभग उसी अंदाज में अपनी बात कही। इससे पूर्व बनर्जी ने जेल में बंद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल की पत्नी सुनीता से मुलाकात की ओर उन्हें समर्थन का विश्वास दिलाया। कुछ सप्ताह पूर्व उनकी मुम्बई यात्रा के दौरान बनर्जी ने एन.सी.पी. (एस.पी.) के अध्यक्ष शरद पवार एवं शिव सेना (यू.बी.टी.) के अध्यक्ष उद्धव ठाकरे

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- तमिलनाडू के मु.मंत्री स्टालिन ने कहा, ऐसा बर्ताव किसी भी मु.मंत्री से नहीं किया जा सकता। विपक्ष प्रजातंत्रीय व्यवस्था का हिस्सा है कोई शत्रु नहीं, जिसे इस तरह चुप कराया जा सकता है।
- लालू यादव ने कहा, "फेल्ड आइडिया" (असफल सोच) है नीति आयोग, योजना आयोग वो ही काम कर रहा था, जो नीति आयोग से अपेक्षा है। मोदी सरकार ने योजना आयोग केवल इसलिये भंग किया क्योंकि यह नेहरू जी के समय गठित हुआ था।
- बहरहाल दिल्ली में ममता बनर्जी अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता से उनके घर जाकर मिलीं तथा पूरा समर्थन देने का वादा किया।
- इसी प्रकार वे मुम्बई यात्रा के दौरान वरिष्ठ नेता शरद पवार व उद्धव ठाकरे से भी मिली थीं, विपक्ष में एकता दिखाने के लिये।

मुख्यमंत्री भजनलाल ने की बड़ी घोषणा

नई दिल्ली/जयपुर, 27 जुलाई (का.सं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कारगिल विजय दिवस (26 जुलाई) के अवसर पर सेना के अग्निवीरों के लिए बड़ी घोषणा की है। उन्होंने कहा कि समर्पण और राष्ट्र भक्ति की भावना से देश की सीमाओं की रक्षा करने वाले अग्निवीरों के लिए राजस्थान सरकार ने राज्य पुलिस, जेल प्रहरी और वनरक्षक के रूप में आरक्षण का प्रावधान रखा है।

शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में राज्य सरकार के इस फैसले से अग्निवीरों को देश की सेवा के बाद प्रदेश में भी काम करने का अवसर प्राप्त होगा।

- अग्निवीरों को राज्य पुलिस, जेल प्रहरी और वनरक्षक के रूप में आरक्षण मिलेगा।

'जब मैं नीति आयोग की बैठक में बोलने लगी तो मेरा माइक बंद कर दिया गया'

प.बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने केन्द्र सरकार पर सनसनीखेज आरोप लगाकर बैठक से वॉकआउट किया

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 जुलाई। केन्द्र सरकार और गैर भाजपा शासित राज्यों के बीच बढ़ते मतभेद का स्पष्ट नज़ारा नीति आयोग की बैठक में दिखा। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी एकमात्र विपक्षी मुख्यमंत्री थीं जो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हुई नीति आयोग की बैठक में शामिल हुई थीं, पर जब वो कुछ बोल रही थी उस समय उनका माइक्रोफोन बंद कर दिया गया तो वे नाराज़ होकर मीटिंग छोड़कर बाहर आ गईं।

बनर्जी ने नीति आयोग की बैठक में राजनैतिक भेदभाव का आरोप लगाया। गैर भाजपा शासित राज्यों में से सिर्फ पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ही बैठक में शामिल हुई थीं और इंडिया ब्लॉक के बाकी सभी मुख्यमंत्रियों ने बैठक का बहिष्कार किया था।

बनर्जी का दावा है कि उनका माइक म्यूट कर दिय गया और सिर्फ 5 मिनट ही बोलने दिया गया। लेकिन केन्द्र सरकार ने प्रैस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो द्वारा फैक्ट चैक करवाकर इस दावे को खारिज कर दिया।

बनर्जी ने पत्रकारों से कहा कि, "मैंने कहा था आपको (केन्द्र) राज्यों के साथ भेदभाव नहीं करना चाहिए मैं बोलना चाहती थी पर मेरा माइक बंद था। मुझे सिर्फ 5 मिनट बोलने दिया गया पर मुझ से पहले वालों को 10-20 मिनट दिए गए थे। मैंने मीटिंग से वॉक आउट किया है। मैं भविष्य में कभी भी नीति आयोग की बैठक में हिस्सा नहीं लूंगी।"

ममता बनर्जी ने कहा कि मैंने मीटिंग में कहा केन्द्र सरकारों को राज्यों में भेदभाव नहीं करना चाहिए। सरकारें ऐसे नहीं चलतीं। सभी से समान व्यवहार करना चाहिए। भाजपा शासित राज्यों और भाजपा समर्थक राज्यों के मुख्यमंत्रियों को 15-20 मिनट बिना किसी टोकाटाकी के बोलने दिया गया। असम, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री 10-15 मिनट बोले। आंध्र के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू 20 मिनट बोले। बनर्जी ने आगे कहा, "मैं एक मात्र मुख्यमंत्री थी, जो विपक्ष शासित राज्य से थी। उन्हें इसके बारे में खुश होना चाहिए था और मुझे बोलने देना चाहिए था।"

बनर्जी ने कहा कि उनके साथ जो व्यवहार हुआ है वह सभी क्षेत्रीय दलों का अपमान है।

विपक्षी दलों ने पूर्व में आरोप लगाया था कि बजट में आंध्र व बिहार पर मेहरबानी की गई क्योंकि केन्द्र सरकार इन दो राज्यों के समर्थन पर टिकी है।

कांग्रेस ने तो पहले ही कह दिया था कि पक्षपाती बजट के विरोध में कांग्रेस के मुख्यमंत्री नीति आयोग की बैठक में भाग नहीं लेंगे।

अन्य विपक्षी दलों ने भी बजट में पक्षपात के खिलाफ नीति आयोग की बैठक में भाग लेने से मना कर दिया था। तमिलनाडू के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने बायकॉट की घोषणा करने की शुरुआत की। उसके बाद कांग्रेस शासित राज्यों जैसे हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक व तेलंगाना ने भी बैठक के बहिष्कार की घोषणा की और फिर पंजाब, केरल व झारखंड ने भी यही रूख अपनाया।

- मरने वाले सभी लोग एक ही परिवार के थे।

अनंतनाग में वाहन खाई में गिरा, आठ लोगों की मौत

श्रीनगर, 27 जुलाई। जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग जिले में शनिवार को एक वाहन के खाई में गिर जाने से पांच बच्चों सहित आठ लोगों की मौत हो गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। हादसा डकसुम किश्तवाड़ रोड पर अरशान के पास हुआ।

अधिकारियों ने कहा कि वाहन किश्तवाड़ से डकसुम की ओर जा रहा था, तभी चालक ने नियंत्रण खो दिया और खाई में लुढक गया, जिससे एक ही परिवार के आठ लोगों की मौत हो गई। दुर्घटना के तुरंत बाद, वरिष्ठ नागरिक और पुलिस अधिकारी घटनास्थल पर पहुंचे। मृतकों में पांच बच्चे और दो महिलाएं शामिल हैं।

मृतकों की पहचान किश्तवाड़ के पुलिसकर्मी इम्तियाज राथर, अफरोजा बेगम, रेशमा और छह से 15 साल की उम्र के बीच के पांच बच्चों के रूप में की गई। जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल, मनोज

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

मूर्ख आदमी अपने बड़े से बड़े दोष अनदेखा करता है, किन्तु दूसरे के छोटे से छोटे दोष को देखता है। –संस्कृत सूक्ति

गरीबी दूर करने के लिए शिक्षा की अनिवार्यता

शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति ज्ञान, कौशल, मूल्य, और व्यवहार सीखते हैं, जो उनके बौद्धिक, नैतिक, और शारीरिक विकास को बढ़ाते हैं। यह व्यक्तियों को समाज में सक्रिय और जिम्मेदार नागरिक बनने में मदद करती है, नवीन विचार और प्रौद्योगिकी सीखने के अवसर प्रदान करती है, और इस प्रकार जीवन में सफलता प्राप्त करने में सहायक होती है। शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान को रटना नहीं, बल्कि विश्लेषणात्मक समझ और क्रिटिकल थिंकिंग के कौशल का विकास करना है, जो व्यक्तियों को जानकारी का उपयोग कर समस्याओं का समाधान करने और जीवन में उन्नति करने में सक्षम बनाता है।

आइए देखें कि विश्व भर में उच्च शिक्षा और गरीबी के बीच संबंध कैसे हैं। जैसे, स्कैंडिनेवियाई देशों में जहां शिक्षा का स्तर उच्च है, वहाँ गरीबी अत्यंत कम है। ये देश शिक्षा में भारी निवेश करते हैं और शिक्षा सभी के लिए सुलभ है। इसके विपरीत, अफ्रीकी महाद्वीप के कई देशों में शिक्षा की पहुँच सीमित है और गुणवत्ता कम है, जिससे ये देश गरीबी में डूबे हुए हैं। इससे स्पष्ट है कि शिक्षा का स्तर और गरीबी के बीच सीधा संबंध है।

पढ़े-लिखे लोग स्वयं को गरीबी से बाहर कैसे कर लेते हैं और गरीबी से मुक्त होकर पुन: वापस गरीबी में गिरने से बचने में अधिक सक्षम और समर्थ कैसे रहते हैं? वस्तुत: इस मैकेनिज्म ऑफ़ एक्शन को समझने के लिए इस विषय पर वर्ष 2024 तक 33,232 शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इस विषय पर 700 से अधिक शोधपत्र ऐसे हैं जिनके शीर्षक में शिक्षा और गरीबी का सन्दर्भ है। आइये देखते हैं, शिक्षा किस प्रक्रिया से गरीबी दूर करती है और पुन: गरीबी में गिरने से बचाती है।

शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को न केवल बेहतर रोजगार मिलते हैं, बल्कि यह उन्हें समाज में सक्रिय और जागरूक नागरिक बनने में भी सहायक होती है। वर्ष 2024 में 38 देशों के आंकड़ों के आधार पर प्रकाशित एक शोध के अनुसार, उच्च शिक्षा का प्रचार-प्रसार न केवल समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देता है बल्कि आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन में भी सहायक होता है। विश्व बैंक के अनुसार, शिक्षित व्यक्ति उच्च आय वाली नौकरियों के लिए योग्य होते हैं और उनके पास बेहतर स्वास्थ्य और जीवन स्तर तक पहुँच होती है, जिससे समाज के समग्र विकास में योगदान मिलता है।

अध्ययन यह भी बताता है कि उच्च शिक्षा का प्रचार-प्रसार शैक्षिक विकास और वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी नवाचार को प्रोत्साहित करता है, जिससे देश की अर्थव्यवस्था पर गहरा धनात्मक प्रभाव पड़ता है। स्वाभाविक है सरकारों को उच्चकोटि की विद्यालयीन शिक्षा के साथ ही उच्च-शिक्षा के प्रसार पर ध्यान देना चाहिए ताकि देश के आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन दोनों को बढ़ावा मिल सके। यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार, प्रत्येक अतिरिक्त वर्ष जो किसी व्यक्ति ने स्कूल में बिताया है, उससे उसकी औसत आय में 10 प्रतिशत की वृद्धि होती है। इससे न केवल व्यक्तिगत आय में सुधार होता है, बल्कि यह राष्ट्रीय आर्थिक विकास को भी बढ़ावा देता है। शिक्षा से लोगों को बेहतर रोजगार पाने, उद्यिमता की ओर बढ़ने और आर्थिक अवसरों का लाभ उठाने की क्षमता मिलती है।

चीन में वर्ष 2024 में प्रकाशित एक अध्ययन शिक्षा और सापेक्ष गरीबी के मध्य रिश्तों के साथ ही शिक्षा और सापेक्ष गरीबी के अंतर-पीढ़ीगत संचरण में कमी पर किया गया। इसके निष्कर्ष स्पष्ट करते हैं कि जैसे-जैसे बच्चों की अनिवार्य शिक्षा की अवधि एक सेमेस्टर से बढ़ती है, उनके सापेक्ष गरीबी का अनुभव करने की संभावना 6-8 प्रतिशत तक कम हो जाती है। सापेक्ष गरीबी के अंतर-पीढ़ीगत संचरण को शिक्षा ही रोक सकती है।

यहां आपको याद रखना चाहिए कि शिक्षा भले ही गरीबी मिटाने के लिए जरूरी हो, पर गरीबी खुद शिक्षा प्राप्त करने में एक बड़ी बाधा है। गरीबी से जुड़ी चुनौतियाँ शैक्षिक उपलब्धियों में असमानता बढ़ाती हैं, जो बाद में आय, स्वास्थ्य और खुशहाली में भी असमानता का कारण बनती हैं। स्कूल सीधे तौर पर गरीबी का मुकाबला तो नहीं कर सकते, पर वे गरीबी के कलंक से निपटने और स्कूली शिक्षा को अधिक समान बनाने की नीतियाँ लागू कर सकते हैं। सरकारों को भी हर बच्चे को उनकी पसंद के विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के लिए जरूरी संसाधन मुहैया कराने चाहिए। इसके अलावा, शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और शिक्षकों की क्षमता बढ़ाने के लिए भारी निवेश की आवश्यकता है, जिससे भारत की शिक्षा प्रणाली में सुधार हो सके।

इस प्रकार, शिक्षा गरीबी उन्मूलन और सतत विकास के लिए एक अनिवार्य साधन है। यह व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर विकास को संभव बनाता है, जिससे एक समृद्ध, स्वस्थ और संतुलित समाज की नींव रखी जा सकती है। शिक्षा के माध्यम से, व्यक्ति न केवल अपने जीवन में सुधार कर सकते हैं, बल्कि वे समाज के लिए भी उपयोगी और जिम्मेदार नागरिक बन सकते हैं।

दूसरी बात यह है कि शिक्षित व्यक्ति अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहते हैं और समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं के प्रति संवेदनशील होते हैं। इस प्रकार वे न केवल अपने लिए बल्कि समाज के अन्य वर्गों के लिए भी बेहतर परिस्थितियाँ बनाने में योगदान देते हैं।

तीसरी बात यह है कि शिक्षा सामाजिक असमानताओं को कम करने में मदद करती है। उच्च गुणवत्ता वाली उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेने पर सभी के लिए समान अवसर प्राप्त होते हैं, चाहे व्यक्ति की आर्थिक या सामाजिक स्थिति कुछ भी हो। इससे समाज में व्याप्त जातिगत, लैंगिक और आर्थिक भेदभाव को कम करने में मदद मिलती है, और सभी वर्गों के लोगों को उनकी प्रतिभा और क्षमता के अनुसार आगे बढ़ने का मौका मिलता है। स्वाभाविक है कि जब व्यक्ति, परिवार, व समाज उन्नति करते हैं तो राष्ट्र उन्नति करता है।

अंतत:, शिक्षा व्यक्तियों को नई तकनीकों और विचारों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है, जो आर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन के लिए अनिवार्य हैं। इस प्रकार, शिक्षा गरीबी उन्मूलन के साथ-साथ सतत विकास के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करती है, जिससे न केवल व्यक्तिगत जीवन में सुधार होता है, अपितु समाज के हर क्षेत्र में प्रगति सुनिश्चित होती है। इसलिए, यह आवश्यक है कि शिक्षा को हर स्तर पर प्रोत्साहित किया जाए और इसे सभी के लिए सुलभ बनाया जाए। इसके माध्यम से हम एक ऐसे समाज की नींव रख सकते हैं जो न केवल अधिक जागरूक और शिक्षित हो, बल्कि अधिक समृद्ध और समानता युक्त हो।

शिक्षा के महत्व को समझने और इसे व्यापक रूप से लागू करने के लिए, सरकारों, समुदायों और व्यक्तियों का सामूहिक प्रयास आवश्यक है। यह सहयोग न केवल शैक्षिक अवसरों को बढ़ाएगा बल्कि एक ऐसा वातावरण भी तैयार करेगा जहाँ हर व्यक्ति अपनी पूर्ण क्षमता तक पहुँच सके। इस प्रक्रिया से शिक्षा गरीबी उन्मूलन और सतत विकास के लिए एक महत्वपूर्ण साधन बन सकती है। इसलिए, शिक्षा को समाज के समग्र विकास के लिए एक प्राथमिकता के रूप में देखा जाना चाहिए।

यहाँ कुछ बातें ध्यान रखना आवश्यक है। शिक्षा के माध्यम से कौशल को बढ़ावा देना होगा। शिक्षा का अर्थ रट्टामार ज्ञान या रोट-लर्निंग नहीं, विश्लेषणात्मक समझ का विकास है। शिक्षा कौशल का मूल है। अगर कौशल विकास नहीं हुआ तो वह शिक्षा, शिक्षा नहीं है। अगर कौशल नहीं है तो डिग्रियां सिर्फ कागज का टुकड़ा हैं। लेकिन, जैसा कि हम पूर्व में बता चुके हैं कि गरीबी दूर करने में व्यक्ति को शिक्षित होने के साथ स्वस्थ भी होना चाहिए और वहां के समाज और प्रशासन व्यवस्था में शांति होनी चाहिए तथा बढ़िया पर्यावरण संरक्षण होना भी आवश्यक है। इन चारों को बहुत व्यापक अर्थ में समझना आवश्यक है।

इस प्रकार, शिक्षा गरीबी उन्मूलन और सतत विकास के लिए एक अनिवार्य साधन है। यह व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर विकास को संभव बनाता है, जिससे एक समृद्ध, स्वस्थ और संतुलित समाज की नींव रखी जा सकती है। शिक्षा के माध्यम से, व्यक्ति न केवल अपने जीवन में सुधार कर सकते हैं, बल्कि वे समाज के लिए भी उपयोगी और जिम्मेदार नागरिक बन सकते हैं। इसलिए, यह आवश्यक है कि सरकारें और समाज के सभी वर्ग शिक्षा को प्राथमिकता दें और इसे सुलभ बनाने के लिए आवश्यक संसाधनों का निवेश करें।

गरीबी एक ऐसा अभिशाप है जो न केवल व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करता है, बल्कि पूरे समाज की प्रगति को भी रोकता है। इसके चंगुल से मुक्ति पाने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति और पर्यावरण चार महत्वपूर्ण स्तंभ हैं जो न केवल व्यक्तिगत और पारिवारिक अपितु सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान में सहायक हैं। यदि भारत के गावों में रहने वाले अति-गरीब की किस्मत बदलनी है तो उस परिवार के बच्चों की शिक्षा के लिए गाँव-गाँव उच्चकोटि के शिक्षक नियुक्त करने होंगे, समाज के लोगों को शिक्षक का सम्मान करना होगा, तभी शिक्षक उन बच्चों के दिल में परिवर्तन के लिए अपने उच्च विचारों की चिंगारी से जलती हुई आग पैदा करेगा। गरीबी से बाहर निकालने के लिए परिवर्तन की आग और उस आग को सदा जीवित रखने के लिए समाज द्वारा सम्मानित और उच्चकोटि के शिक्षकों द्वारा दिया ज्ञान ही यह परिवर्तन ला सकता है। तमाम बाकी उपाय आज तक असफल रहे हैं। चंद हजार की चाकरी में उच्चकोटि के शिक्षक नहीं पैदा किये जा सकते। दैनिक मजदूरी की दरों में संविदा कर्मी मिलते हैं, शिक्षक नहीं।

ऐसे शिक्षक जो अपने ज्ञान और उत्साह से बच्चों के दिलों में नई उम्मीद और सपने जगा सकें, वे गरीबी की जंजीरों को तोड़ने में मददगार सिद्ध हो सकते हैं। इसके लिए जरूरी है कि समाज भी शिक्षकों का सम्मान करे। शिक्षकों को सम्मान देना उन्हें प्रेरित करता है और उनके कार्य में गुणवत्ता लाता है। जब समाज शिक्षकों को उचित सम्मान देता है, तो शिक्षक भी अपने कार्य को और अधिक जिम्मेदारी और निष्ठा से निभाने का प्रयास करते हैं।

अंत में, यह समझना महत्वपूर्ण है कि शिक्षा, स्वास्थ्य, शांति और पर्यावरण के संयोजन से ही गरीबी के गहरे अभिशाप को मिटाया जा सकता है। दुनिया में शायद ही कोई समाज ऐसा हो जो शिक्षित होकर भी गरीब हो। इसलिए, भारत के प्रत्येक बच्चे को उच्चकोटि की शिक्षा प्रदान करना न केवल आवश्यक है बल्कि यह भारत को डेमोग्राफिक डिविडेंड का लाभ उठाने में सक्षम बनाएगा। गरीबी की भयावह और विकट परिस्थितियों को सकारात्मकता में बदलने की क्षमता हम सभी के भीतर है, बशर्ते हमारे हृदय में उस परिवर्तन की आग धधक रही हो। हालांकि, इस आग को संभालने के लिए सत्यनिष्ठा, आत्म-नियंत्रण, करुणा और परोपकार जैसे मानवीय गुण अत्यंत आवश्यक हैं, क्योंकि इनके बिना, यही आग हमें भस्म कर सकती है। इस प्रकार, हमें स्वयं के साथ समग्र समाज को उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाने के लिए इन मूल्यों को भी अपनाना होगा। शिक्षा मानव को सामर्थ्य प्रदान करती है, जिससे उनमें समर्थता आती है और यह समर्थता उन्हें निर्भय बनाती है, जिससे वे समाज में सशक्त रूप से उभरते और उन्नति करते हैं।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

समृद्ध और विकसित भारत का बजट

सतीश पूनिया

केंद्र सरकार ने वर्ष 2024-25 के बजट में विकसित भारत की रूपरेखा तैयार की है। यह बजट विकसित भारत के लिए महत्वपूर्ण पड़ाव है, जिसकी तैयारी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा चुनावों से बहुत पहले ही कर दी थी। देश की आर्थिक प्रगति के लिए यह बजट ग्रोथ इंजन का काम करने वाला है। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने बजट भाषण में देश के सभी सैक्टर, और सभी वर्गों का ध्यान रखा है। वित्त मंत्री ने वेतन भोगियों, किसानों, महिलाओं, युवाओं, छात्रों के लिए कई घोषणाएं की हैं। सही मायने में यह सर्वस्पर्शी और समावेशी बजट है। वित्त मंत्री ने बजट में नौ प्राथमिकता वाले क्षेत्रों पर फोकस किया है। इनमें कृषि में उत्पादकता और लचीलापन, रोजगार और कौशल, समावेशी मानव संसाधन विकास और सामाजिक न्याय, विनिर्माण और सेवाएं, शहरी विकास, ऊर्जा सुरक्षा, बुनियादी ढांचा, नवाचार, अनुसंधान और विकास तथा अगली पीढ़ी के सुधार जैसे महत्वपूर्ण सैक्टर शामिल हैं। इनमें आवंटित बजट से आगामी वर्षों में होने वाले कार्यों से विकसित भारत की तस्वीर उभरने लगेगी।

देश में रोजगार और काम की तलाश के लिए संघर्षरत युवाओं के लिए बजट में सात बड़ी घोषणाएं की गई हैं। मोदी सरकार ने रोजगार और कौशल विकास जैसे सैक्टर के लिए एक लाख अड़तालीस हजार करोड़ रुपए का प्रावधान किया है। रोजगार से संबंधित प्रोत्साहन योजनाओं से अगले पांच साल में चार करोड़ से ज्यादा युवाओं को नौकरी, कौशल विकास या फिर अन्य अवसर उपलब्ध करवाएं जाएंगे। इससे बड़ी संख्या में युवा शक्ति को काम मिलेगा। भारत की आर्थिक प्रगति में मध्यम आय वर्ग की बड़ी भूमिका रहती है। मध्यम आय वर्ग को आयकर में छूट देकर राहत देने का काम किया है। इससे मध्यम आय वर्ग की जेब में बचा पैसा देश की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में एक संवाहक का काम करेगा। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने 29 जनवरी 1962 में एक लेख में खेती के बारे में लिखा था कि "देश के आर्थिक विकास का आधार खेती है। क्योंकि भारत में 72 फ़ीसदी जनसंख्या की आय का मुख्य स्त्रोत खेती ही है और राष्ट्रीय आय का आधा हिस्सा खेती से आता है। इस कारण खेती को पहली प्राथमिकता दी जानी चाहिए।" पंडित दीनदयाल उपाध्याय की अनुयायी भारतीय जनता पार्टी के लिए खेती और कृषि हमेशा प्राथमिकता में रहे हैं।

इस बजट में भी कृषि और किसानों पर विशेष फोकस रहा है। कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने डेढ़ लाख करोड़ रुपए के बजट का प्रावधान किया है। खेती में इनोवेटिव टेक्नोलॉजी, प्राकृतिक खेती और मौसम के अनुकूल फसलों से जुड़ी कई महत्वपूर्ण घोषणाएं की गई हैं। बजट में ऐलान किया गया है कि अगले दो साल में एक करोड़ किसानों की प्राकृतिक खेती में मदद की जाएगी। सरकार दलहन और तिलहन के लिए मिशन की शुरुआत करेगी। सरकार इन नकदी फसलों के उत्पादन और मार्केटिंग तंत्र को मजबूत कर उत्पादकों को मजबूत करने का काम करेगी। मोदी सरकार हमेशा से कृषि क्षेत्र में नवाचार का समर्थक रही है। इस बजट में भी खेती के लिए डिजिटल सार्वजनिक इंफ्रास्ट्रक्चर बनाने की बात कही गई है। अक्सर मौसम की मार झेलने को अभिशिप्त किसानों को मौसम का पूर्वानुमान, फसल संबंधी सलाह और बाजार में चल रही कीमतों के बारे में किसानों को अपडेट मिल सकेगा। देशभर के छह करोड़ किसानों की जमीनों का रजिस्ट्रेशन कराया जाएगा। इसके अतिरिक्त चार सौ जिलों में फसलों का डिजिटल सर्वे भी किया जाएगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की एनडीए सरकार ने कृषि बजट बढ़ाकर इस साल कृषि और संबद्ध क्षेत्र के लिए 1.52 लाख करोड़ का प्रावधान रखा है, जो मोदी सरकार का किसानों के प्रति समर्पण मजबूती से स्थापित करता है। अटल बिहारी वाजपेयी सरकार से लेकर और अब पिछले 10 वर्षों में मोदी सरकार ने किसान क्रेडिट कार्ड स्कीम को मजबूती देकर देश के करोड़ों किसानों को संबल दिया है, अब इसी क्रम में पांच राज्यों में नए किसान क्रेडिट कार्ड भी जारी किए जाएंगे जो अन्नदाता किसान को एक बड़ी ताकत देने का काम होगा। महात्मा गांधी कहते थे भारत की आत्मा गांवों में बसती है।

जब तक गांवों को मजबूत नहीं किया जाएगा, देश का उन्नयन संभव नहीं है। भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर मोदी सरकार पिछले दस वर्षों से लगातार काम कर रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क, बिजली, पानी या इंटरनेट सुविधाओं के विस्तार की बात हो, ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए मोदी सरकार ने उल्लेखनीय कार्य किया है। इस बजट में भी देश के पच्चीस हजार गांवों को हर मौसम के अनुकूल ऑल वेदर रोड के नेटवर्क का प्रावधान किया गया है। इसमें पच्चीस हजार ग्रामीण बस्तियों में कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए ऑल वेदर रोड के लिए प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के नए चौथे चरण की शुरूआत की जाएगी।

इसके अलावा गांव और गरीबों से जुड़ी पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना, मनरेगा, ग्राम स्वराज अभियान, जल जीवन मिशन, पीएम किसान सम्मान निधि, स्वच्छ भारत मिशन, सामाजिक न्याय और यूरिया सब्सिडी जैसी जनकल्याणकारी योजनाओं पर दस लाख 76 लाख करोड़ रुपए खर्च करने का प्रावधान किया है। गरीब कल्याण अन्न योजना को एनडीए सरकार ने फिर अगले पांच साल के लिए बढ़ा दिया है। प्रधानमंत्री आवास योजना के लिए आवंटन 35.36 प्रतिशत बढ़ाकर मोदी सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि हर घर विहीन नागरिक को घर उपलब्ध करवाना उनकी प्राथमिकता में है। भाजपा नीत केंद्र सरकार शहरों में आर्थिक तौर पर कमजोर और मध्यम वर्ग के लिए घर खरीदने में सहायता देकर उन्हें आवास उपलब्ध करवाने में मदद कर रही है। वित्त मंत्री ने घोषणा की है कि पीएम आवास योजना अर्बन के अंतर्गत अगले पांच साल में दस लाख करोड़ रुपए का निवेश किया जाएगा। केंद्र सरकार ने योजना के दूसरे चरण में अगले पांच साल में एक करोड़ शहरी गरीब और मध्यम वर्ग के परिवारों को घर मुहैया करवाने का लक्ष्य रखा है।

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के साथ उनके सशक्तिकरण पर विशेष जोर दिया है। वित्त मंत्री ने महिलाओं और लड़कियों के लिए तीन लाख करोड़ रुपए के बजट का प्रावधान किया है। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए सरकार का जोर महिलाओं को विशेष स्किल में प्रशिक्षित करना है। इसके लिए देश की इंडस्ट्री के साथ मिलकर महिलाओं के कौशल विकास के लिए स्किलिंग कार्यक्रम चलाए जाने की घोषणा की गई है। महिला स्वयं सहायता समूहों को उत्पादों को बाजार उपलब्ध करवाने में भी सहायता की जाएगी। इससे देश की नारी शक्ति को बल मिलेगा और देश की अर्थव्यवस्था की गति को और ताकत मिलेगी। भारत में रोजगार उपलब्ध करवाने में छोटे तथा मझौले उद्यमों का बड़ा योगदान रहा है। देश की जीडीपी में इस सैक्टर की भागीदारी एक तिहाई से ज्यादा है। ट्रेड और मैन्युफैक्चरिंग में बड़ी संख्या में एमएसएमई सैक्टर रोजगार उपलब्ध करवाते हैं। वित्त मंत्री ने देश में तीस लाख नए रोजगार के लिए एमएसएमई सैक्टर को ग्रोथ इंजन बनाने की घोषणा की है।

सरकार ने इस सैक्टर की लंबित मांग को पूरा करते हुए ऋण सीमा सौ करोड़ रुपए तक करने की घोषणा की है। गौरतलब है कि एमएसएमई सैक्टर में देश में सवा तीन करोड़ से ज्यादा महिलाओं को रोजगार मिला हुआ है। वर्ष 2025 तक पांच करोड़ महिलाओं को एमएसएमई से जोड़ने के लक्ष्य पर सरकार काम कर रही है। महिला सशक्तिकरण की दिशा में यह सरकार का मजबूत कदम है। एक समय था जब युवा कोई स्टार्टअप शुरु करने से पहले यह सोचता था कि उसके लिए फंड कहां से जुटेगा। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की स्टार्टअप योजना के बाद देश में स्टार्टअप के लिए फंड जुटाना बहुत आसान हो गया है।

देश में अप्रैल 2024 तक एक लाख 27 हजार स्टार्ट-अप कार्य कर रहे हैं। स्टार्टअप को और गति देने के उद्देश्य से बजट में एनडीए सरकार ने एंजल टैक्स हटाने की घोषणा की है। इस टैक्स के हटने से स्टार्टअप नवाचारों पर ज्यादा खर्च कर सकेंगे, उन्हें फंड जुटाना भी आसान होगा और देश में स्टार्टअप के इकोसिस्टम को बढ़ावा मिलेगा। निश्चित ही भाजपा नीत एनडीए सरकार का यह बजट देश की आर्थिक और सामाजिक प्रगति के नए मानक स्थापित करेगा। बजट से युवा, मध्यम वर्ग, किसान, महिलाओं की उन्नति के साथ देश के आधारभूत ढांचे और उद्योग तंत्र को नया बल मिलेगा।

(लेखक भाजपा के वरिष्ठ नेता हैं)

–डॉ. सतीश पूनिया,
(भाजपा हरियाणा प्रभारी एवं भाजपा राजस्थान पूर्व प्रदेशाध्यक्ष)

भामाशाह ने भौनावास पी.एस.सी. की दशा सुधारी

15 लाख की लागत के मेडीकल उपकरण व अस्पताल में कराया विकास कार्य

पावटा, (निसं)। राजकीय अस्पतालों का नाम सामने आते ही टूटी-फूटी बिल्डिंग, फर्नीचर का अभाव और दवाइयों की कमी की तस्वीर उभरती है। लेकिन पावटा पंचायत समिति की ग्राम पंचायत भौनावास में एक ऐसा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भी है जहां न केवल शानदार भवन और फर्नीचर है बल्कि निजी चिकित्सालयों जैसी सुविधाएं नि:शुल्क उपलब्ध हैं।

यह तस्वीर पीएचसी का सबसे बड़ा भवन भौनावास प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की है। जिसका श्रेय भामाशाह सेठ विशंभर दयाल को जाता है। जिन्होंने 35 साल पहले सरकार राजकीय अस्पताल के लिए न केवल जमीन दी बल्कि 24 बड़े कमरों का दो मंजिला भवन बना कर दिया। जिसमें दो बडे वार्ड व साथी डॉक्टर के लिए अलग से क्वार्टर भी बनाकर दिये गए हैं। समय-समय पर भवन का रख रखाव रंग रोगन भी भामाशाह परिवार द्वारा करवाया जाता है।

भौनावास का प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र किसी प्राईवेट अस्पताल से कम नहीं है।

पूर्व सरपंच राजपाल सिंह शेखावत ने बताया कि भामाशाह सेठ के सुपुत्र श्यामसुंदर एंड कंपनी व भाई 15 लाख रुपए की लागत से अभी आठ बेड, आठ लॉकर, दो कंप्यूटर, दो एसी, पूरे परिसर में इंटरलॉक टाइल, पूरे परिसर का मरमत व रंग रोगन करवाइए करवाई है। सरपंच रेवती कंवर, डॉ. विजय यादव, सीनियर नर्सिंग ऑफिसर कैलाश यादव, महेश, ममता, देवेंद्र, रामनिवास, अजय, किशोरी, मुकेश, सरोज समेत ग्रामीणों ने भामाशाह परिवार को धन्यवाद दिया ।

बिजली कर्मचारी ने घायल मोर की जान बचाई

सांभरझील, (निसं)। जी.एस.एस. के नजदीक 11 केवी लाइन पर बैठा मोर करंट लगने से गंभीर रूप से घायल हो गया। मौके पर मौजूद निगम के गार्ड राजेंद्र कुमार मीणा व विद्युतकर्मी टीकमचंद कुमावत धड़ाम की आवाज सुनकर तत्परता से दौड़े और घायल मोर को संभाला। अपने स्तर से जो भी प्रयास थे करके मोर की जान बचाई। बताया कि यह मोर काफी देर से विद्युत लाइन पर बैठा हुआ था

और वहां से उड़ने के लिए जैसे ही उसने पंख फैलाए पंख का हिस्सा दूसरे तार से टच कर गया और करंट के कारण उसका पांव डैमेज हो गया।

सांभर में करंट से घायल राष्ट्रीय पक्षी मोर की बिजली कर्मचारी ने जान बचाई।

इनकी ओर से वन विभाग के श्यामश्री शर्मा को सूचना दी तो उन्होंने एनजीओ से बात करके कुछ सदस्यों को सांभर भिजवाया। इसकी सूचना पुलिस को भी दी गई थी।

एनिमल रेस्क्यू टीम के सदस्य रोशन कुमावत, श्याम सिंह, पिंटू कुमावत, श्याम सुंदर जांगिड़, राधे दायमा, एनिमल वेलफेयर संस्था अध्यक्ष रोशन कुमावत, सदस्य हेमंत (टोनी) मौके पर मौजूद रहे और घायल पक्षी का प्राथमिक उपचार कर वन विभाग की नर्सरी पहुंचाया।

राशिफल रविवार 28 जुलाई, 2024

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, अश्विनी नक्षत्र दिन 11:48 तक, शूल योग रात्रि 8:11 तक, बालव करण प्रात: 8:24 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-मेष, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 11:48 तक है। आज कालाष्टमी, वन महोत्सव दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:33 से 9:13 तक, लाभ-अमृत 9:13 से 12:33 तक, शुभ 2:13 से 3:33 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:53, सूर्यास्त 7:13

मेष
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा।

सिंह
शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। मन में असंतोष बना रहेगा। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धार्मिक स्थान की यात्रा हो सकती है।

धनु
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक और महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। परिवार में आपसी अनबन, वाद-विवाद बढ़ सकते हैं।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मकर
घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

मिथुन
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। संभावित धन प्राप्त होगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

तुला
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कुंभ
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कर्क
महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृश्चिक
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में मांगलिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

मीन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मुलाकात हो सकती है।

सार-समाचार

संवाददाता सम्मेलन का आयोजन

चूरू, (कासं)। जिला मुख्यालय पर शनिवार को निजी होटल में चूरू जिला अभिभाषक संघ के वरिष्ठ अधिवक्ताओं ने संवाददाता सम्मेलन का आयोजन किया। इस दौरान अभिभाषक संघ के सदस्यों ने दस जुलाई को अधिवक्ता महिमन जोशी व सुशील शर्मा व उनके पुत्र आनंद शर्मा के बीच हुई घटना के बाद 15 जुलाई को जिला अभिभाषक संघ की मीटिंग में घटना की वास्तविक स्थिति सामने आने पर भी अधिवक्ता महिमन जोशी पर की गई कार्यवाही की निंदा की है।वरिष्ठ अधिवक्ताओं ने कहा कि 15 जुलाई को मीटिंग के दौरान अधिवक्ता सांवरमल स्वामी ने सत्य बयानी करते हुए अवगत करवा दिया था कि महिमन जोशी उनके चैंबर में बैठे थे और इस दौरान अधिवक्ता आनन्द शर्मा ने उनके चैम्बर में घुस कर महिमन जोशी के मुक्का मारा था। इस साफ और स्पष्ट बयान के बावजूद भी जिला अभिभाषक संघ के अध्यक्ष द्वारा महिमन जोशी को सात दिन के लिए निलंबित किया जाने जैसे बयान से चूरू अभिभाषक संघ की गरिमा को धूमिल हुई हैं। वरिष्ठ अधिवक्ता बनवारी लाल दीक्षित ने कहा कि प्रत्यदर्शी सांवरमल स्वामी एडवोकेट के स्पष्ट कथन के बावजूद अध्यक्ष द्वारा एक पक्षीय कार्यवाही करते हुए महिमन जोशी के निलंबन आदि का आदेश दे देना अवैधानिक व अधिकार क्षेत्र से बाहर हैं। जिससे अभिभाषक संघ की प्रतिष्ठा पर प्रश्न चिन्ह लग गया है। अत: इस बात से स्पष्ट होता हैं कि अभिभाषक संघ के अध्यक्ष द्वारा की गई कार्यवाही अधिवक्ता सुशील शर्मा व आनंद शर्मा को बचाने हेतु की गई है तथा वास्तविक तथ्यों को नजर अंदाज कर अभिभाषक संघ की मीटिंग में अधिकार क्षेत्र से बाहर जाकर निर्णय लेना सरासर गलत हैं। न्याय का यह प्रतिपादित सिद्धांत हैं कि जब तक किसी भी मामले की जांच चल रही हो और न्यायालय ने अपना निर्णय नहीं दिया हो तब तक किसी एक पक्ष को दोषी ठहराकर किसी भी प्रकार का निर्णय या धारण बनाना गलत है। इस प्रकार दिनांक 15 जुलाई2024 को अभिभाषक संघ के अध्यक्ष द्वारा गई कार्यवाही से यह प्रतीत होता हैं कि पुलिस अनुसंधान को प्रभावित करने के लिए अभिभाषक संघ जैसी संस्था का दुरूपयोंग किया जा रहा है। इस दौरान प्रेसवार्ता में वरिष्ठ अधिवक्ता दानाराम शर्मा, बनवारी लाल दीक्षित, ईनायत खां , युनुस खां, सुजान सिंह खींची , धन्नेसिंह राठौड़, हर्षवर्धन राठौड़ , नेमत अली , रजनीश शर्मा, महिमन जोशी आदि मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री के नाम सौंपा ज्ञापन

झुंझुनूं, (कासं)।उदयपुर क्षेत्र के सलूंबर इलाके के अदवास गांव में एक दलित शिक्षक की गला काटकर हत्या और उसके पिता पर किए गए जानलेवा हमले के मामले में कार्रवाई की मांग हो रही है। इसी क्रम में झुंझुनूं में आजाद समाज पार्टी कांशीराम के पूर्व जिलाध्यक्ष प्रदीप चंदेल के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन दिया। जिसमें छह मांगें की गई है। इनमें आरोपियों पर कार्रवाई करने, एक करोड़ की सहायता परिवार को देने, परिवार के दो सदस्यों को सरकारी नौकरी देने, परिवार को सुरक्षा देने, दलितों पर हो रहे अत्याचारों को रोकने के लिए ठोस कानून बनाने जैसी मांग की गई है। पूर्व जिलाध्यक्ष प्रदीप चंदेल ने बताया कि यदि सरकार इस दिशा में कोई ठोस कार्रवाई नहीं करती है तो पूरे प्रदेश में आंदोलन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सांसद और आजाद समाज पार्टी कांशीराम के सुप्रीमो एडवोकेट चंद्रशेखर आजाद भी गंभीर है। जो जल्द ही प्रभावित परिवार से मिलेंगे। उन्होंने बताया कि भीम आर्मी चीफ एवं नगीना सांसद चंद्रशेखर आजाद ने संसद भवन में आवाज उठाने का प्रयास किया। लेकिन उनको बोलने का समय नहीं दिया गया तो उन्होंने संसद के बाहर आकर विरोध प्रदर्शन किया। लोगों को न्याय भी अब जाति देखकर दिया जा रहा है। ज्ञापन देते समय शकील फौजी, विकास मेघवाल देरवाला, अजीत धनूरी, विलास फुलवारिया, राशिद खान, राकेश कुमार, श्यामसुंदर, बुधराम, गुलजारीलाल, संजय कुमार, शीशराम, ईश्वर, प्रमोदकुमार, मदनलाल आदि मौजूद थे।

केंद्रीय विद्यालय में किया पौधा रोपण

चूरू, (कासं)। पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय चूरू में पीएम नरेंद्र मोदी के आवाह्न पर एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत विद्यार्थियों की माताओं ने विद्यालय के कर्मचारियों के साथ तुलसी, अश्वगंधा, शहतूत, नीम, अमरूद, करंज, बरगद, पीपल, गूलर, जामुन, फ्राँस, इत्यादि प्रजातियों के 300 पेड़ लगाए। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य कृष्ण सिंह चौहान ने कर्मचारियों, विद्यार्थियों व उनके अभिभावकों के साथ धरती पर हरियाली बढ़ाने का संकल्प लिया। आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम के बाद गोष्ठी को संबोधित करते हुए प्राचार्य कृष्ण सिंह चौहान ने कहा कि एक व्यक्ति के लिए मां का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है। इस रिश्ते की गरिमा को समझते हुए पीएम नरेंद्र मोदी ने विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर धरती पर हरियाली बढ़ाने के दृष्टिकोण से वृहद स्तर पर वृक्ष लगाने का संकल्प लिया। एक पेड़ मां के नाम उसे बचाने का संकल्प लिया है। उन्होंने कहा धरती भी मां स्वरूप है। पेड़ पौधे रहने से वायुमंडल का संतुलन बना रहता है। इसलिए अभिभावकों से अपने घरों व आसपास की खाली जमीन पर इस अभियान के तहत विभिन्न प्रजातियों के वृक्ष लगाकर उनकी देखभाल करने का आवाह्न किया।इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षक लाल चंद, विजय कुमार माथुर, महेश बुल्ड़क, संजय कुमार, मनीष शर्मा, मुकेश मीना, सीमा शर्मा, चंदा सैनी , प्रताप नैन सहित बागवान नाज़िम तथा माणक उपस्थित रहे।

जिला कार्यसमिति की बैठक आज

सीकर,(कासं)।भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यसमिति की बैठक 28 जुलाई रविवार को प्रात: 9 बजे से सायं 5 बजे तक भाजपा जिला कार्यालय सांवली सर्किल के पास, सीकर में होगी। कार्यसमिति की बैठक में मुख्य अतिथि शिक्षा एवं पंचायती राज मंत्री मदन दिलावर होंगे। मुख्य वक्ता भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां, विशिष्ठ अतिथि स्वायत्त शासन एवं नगरीय विकास मंत्री झाबर सिंह खर्रा, भाजपा के प्रदेश महामंत्री श्रवण सिंह बगड़ी एवं प्रदेश महामंत्री व पूर्व सांसद श्रीमती संतोष अहलावत होंगी। कार्यसमिति की अध्यक्षता भाजपा जिलाध्यक्ष डॉ. कमल सिखवाल करेंगे।जिला महामंत्री संजय सैनी ने बताया कि कार्यसमिति की बैठक में पूर्व केंद्रीय मंत्री सुभाष महरिया, पूर्व सांसद स्वामी सुमेधानंद सरस्वती, विधायक गोरधन वर्मा, विधायक सुभाष मील, प्रदेश प्रवक्ता कृष्ण कुमार जानू, जिले के प्रभारी दिनेश धाबाई, पार्टी के पूर्व विधायक, पूर्व जिलाध्यक्ष, जिला प्रमुख, कार्यकारिणी के पदाधिकारी व सदस्य, प्रधान, नगर पालिका अध्यक्ष, जिला परिषद व पंचायत समिति सदस्य, सभी मोर्चों के जिलाध्यक्ष व जिला महामंत्री, सभी मंडलों के अध्यक्ष व महामंत्री, प्रकोष्ठों व विभागों के जिला संयोजक के साथ ही पार्टी के वरिष्ठ कार्यकर्ता भाग लेंगे। कार्यसमिति बैठक में भाजपा जिलाध्यक्ष राजनीतिक प्रस्ताव रखेंगे। राजनीतिक प्रस्ताव पर चर्चा के पश्चात कार्यसमिति में उपस्थित पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता प्रस्ताव का अनुमोदन करेंगे।

कारागृह में पीपल का पौधा लगाया

चूरू, (कासं.)। अमृता देवी पर्यावरण समृद्धि अभियान के तहत जिला कारागृह में अभियान के जिला प्रमुख राजकुमार सैनी के सानिध्य में पीपल का पौधा लगाया गया। यहां जिला प्रमुख राजकुमार सैनी ने बताया कि अभियान के दौरान अब तक एक हजार पौधे लगाए जा चुके हैं। उन्होंने बताया कि पीपल, बरगद, शीशम, नीम आदि छायादार पौधे नगर के श्मशान घाट, सार्वजनिक पार्क, विभिन्न कार्यालय, देवालय आदि स्थानों पर लगाए गए हैं। सैनी ने बताया कि यह अभियान लगातार जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अधिक से अधिक पौधारोपण करके उनका संरक्षण करना चाहिए। ताकि पर्यावरण संतुलन बना रहे और मानव जीवन के सामने कोई संकट पैदा न हो। इसी प्रकार जिला कारागृह में पौधारोपण करते हुए मूल सिंह राठौड़ जालेऊ ने कहा कि पौधारोपण करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। राठौड़ ने कहा कि अधिक से अधिक पौधारोपण करेंगे। इस मौके पर फिल्म निर्माता निर्देशक राजेन्द्र सिंह शेखावत और बालक मयंक मीना ने भी पौधारोपण में सहयोग किया और पौधों के संरक्षण का संकल्प लिया। यहां पीपल के साथ अन्य छायादार पौधा भी लगाया गया।

कारगिल शहीदों को श्रद्धांजलि दी

झुंझुनूं, (कासं)।कारगिल विजय दिवस की 25वीं वर्षगांठ पर इंडाली गौशाला परिसर में 527 पौधे लगाकर कारगिल शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर कृषि वैज्ञानिक डॉ. हनुमानप्रसाद, निरंजनसिंह जानूं, श्री बालाजी ग्रुप के कृष्ण गवाड़िया और पशुपालन विभाग के डिप्टी डायरेक्टर सुरेश सुरा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। डॉ. हनुमानप्रसाद ने अधिक से अधिक पेड़ लगाने के लिए लोगों को प्रेरित किया। इस अवसर पर जगदीश कड़वासरा, डॉ. अरविंद भालोठिया, दिलीप मीणा सरपंच, महावीर शर्मा, संतूसिंह, राजेंद्र मास्टर, राजवीर, निक्कूसिंह सहित अनेक गणमान्य लोगों की उपस्थिति में पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृष्ण गावड़िया ने पेड़ लगाने के साथ ही उनकी परवरिश की शपथ दिलाई तथा डॉ. अरविंद भालोठिया और गौशाला अध्यक्षा अवनीश कौर ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

जनरल महाप्रबंधक अमिताभ ने सुनीं कर्मचारियों की समस्याएं

उत्तर पश्चिम रेलवे के जनरल महाप्रबंधक अमिताभ शनिवार को चूरू के दौरे पर रहे।

■ जीएम ने बीकानेर-चूरू रेल मार्ग के दोहरीकरण, अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत बन रहे स्टेशनों के पुनर्विकास कार्यों, रेल अंडर पास आदि का निरीक्षण किया

चूरू, (कासं.)। उत्तर पश्चिम रेलवे के जनरल महाप्रबंधक अमिताभ शनिवार को बीकानेर मंडल के दौरे पर रहे। इस दौरान जीएम ने बीकानेर-चूरू रेल मार्ग के दोहरीकरण, अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत बन रहे स्टेशनों के पुनर्विकास कार्यों, रेल अंडर पास आदि का निरीक्षण कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। इस दौरान चूरू पहुंचने पर जीएम ने रेलवे स्टेशन स्थित रनिंग रूम में जनसुनवाई की।

इस दौरान जीएम ने लोको पायलट, ट्रेन मैनेजर सहित ट्रेन संचालन से जुड़े अधिकारियों-कर्मचारियों से संवाद कर कर्मचारियों की समस्यायें सुनीं और अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। इस दौरान जीएम ने यथा शीघ्र समस्याओं के निस्तारण का आश्वासन दिया। इस अवसर पर जीएम ने रनिंग रूम परिसर में पौधरोपण भी किया। इस अवसर पर कर्मचारियों ने जीएम से कहा कि 50 वर्ष से अधिक की उम्र के कर्मचारियों को किसी भी प्रकार की पेट्रोलिंग में नहीं भेजा जाए। जो ट्रेनें 6-7 घंटे स्टेशन पर खड़ी रहती है, उनका समय कम किया जाए। जिन स्टेशनों पर खानें की क्वालिटी सही नहीं है, उनमें सुधार किया जाए। जीएम ने कहा कि सरकार रेलवे कर्मचारियों पर काफी पैसा खर्च करती है। कर्मचारियों की सभी सुविधाओं को ध्यान में रखा जाता है। उन्होंने कहा कि आज कर्मचारियों ने जो समस्याएं बतायी हैं, उनमें सुधार किया जाएगा।

पिछले कुछ समय से रेलवे के क्षेत्र में जो घटनायें हुई हैए उनसे सबक लेकर सिस्टम में सुधार किया जाएगा। इस दौरान मुख्य प्रशासनिक अधिकारी निर्माण वेदप्रकाश, मुख्य इंजीनियर निर्माण एस सीएल मीना, डीआरएम डॉ. आशीष कुमार, मुख्य परियोजना प्रबंधक गति शक्ति इकाई पवन गुरावा, उप मुख्य इंजीनियर निर्माण विजय कुमार मीना, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक महेश चंद जेवलीया, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर समन्वय अमित जैन, चूरू स्टेशन मास्टर सुरेश कुमार माथुर सहित बड़ी संख्या में रेलवे मंडल के अधिकारी.कर्मचारी उपस्थित थे।

गुरु वंदन कार्यक्रम आयोजित

रतनगढ़, (कासं)। स्थानीय राजकीय जालान महाविद्यालय में राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ राजस्थान उच्च शिक्षा के बैनर तले गुरु वंदन कार्यक्रम आयोजित हुआ। प्रो कल्याण सिंह चारण ने बताया कि कार्यक्रम में सभी वक्ताओं ने गुरु की महिमा को विस्तार से बताया। डॉ के सी जोशी ने गुरु शिष्य परंपरा पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस अवसर पर डा सुशील त्यागी,डा धनराज पांडिया,डा श्याम सुंदर पारीक, प्रो शैलेष जिनरा, लेखाधिकारी संदीप जोशी ने भी गुरु वंदन की आवश्यकता प्रतिपादित की।

नौ दिवसीय रामकथा शुरू

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ी कस्बे के अनाज मंडी स्थित अग्रसेन भवन में शनिवार को नौ दिवसीय रामकथा का शुभारंभ किया गया। प्रयागराज से आए सीताराम धर्म प्रचार मंडल के कथावाचक पंडित नारायण मिश्रा, शिरोमणि मिश्र, परशुराम दूबे के सानिध्य में रामकथा का विधिवत रूप से पुजा अर्चना कर शुभारंभ किया गया।

पूर्व पालिकाध्यक्ष उमराव सिंह कुमावत ने बताया कि अग्रसेन भवन में चल रही रामकथा का नौ दिवस पूरे होने पर विधिवत रूप से समापन किया जाएगा। कथावाचक पंडित नारायण मिश्रा ने कहा किहिंदू धर्म में गौ सेवा सबसे बड़ा धर्म माना गया है। शास्त्रों के अनुसार गाय का दान करना भी मनुष्य जीवन में अति महत्वपूर्ण माना गया है। ऐसे में प्रत्येक व्यक्ति को जीव जंतुओं की रक्षा के लिए आगे आकर कार्य करने चाहिए। मनुष्य की पवित्र आत्मा एवं धार्मिक अनुष्ठानों से भगवान की दृष्टि को पाया जा सकता है। मनुष्य को अपने जीवन में शुद्ध एवं शाहकारी होना चाहिए, ताकि ईश्वर अपनी कृपा अपने भक्तों पर बनाकर रख सकें। हिंदू धर्म में देवी-दवताओं पूजन मात्र से ही दया दृष्टि को हासिल किया जा सकता है।कथासुनने मात्र से ही मनुष्य का मन पवित्र हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेकर मन को शुद्ध करना चाहिए। हिंदू धर्म में गाय को माता का दर्जा दिया गया है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को गौ माता की सेवा करने से पुण्य को हासिल किया जा सकता है। कार्यक्रम के दौरान संजीव झांकियां सजाकर गांव का भ्रमण करवाया गया। इस मौके पर लक्ष्मीकांत शर्मा, संजय नालपुरिया, सुरेश सोनी, मनीष सैनी, राजू नायक, कैलाश चंद, अशोक कुमार, साहिल कुमार, विजेश गुप्ता, राजेश कुमार, अनिल कुमार, सुरेश, चंदा देवी, संतोष देवी, ममता, सपना, संजू, कमलेश, रामकला, राकेश देवी, संतरा देवी, रजनी सहित अनेक लोग मौजूद थे।

मेधावी छात्राओं को स्कूटी बांटी

लोहिया महाविद्यालय में काली बाई भील मेधावी एवं देवनारायण स्कूटी योजनान्तर्गत छात्रओं को विधायक सहरण ने स्कूटी बांटी।

चूरू, (कासं)। लोहिया महाविद्यालय में काली बाई भील मेधावी एवं देवनारायण स्कूटी योजनान्तर्गत वितरण में विधायक हरलाल सारण के मुख्य आतिथ्य में जिले की मेधावी छात्राओं को स्कूटी वितरित की गई।

स्कूटी वितरण समारोह की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. मंजु शर्मा ने की तथा अतिथियों के रूप में भाजपा प्रदेश मंत्री डॉ. वासुदेव चावला, भाजपा जिलाध्यक्ष बसन्त शर्मा, भाजपा जिला महामंत्री अभिषेक चोटिया, शहर मण्डल अध्यक्ष दीनदयाल सैनी एवं सुरेश सारस्वत, देहात मण्डल अध्यक्ष, विजय कुमार कस्वां, भाजपा जिला महामंत्री भास्कर शर्मा, सेवानिवृत प्रो. सन्त लाल, मोहन लाल गढ़वाल आदि मंचाशीन थे।

राज्य सरकार की इस अति महत्वपूर्ण स्कूटी योजना छात्रवृति के तहत चूरू जिले की 78 मेधावी छात्राओं को सत्र 2022.23 की स्कूटी वितरित की गई। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए स्थानीय विधायक हरलाल सारण ने कहा की छात्राओं को राज्य सरकार द्वारा प्रदान की गई स्कूटियों को अपनी पढ़ाई एवं जीवन के लक्ष्यों को पूर्ण करने के लिए सदुपयोग करना चाहिए। उन्होंने छात्राओं से आव्हान किया कि उन्हें कड़ी मेहनत करनी चाहिए तथा राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठाते हुए अपने जीवन के उच्च लक्ष्यों व सपनों को पूर्ण करना चाहिए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार अपनी अति महत्वाकांक्षी योजनाओं का नामकरण देश व समाज की सेवा करने वाले महापुरुषों व युग पुरुषों के नाम पर करती है तथा इससे हमें समाज व देश सेवा की प्रेरणा मिलती है। कार्यक्रम की अध्यक्ष एवं महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. मंजु शर्मा ने समारोह में उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत किया एवं महाविद्यालय के आग्रह पर समारोह में पधारे मुख्य अतिथि माननीय विधायक हरलाल सारण व मंचाशीन अतिथियों, स्कूटी प्राप्त करने वाली छात्राओं, अभिभावकों, पत्रकार बन्धुओं एवं अन्य उपस्थित गणमान्य सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

गेट लगाने के मामले ने पकड़ा तूल

खेतड़ी, (निसं) खेतड़ी कस्बे के ऐतिहासिक भोपालगढ़ किले के मुख्य द्वार पर गेट लगाने के मामले ने तूल पकड़ लिया है। इस संबंध में शनिवार को ट्रस्ट की ओर से कस्बे के एक दर्जन से अधिक लोगों पर गाली गलौच कर फर्जी केस में फंसाने की धमकी देने का मामला दर्ज करवाया गया है। थानाधिकारी भंवरलाल कुमावत ने बताया कि माचवा कालवाड़ रोड जयपुर निवासी ज्ञानेंद्र सिंह ने रिपोर्ट दी कि वह 25 जूलाई को ट्रस्ट की संपत्ति की देखरेख करने के लिए यहां आया था। ट्रस्ट की ओर से अवैध गतिविधियों पर रोक लगाने को लेकर मुख्य द्वार पर गेट लगाया गया था तथा मंदिर में आने वाले लोगों के लिए आवागमन की छुट दी गई थी। इस दौरान दोपहर में जब वह तहसीलदार कार्यालय में मिटींग के लिए गया तो वहां 15-20 लोग मौजूद थे। जब वह तहसीलदार से मिलने गए तो वह लोग तहसीलदार के कमरे में घुस गए और जब बाहर आए तो उन्होंने धक्का मुक्की करते हुए गाली गलौज करना शुरू कर दिया।

'जिला प्रशासन आमजन की समस्याओं के त्वरित निस्तारण के लिए प्रतिबद्ध'

रात्रि चौपाल में जनसुनवाई करती जिला कलेक्टर पुष्पा सत्यानी व उपस्थित अधिकारीगण।

सादुलपुर,(कासं)। जिला कलक्टर पुष्पा सत्यानी ने राजगढ ब्लॉक की सांखू फोर्ट ग्राम पंचायत मुख्यालय स्थित आईटी सेंटर में रात्रि चौपाल आयोजित कर आमजन की समस्याएं सुनीं और उनके तत्काल एवं समयबद्ध निस्तारण के लिए संबधित अधिकारियों को निर्देश प्रदान किए।

इस मौके पर जिला कलक्टर ने ग्रामीणों ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की मंशानुरूप आवश्यक सेवाएं दुरूस्त रहें तथा आमजन से प्राप्त समस्याओं का नियमित फॉलोअप लेते हुए समयबद्ध व समुचित निस्तारण किया जाए। उन्होंने आमजन से कहा कि जिला प्रशासन आमजन की समस्याओं के त्वरित निस्तारण के लिए प्रतिबद्ध है। स्वयं मुख्यमंत्री और मुख्य सचिव के स्तर पर आमजन की समस्याओं और उनके समाधान की समीक्षा की जाती है। इसलिए ग्रामीण उचित तरीके से अपनी समस्याएं रखें, उनके समाधान के लिए समुचित प्रयास किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि ग्रामीण स्वयं जागरुक होकर सरकार की योजनाओं एवं सुविधाओं का लाभ उठाएं तथा यह कोशिश करें कि योजनाओं का लाभ अंतिम छोर के व्यक्ति तक पहुंच सके। जिला कलक्टर के निर्देश पर सभी विभागों के अधिकारियों व प्रतिनिधियों ने उनके विभाग से संबंधित जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी। ग्रामीणों ने सांखु सीएचसी में चिकित्सा सेवाओं को लेकर परेशानी बताई, जिस पर जिला कलक्टर ने नियुक्त चार चिकित्सकों में से ०2 चिकित्सकों की सवेरे, ०1 चिकित्सक की सांय व ०1 चिकित्सक की रात्रि शिफ्ट में ड्यूटी लगाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आमजन को बेहतरीन चिकित्सा सेवाएं मिलें। आमजन को अस्पताल में चिकित्सकीय परामर्श, दवा व जांच आदि के संबंध में अनावश्यक परेशानी न हो। ग्रामीणों ने गांव के वार्ड नंबर ०2 व ०6 में पेयजल आपूर्ति की समस्या बताई, जिस पर जिला कलक्टर ने पीएचईडी के अधिकारियों को पेयजल व्यवस्था का निरीक्षण कर आपूर्ति दुरूस्त करने के निर्देश दिए। ग्रामीणों ने बिजली कटौती व घर पर बिजली के बिल नहीं पहुंचने की समस्या रखी, जिस पर जिला कलक्टर ने बिजली आपूर्ति व्यवस्था सुचारू करते हुए प्रत्येक कनेक्शनधारक के घर पर बिजली के बिल पहुंचाने के निर्देश दिए। ग्रामीणों ने पीपीपी मोड से बन रहे झुन्झुनू-राजगढ सडक की उंचाई अधिक रखने से उनके घरों से जल निकास व सडक किनारे नाली निर्माण नहीं होने की समस्या बताई, जिस पर जिला कलक्टर ने पीपीपी के अधिकारियों से चर्चा की समुचित निस्तारण की बात कही। दुकानों के आगे कचरा फैलने की शिकायत पर ग्रामीणों ने सर्वसम्मति से कचरा फैलाने वाले के विरूद्ध 5०० रुपए जुर्माना लगाने का प्रस्ताव पास किया तथा प्रत्येक व्यक्ति का सफाई व्यवस्था में अपेक्षित सहयोग के लिए पांबद किया।

सार-समाचार

प्रवेश द्वार का किया लोकार्पण

सादुलपुर, (कासं)। पीएमश्री शहीद हरिसिंह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय हमीरवास में शहीद लांस नायक हरिसिंह श्योराण के सुपुत्र बलबीर श्योराण द्वारा बनवाए गए प्रवेश द्वार का शनिवार को लोकार्पण सांसद चूरु राहुल कस्वां, पूर्व विधायक पदमश्री डॉ. कृष्णा पूनिया, भाजपा विधानसभा प्रत्याशी सुमित्रा पूनिया एवं हमीरवास सरपंच गिना देवी के द्वारा किया गया। वहीं सांसद राहुल कस्वा ने शहीद परिवार के द्वारा विद्यालय में बनाए गए प्रवेश द्वार हेतु साधुवाद दिया एवं ग्राम पंचायत हमीरवास की वीरांगनाओं का शॉल एवं प्रतीक चिन्ह भेंटकर सम्मान किया। इस अवसर पर गौरव सेनानी सैनिकों द्वारा सासंद राहुल कस्वा से हमीरवास में शहीद स्मारक स्थल हेतु जमीन आवंटन हेतु ज्ञापन दिया गया। पदमश्री डॉ. कृष्णा पूनिया द्वारा शहीदों के जीवन मूल्यों को विद्यार्थियों को अपने जीवन में उतारने हेतु प्रेरित किया एवं नैतिक मूल्यों के साथ मेहनत कर आगे बढने हेतु प्रेरित किया तथा शहीद हरिसिंह के परिवारजनों द्वारा विद्यालय में प्रवेशद्वार बनवाने पर आभार प्रकट करते हुए कहा कि शिक्षा के मंदिर में दान देने वाले बहुत कम मिलते है। उन्होंने पैरिस में खेलने गई टीम की जीत की अग्रिम बधाई दी। सुमित्रा पूनिया द्वारा विद्यालय में विज्ञान संकाय शुरू करवाने का आश्वासन दिया गया। कार्यक्रम में हमीरवास ग्राम पंचायत एवं आसपास के गांवों के सरपंच, पूर्व सरपंच, ग्राम के गणमान्य नागरिकों एवं अभिभावकों ने शिरकत की। कार्यक्रम में कांग्रेस देहात ब्लॉक अध्यक्ष अशोक पूनियां, पूर्व सैनिक संघ राजगढ के अध्यक्ष जगतसिंह, नीमां सरपंच मानसिंह रैबारी व पूर्व सरपंच उषा ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम के उपरांत शहीद परिवार द्वारा विद्यार्थियों को मिठाई वितरण किया गया। विद्यालय परिवार द्वारा भी शहीद वीरांगनाओं का शॉल एवं मोमेंटो भेंट कर सत्कार किया गया। प्रधानाचार्य नरेश बिशु एवं विद्यालय स्टाफ द्वारा भामाशाह परिवार का विद्यालय के लिए सुंदर मुख्य प्रवेश द्वार बनवाए जाने पर धन्यवाद ज्ञापित किया एवं आगंतुक मेहमानों का कार्यक्रम में शिरकत करने पर आभार व्यक्त किया गया।

सहकार भारती की बैठक आयोजित

झुंझुनूं, (कासं)। राजस्थान सहकार भारती की बैठक सह संगठन प्रमुख कमलेश गहलोत के मुख्य मार्गदर्शन में झुंझुनूं में संपन्न हुई। जिसमें झुंझुनूं जिले के सहकारिता क्षेत्र में काम करने की आवश्यकता पर बल दिया गया। इस अवसर पर मुख्य रूप से संबोधित करते हुए संगठन प्रमुख कमलेश गहलोत ने कहा कि आने वाले समय में बेरोजगारी भयंकर रूप देगी। हमारे युवा लक्ष्य से भटक सकते हैं। रोजगार के अवसर उन्हें उचित मात्रा में नहीं मिलेंगे तो देश में भयंकर समस्या खड़ी हो सकती है। इसके निदान के लिए हम सबको सहकारी ताकि क्षेत्र में रुचि देकर काम करना चाहिए। देश में सहकार भारती एक ऐसा संगठन है। जो युवाओं को सही मार्गदर्शन भी दे सकता है और उन्हें रोजगार भी दे सकता है। सरकार भारती के माध्यम से हम देश की दशा और दिशा बदल सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि सहकारिता को जन जन तक कैसे पहुंचाएं। उन्होंने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि देश में सहकारिता के क्षेत्र में सरकार बहुत बड़ा बजट देती है। मगर दुर्भाग्य इस बात का है इस बजट को हम खर्च भी नहीं कर पाते और हमारा यह बजट लैप्स हो जाता है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि हम सरकार के साथ मिलकर सहकारिता का मंत्र जनता में प्रसारित करें। जिससे देश में विकास तो होगा ही होगा। साथ ही रोजगार के अवसर भी हमारे युवा शक्ति को मिलेगा। हमारे किसानों को मिलेगा। हमारे मजदूर को मिलेगा। आज हम स्वयं सहायता समूह के माध्यम से छोटी-छोटी समितियों के माध्यम से सहकारिता के क्षेत्र में लोगों को लाभान्वित कर सकते हैं। बैठक में कॉपरेटिव भंडार के अध्यक्ष जगदीश खाजपुरिया ने भी अपना संबोधन देते हुए कहा कि राजस्थान में सरकार कोऑपरेटिव क्षेत्र में विशेष ध्यान दें तो हमारा जिला एक नया संदेश पूरे राजस्थान को दे सकता है। बैठक में पूर्व सांसद संतोष अहलावत में भी अपने विचार रखते हुए कहा कि हमारे जिले में कोऑपरेटिव का बहुत बड़ा काम है। जिसे समय अनुसार गति देने की आवश्यकता है। इस अवसर पर भाजपा के जिलाध्यक्ष बनवारीलाल सैनी, जिला उपाध्यक्ष रामनिरंजन पुरोहित, भाजपा नेता विश्वंभर पूनियां, महेश जीनगर, एडवोकेट सरजीत चौधरी, अरूण कस्वां सहित झुंझुनूं के प्रमुख लोग शामिल थे।

युवा मोर्चा ने किया शहीदों को नमन

रतनगढ़, (कासं)।भारतीय जनता युवा मोर्चा की रतनगढ़ शहर इकाई ने शनिवार शाम को कारगिल विजय दिवस की 25 वीं वर्षगाँठ पर शहीदों को नमन एवं देश भक्ति भजन संध्या का कार्यक्रम आयोजित किया गया। युवा मोर्चा अध्यक्ष प्रदीप सैनी ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आ ान पर शहीदों को नमन करने का कार्यक्रम पुरे प्रदेश भर में किया गया है। इस दौरान कार्यक्रम को भाजपा जिला उपाध्यक्ष भागीरथ सिंह राठौड़, हनीफ खत्री,दीपक मुरारका,देवी सिंह पडिहार,कन्हैयालाल चौमाल,राजकुमार महर्षि,महेंद्र उपाध्याय,अर्जुन सिंह फ्रांसा,सुशील इन्दौरिया,गोपाल धेतरवाल,सुनील कम्मा आदि ने सम्बोधित किया। कार्यक्रम के अंत मे भारत माता की जय घोष करते हुए आरती की गई। कार्यक्रम के संयोजक गोविन्द कठौड ने सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन अरुण पंचलगिया ने किया। इस अवसर पर भाजपा जिला उपाध्यक्ष सन्तोष तालनिया,सुभाष भूण,ओबीसी मोर्चा अध्यक्ष किशनलाल घोड़ेला,रामदेव चंदनिया,निरंजन रुन्थला,भरत रांकावत ,प्रभुदयाल राजपुरोहित,निखिल इन्दौरिया,मनीष महर्षि,प्रवीण शर्मा,मुकेश प्रजापत,ओम महर्षि,सुनील शर्मा,रतन मोची सहित सैकड़ों भाजपा कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

66 यूनिट रक्त एकत्रित

चिड़ावा, (कासं)। भाजपा नेता दिनेश दाधीच ने अपने जन्मदिवस पर एक और प्रेणादायक कार्य किया और गायत्री मंदिर के पास स्थित मुक्ति धाम में 51 बरगद, पीपल, नीम के पेड़ लगाए। इस कार्य के माध्यम से उन्होंने स्वच्छ पर्यावरण का संदेश दिया। इससे पहले दिनेश दाधीच ने डीएसएम अस्पताल में ब्लड कैंप लगाया। जिसमें 66 यूनिट ब्लड एकत्रित हुई। उनकी इस पहल की सहराना की जा रही। इस अवसर पर डॉ. अवतार शर्मा, आनंद केजड़ीवाल, विकास सैनी, तेजप्रकाश सोनी आदि उपस्थित रहे।

सुभाष चन्द्र बोस महाविद्यालय, साहवा (चूरू)

तुरन्त आवश्यकता है

सहायक आचार्य:- हिन्दी-03 पद, अंग्रेजी-03 पद, भूगोल-02 पद, भौतिक विज्ञान-02 पद, रसायन विज्ञान-02 पद, गणित-02 पद, प्राणी विज्ञान-02 पद, वनस्पति विज्ञान-01 पद, राज.विज्ञान-01 पद, कम्प्यूटर विज्ञान-01 पद

योग्यता : यू.जी.सी. व विश्वविद्यालय के मानदण्डानुसार

वेतन : प्रबन्ध समिति, यू.जी.सी. के नियमानुसार

इच्छुक अभ्यर्थी अपने मूल दस्तावेजों सहित साक्षात्कार हेतु दिनांक 10.08.2024 को सुबह 10:00 बजे से शाम 04:00 बजे तक उपस्थित होवें।

सचिव-सुभाष चन्द्र बोस महाविद्यालय, साहवा, त. तारानगर, जिला चूरू, राजस्थान पिन कोड 331302 मो. नं. 9828768475

सरस्वती कन्या पीजी महाविद्यालय, तारानगर (चूरू)
एसबीआई बैंक के पास, तारानगर (चूरू)-331304

आवश्यकता

स्थायी प्राचार्य, उप प्राचार्य एवं व्याख्याता हिन्दी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य, संस्कृत साहित्य, भूगोल (तीन पद), गृह विज्ञान, राजनीति विज्ञान, कंप्यूटर एप्लीकेशन, पुस्तकालय अध्यक्ष, शारीरिक शिक्षक के लिए महाविद्यालय में आवश्यकता है। इच्छुक अभ्यर्थी सम्पूर्ण दस्तावेज की फोटोप्रति सहित सात दिनों तक कार्यालय में जमा करावें। केवल NET, SET एवं पीएचडी योग्यताधारी ही आवेदन करें।

सचिव, 9413360246

देवी राम मुल्लाका हत्याकांड के एक और आरोपी को दबोचा

दिल्ली-हरियाणा में मजदूरी कर काट रहा था फरारी, गंगापुर सिटी में नादौती थाना क्षेत्र से पकड़ा, 25 हजार का इनामी है आरोपी

जयपुर। एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स पुलिस मुख्यालय की टीम ने डीग जिले में 3 साल पहले बहुचर्चित रहे देवी राम मुल्लाका हत्याकांड के एक और आरोपी को पकड़ लिया है। इस पर एस.पी. डीग द्वारा 25 हजार रुपए का इनाम घोषित है। दिल्ली एवं हरियाणा में मजदूरी कर फरारी काट रहा आरोपी शिव हरि गुर्जर करीब 15 दिन पहले ही नादौती आया था।

अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स एवं अपराध दिनेश एम.एन. ने बताया कि उपमहानिरीक्षक पुलिस श्री योगेश यादव के सुपरविजन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एजीटीएफ विद्या प्रकाश के नेतृत्व में इनामी, वांछित अपराधियों, गैंगस्टर इत्यादि के बारे में सूचना के संकलन के लिए एएसआई शैलेंद्र कुमार शर्मा, हैड कांस्टेबल मदनलाल शर्मा व कांस्टेबल बृजेश कुमार शर्मा की एक टीम भरतपुर रेंज की ओर रवाना की गई है। एडीजी एमएन ने बताया कि शनिवार को एएसआई शैलेंद्र कुमार शर्मा व कांस्टेबल बृजेश कुमार शर्मा को सूचना मिली कि हत्याकांड में शामिल 25 हजार का इनामी आरोपी शिवहरी गुर्जर पुत्र रामजीत निवासी मुल्लाका थाना कामां अपने जानकार से मिलने गंगापुर सिटी में थाना नादौती इलाके की होडाहेली गांव में आया हुआ है। सूचना पर थाना पुलिस की मदद से एजीटीएफ ने जाल बिछाकर आरोपी को सरकारी स्कूल के पास से दबोच लिया।

डीग में तीन साल पहले बहुचर्चित रहे देवी राम मुल्लाका हत्याकांड का एक और आरोपी पकड़ा गया।

एमएन ने बताया कि 11 जून 2021 की सुबह खरीदारी करने बाइक लेकर कामां के लिए निकले देवी राम गुर्जर निवासी मुल्लाका पर पुरानी रंजिश के चलते गांव के ही रामावतार पुत्र रामप्रसाद पक्ष के 20-22 व्यक्तियों ने लोहे के सरियों और लाठियों से हमला कर दिया और मरा समझकर हवाई फायर करते हुए गांव आये। गांव में भी फायरिंग की जिसमे तीन बच्चे व चार अन्य घायल हो गये। गंभीर घायल देवीलाल ने जयपुर लाते समय महुआ से पहले दम तोड दिया था। मामले में थाना पुलिस द्वारा घटना के बाद आठ व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया था, 13 आरोपी फरार हो गये। जिन पर 25-25 हजार का इनाम घोषित किया गया। फरार आरोपियों में से आठ आरोपियों को एजीटीएफ ने कामां पुलिस के सहयोग से पकड़ा, एक आरोपी को कामां पुलिस ने पकड़ लिया। बाकी बचे चार आरोपियों की तलाश की जा रही है।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एजीटीएफ विद्या प्रकाश के नेतृत्व में की गई इस संपूर्ण कार्रवाई में एएसआई शैलेंद्र शर्मा एवं कांस्टेबल बृजेश कुमार की विशेष भूमिका एवं हैड कांस्टेबल मदन लाल शर्मा व कांस्टेबल सोहन की तकनीकी भूमिका रही। कार्रवाई में थाना नादौती से उपनिरीक्षक देवेंद्र कुमार शर्मा मय टीम एएसआई चन्द्र हुसैन, कांस्टेबल धारा सिंह, रवि कुमार, कपिल, बनवारी लाल व जसराज का सराहनीय सहयोग रहा।

आकाशीय बिजली गिरने से पांच महिलाएं झुलसी

निवाई में आकाशीय बिजली गिरने से झूलसी महिलाओं का उपचार सरकारी अस्पताल में कराया।

निवाई, (निसं)। उपखण्ड मुख्यालय की ग्राम पंचायत भरथला के गांव जीवली की बैरवा ढाणी में शनिवार की दोपहर अचानक मौसम के करवट बदलते ही आंधी व बरसात के दौरान आकाशीय बिजली गिर जाने से गांव की पांच महिलाएं झुलस गईं। आकाशीय बिजली गिरने से जीवली निवासी अनीता पत्नी मुकेश बैरवा, ग्यारसी पत्नी छीतर बैरवा, मीरा बैरवा, संतरा पत्नी रामलाल बैरवा, काली देवी पत्नी अमरचन्द बैरवा झुलस जाने से घायल हो गई। घायलों को परिजनों ने सामुदायिक चिकित्सालय झिलाय में भर्ती करवाया जहां प्राथमिक उपचार के बाद घर भेज दिया गया।

सरकारी स्कूल पर आकाशीय बिजली गिरी

मालपुरा, (निसं)। उपखण्ड क्षेत्र के हिंडोला गांव में तेज गर्जना के साथ सरकारी स्कूल भवन पर आकाशीय बिजली गिरने से उपकरण जल गये। विद्यालय के शिक्षक सुरेश विजय ने बताया कि तेज गर्जना के साथ राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय भवन पर बिजली गिरने से विद्यालय भवन में दारारें आ गई तो कुछ हिस्सा क्षतिग्रस्त भी हो गया। बिजली गिरने से विद्यालय में लगे कम्प्यूटर, प्रिंटर, इन्वर्टर, पंखें व लाइटें सहित अन्य उपकरण जल गये। वहीं शहर के दूदू रोड पर सड़क के बीच बने डिवाइडर पर नगरपालिका प्रशासन द्वारा लगाई गई रोड लाइटों की कंट्रोल डीपी के नंगे तार जमीन पर फैले होने से शनिवार को करंट प्रवाहित तारों की चपेट में आने से दूधारू भैंस अकाल मौत का शिकार हो गई।

युवक फांसी के फंदे पर झूला, मौत

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के प्रताप नगर थाना क्षेत्र की आजाद नगर कॉलोनी में अज्ञात कारणों के चलते एक 32 वर्षीय युवक ने फांसी के फंदे पर झूल कर आत्महत्या कर ली। प्रताप नगर थाना अधिकारी गजेंद्र सिंह नरूका ने बताया क्षेत्र वासियों ने टेलीफोन के जरिए सूचना दी की क्षेत्र के एक मकान से अजीब सी बदबू आ रही है । इस आधार पर पुलिस ने गृह स्वामी के परिजनों से संपर्क कर मौके पर पहुंच देखा तो मकान के मुख्य द्वार का गेट अंदर से बंद था जिसे परिजनों की मौजूदगी में तोड़कर अंदर देखा गया तो पंखे से युवक की लाश लटकी हुई थी। पुलिस का कहना है कि यह लाश तीन से चार दिन पुरानी थी जो की सड़ गल चुकी थी। मृतक का नाम नंदकिशोर पिता जगदीश व्यास है जो की पूर्व में टेंट का व्यवसाय करता था। बुधवार को पिता से मिला था और उसके बाद से परिजनों के संपर्क में भी ही नहीं था।

OFFICE OF THE SUPERINTENDING ENGINEER, PHED, CIRCLE BARMER
Tel:02982-220253, Email: edphed@gmail.com, secircle.barmer@rajasthan.gov.in
No. SE/PHE/Bmr/NIT 01/2024-25/1299-1316 Date: 23/07/2024
NOTICE INVITING BIDS NIB No. 2024-25/01
Bids for Work of

01	Annual Rate Contract for construction and commissioning of tube Wells By Rotary Rig Machine with P,L& J Of Pipe Line under Circle Barmer. UBN: PHE2425WSRC03167	120.00 Lacs.

are invited from interested bidders upto 13.08.2024 up to 6:00 PM. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in) of the state; and departmental website.
SUPERINTENDING ENGINEER PHED CIRCLE BARMER
DIPR/C/6539/2024

कार्यालय अधिशाषी सार्वजनिक निर्माण विभाग नगरखण्ड उदयपुर
S.No:TS/NIT File/2024-25/D- 1032 Date 18-07-2024
NOTICE INVITING BID (NO.06/2024-25)
Bids for Various Roads work in PWD City Division Udaipur are invited from insterested bidders upto 6.00 PM (time) 12-08-2024 (date). Other Particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://Sppp.raj.nic.in) of the state; and departmental website.
SPPP NIB No, PWD2425A0804

S.No.	UBN No.
1	PWD2425WSOB03077
1	PWD2425WSOB03078

(R.K.Mundra) EXECUTIVE ENGINEER PWD CITY DIVISION UDAIPUR
DIPR/C/6580/2024

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER PHED DIVISION KARAULI
PH NO.-07464-250219, E-Mail-ee.kar.phed@rajasthan.gov.in
Notice Inviting Bid
Bids for the work of solar installation under phed division karauli are invited from interested bidders up to 05.08.2024 Other Particulars of the bid may be visited on the procurement portal eproc.rajasthan.gov.in and sppp.raj.nic.in website.
NIB CODE:-PHE2425A1427

S.N.	NIT NO.	UBN	S.N.	NIT NO.	UBN
1	57/2024-25	PHE2425WSOB03158	2	58/2024-25	PHE2425WSOB03159
01	Total work		02		
02	Total Estimate Cost		28.50 Lac		
03	Bid submission end date		05.08.2024 up to 06.00 PM		
04	Bid opening date		06.08.2024 at 02.00 PM		

(Prahlad Meena) Executive Engineer Public Health Engineering Department Division Karauli
DIPR/C/6559/2024

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड सांचौर
क्रमांक-अअ / सांचोर/2024-25/533 दिनांक-22.07.2024
निविदा सूचना संख्या : 05 वर्ष 2024-2025
NIB No.: -.PWD 2425A0852
राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से भवन निर्माण कार्य हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवैदकों एवं राज्य सरकार/केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवम् दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में भवन निर्माण कार्य जिनकी लागत राशि रू. 217.00 लाख है के लिए ईटेण्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदां आमंत्रित की जाती है।

ऑनलाईन निविदा आवेदन डाउनलोड एवं अपलोड करने की तारीख	25 जुलाई 2024, 9:30 बजे से 17 अगस्त 2024, सायं 06:00 बजे तक

निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट http://dipr.rajasthan.gov.in व http://sppp.rajasthan.gov.in http:// eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। सम्पूर्ण निविदा प्रक्रिया http://eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाईन सम्पादित की जायेगी। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाईट पर http://eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर्ड करवाना आवष्यक है। कार्यवार यू.बी.एन संख्या निम्नानुसार है।
1. UBN: PWD2425WSOB03223
(ओम प्रकाश) अधिशाषी अभियन्ता सा.नि.वि. खण्ड सांचौर
DIPR/C/6578/2024

हिण्डौन में 27 जून से अब तक 335 एमएम बारिश

- पिछले 18 घंटे से रुक-रुक कर बूंदा-बांदी जारी
- जिला अस्पताल के इमरजेंसी गेट पर भरा पानी

हिण्डौन सिटी। क्षेत्र में शनिवार को मानसून मेहरबान रहा। यहां सुबह से रुक-रुक कर बरसात हो रही है। हिण्डौन में शुक्रवार देर रात बारिश शुरू हुई, जिसमें सुबह तक 2 एमएम बारिश दर्ज हुई। इसके बाद दोपहर को घने बादल छाए और बारिश शुरू हुई, जिससे तापमान में 2 से 3 डिग्री की गिरावट आई। हिंडौन में 27 जुलाई तक 335 एमएम बारिश हो चुकी है। आज बारिश के बाद लोगों को गर्मी और उमस से राहत मिली, वहीं कई क्षेत्रों में जलभराव बना रहा।

गौशाला रोड, मोक्षधाम, कटरा बाजार, मनीराम पार्क, और जिला अस्पताल मार्ग में बारिश होते ही सडकों पर पानी भर गया। जिला अस्पताल के इमरजेंसी गेट पर पानी भरने से मरीजों को काफी परेशानी हुई। हिंडौन में दोपहर 2 बजे बाद तेज बारिश शुरू हुई। क्षेत्र के कई इलाकों में पिछली बारिश का पानी नहीं निकल पाया है। बाजना रोड पर जलभराव और टूटी हुई सडकों से गुजरते हुए वाहन चालक काफी परेशान रहे। मौसम विभाग ने अगले 2-3 दिन मानसून के सक्रिय रहने की संभावना जताई है। इसी के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में खेतों में पानी भरा हुआ है, जिससे सरसों की बोई फसलें अंकुरित होकर डूब गई।

मैनेजर पर चाकू से हमला करने वाला आरोपी गिरफ्तार

नौ चोकी पाल की पहाड़ी पर छिपा हुआ था आरोपी

पुलिस की गिरफ्त में चाकू से हमला करने वाला आरोपी।

राजसमंद, (निसं)। जिला मुख्यालय के मुखर्जी चौराहा स्थित सुपरमार्केट मैनेजर पर हमले के मामले में पुलिस ने एक बडी कार्रवाई करते हुए मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। साथ ही, एक नाबालिग को भी हिरासत में लिया गया है।

कांकरोली थानाधिकारी हनवंत सिंह सोढा ने बताया कि शुक्रवार को हुई चाकूबाजी की घटना के बाद से ही पुलिस टीम आरोपियों की तलाश में जुटी हुई थी। कांकरोली पुलिस ने राजनगर पुलिस कंट्रोल रूम से अतिरिक्त बल बुलाकर शहर और आसपास के इलाकों में आरोपियों की तलाश शुरू कर दी। पुलिस को सूचना मिली कि मुख्य आरोपी रामचंद्र राजनगर के नौ चोकी पाल की दार्यी पहाडी पर छिपा हुआ है। इस सूचना के आधार पर पुलिस दल तुरंत नौ चोकी पाल पहुंचा। वहां पुलिस को आरोपी की मोटरसाइकिल मिली जिससे उनकी जानकारी और पुख्ता हो गई। आरोपी पहाडी पर चढ कर घनी झाडियों में छिप गया। पुलिस भी आरोपी को पकडने के लिए पहाडी पर चढी, लेकिन अंधेरा होने के कारण और इलाके में तेंदुए के होने के कारण खोजी अभियान मुश्किल हो गया। पुलिस ने पहाडी को चारों ओर से घेर लिया और रात 1० बजे तक सर्च ऑपरेशन जारी रखा।

इस दौरान शुरू हुई बारीश ने खोजी अभियान को और कठिन बना दिया। रात 11 बजे जब आरोपी रामचंद्र भील पहाडी से उतरा तो पहले से घात लगाए पुलिस दल ने उसे दबोच लिया। वासोल निवासी रामचंद्र और उसका एक नाबालिग साथी इस वारदात में शामिल थे, जिसे पुलिस ने हिरासत में ले लिया। रामचंद्र का मेडिकल परीक्षण करवाने के बाद उसे कांकरोली थाने लाया गया, जहां उसने अपना अपराध स्वीकार किया। पुलिस जांच में सामने आया है कि चाकूबाजी की इस घटना का मुख्य कारण आरोपी और सुपरमार्केट के मैनेजर के बीच काम को लेकर हुए विवाद था। मैनेजर द्वारा आरोपी को नौकरी से निकाले जाने पर आरोपी ने अपनी प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचा हुआ महसूस किया और बदले की भावना से भर गया। इसी कारण वह अपने नाबालिग दोस्त के साथ मिलकर मैनेजर की पिटाई करने की योजना बनाई। घटना को अंजाम देने से पहले दोनों ने गांजा और शराब का सेवन किया जिससे उनका गुस्सा और बढ गया।

'संविदा पर लगे शिक्षकों को फिलहाल नहीं हटाया जायेगा'

बीकानेर। राजस्थान के महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) एवं राजकीय अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में एक साल के लिए संविदा पर लगाए गए साढ़े चार हजार शिक्षकों को आगामी निर्देश तक कार्य मुक्त नहीं किया जाएगा। इस संबंध में शिक्षा निदेशक आशीष मोदी ने आदेश जारी किए।

प्रदेश के सभी जिला शिक्षा अधिकारियों (माध्यमिक) को भेजे आदेश में कहा गया है कि सहायक अध्यापक, लेवल-प्रथम व द्वितीय संविदा भर्ती 2023 के अन्तर्गत संविदा आधार पर नियुक्त सहायक अध्यापक (अंग्रेजी एवं विज्ञान-गणित) की एक वर्ष की संविदा अवधि पूर्ण हो रही है। ऐसे कार्यरत संविदा सहायक अध्यापकों को आगामी निर्देश प्राप्त होने तक विद्यालय से कार्यमुक्त नहीं किया जाए। इन सभी की उपस्थिति पूर्वानुसार नियमित रूप से उपस्थिति पंजिका में दर्ज की जाए। किसी भी विद्यालय में सहायक अध्यापकों को उपस्थिति दर्ज करने से मना करने पर समस्त दायित्व संस्था प्रधान का माना जाएगा।

राजस्थान के साढ़े चार हजार शिक्षकों को अंग्रेजी माध्यम में एक साल के लिए 16 हजार 900 रुपए प्रति माह पर लगाया गया था। इन शिक्षकों का कार्यकाल 28 जुलाई को समाप्त होने वाला था, जिसके बाद से इनमें जबरदस्त बेचैनी थी। लेकिन अब भजनलाल सरकार ने इन शिक्षकों को बड़ी राहत दी है।

निचले तबके को त्वरित न्याय मिलें, इसके लिए बार और बैंच संयुक्त रूप से प्रयास करें : बिरला

- 'सशक्त न्याय व्यवस्था विकसित भारत के संकल्प का मूल आधार है'

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर में हाईकोर्ट की प्लेटिनम जुबली के अवसर पर शनिवार को सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमीनार मे लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने कहा- सबसे निचले तबके को त्वरित न्याय मिल सकें, इसके लिए बार और बैंच को संयुक्त रूप से प्रयास करने चाहिए। उन्होंने कहा सशक्त न्याय व्यवस्था विकसित भारत के संकल्प का मूल आधार है। आम जनता को सुलभ, सस्ता और त्वरित न्याय दिलाने में न्यायालयों की भूमिका महत्वपूर्ण है। पेंडिंग मुकदमों के समाधान के लिए नवाचार और नवीन टेक्नॉलजी का अधिकतम उपयोग आवश्यक है।

बिरला ने आज राजस्थान उच्च न्यायालय की स्थापना के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कि राजस्थान उच्च न्यायालय ने देश को कई अत्यंत विशिष्ट न्यायाधीश और प्रख्यात अधिवक्ता दिए हैं , जिन्होंने कानून और न्याय के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाएं दी हैं। उन्होंने कहा कि इस ऐतिहासिक यात्रा में न्यायालय के निर्णयों ने राजस्थान सहित देश के सभी लोगों के हितों को सुरक्षित और सशक्त किया है। बिरला ने सशक्त न्याय व्यवस्था को विकसित भारत के संकल्प का मूल आधार बताया। उन्होंने कहा कि इस दिशा में सरकार और न्यायपालिका दोनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। आम जनता के लिए सुलभ, सस्ता और त्वरित न्याय की आवश्यकता पर ज़ोर देते हुए लोक सभा अध्यक्ष ने विचार व्यक्त किया कि इस दिशा में न्यायालयों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। सरकार ने न्याय व्यवस्था पर अनावश्यक बोझ कम करने के लिए कई वैधानिक परिवर्तन किए हैं, बिरला ने आशा व्यक्त की कि न्यायपालिका भी इस दिशा में बराबर की भूमिका निभाएगी। उन्होंने न्यायालयों में लंबित मुकदमों के निपटान और न्याय व्यवस्था की खामियों को दूर करने के लिए नए इनोवैशन और नई टेक्नॉलजी के अधिकतम उपयोग पर बल दिया।

जोधपुर हाईकोर्ट की प्लेटिनम जुबली पर आयोजित सेमिनार में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला का स्वागत किया।

उन्होंने युवाओं का आव्हान करते हुए कहा कि विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में उनकी विशेष भूमिका रहेगी। सेमिनार में एडवोकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष रतना राम ठोलिया ने सभी सभी अतिथियों का स्वागत किया। सेमिनार में सुप्रीम कोर्ट के जज संदीप मेहता ने भी संबोधित किया। बताया- एक मामला ऐसा आया जब 14 साल से एक कैदी को पैरोल नहीं मिली। तब पता चला कि उसका नंबर नहीं आया। इसके बाद सभी कैदियों के लिए एक ऐप बनाया गया और कैदियों की जानकारी उस ऐप पर डाली गई। इस तरह से ई-प्रिजनर ऐप आया और सभी कैदियों की जानकारी उसमें है। यही व्यवस्था उन्होंने गुवाहाटी उच्च न्यायालय में करवाई। इस तरह से टेक्नॉलोजी से जेल में बंद हर कैदी को न्याय पहुंच रहा है। सुप्रीम कोर्ट के जज पंकज मित्तल ने बताया कहा राजस्थान हाईकोर्ट ने जिस तरह कॉज लिस्ट को प्रिंट करना बंद कर दिया, यह बड़ी उपलब्धि है। मैं जब इलाहबाद हाईकोर्ट में एक्सपेंडिचर कमेटी में था। तब कॉज लिस्ट का बकाया बिल करीब 63 करोड़ रुपए था, जो गर्वमेंट प्रेस को देना था।

उन्होंने कहा कि कॉज लिस्ट ऑनलाइन करने से काफी पैसा बचा है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति भी कार्य किया है। विधि मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा- विधानसभा भी जल्द ही पेपर लेस होगी। उन्होंने कहा कि हाई कोर्ट में जिस तरह टेक्नोलॉजी का उपयोग हो रहा है, विधानसभा में भी होगा। कार्यक्रम में जस्टिस पुष्पेंद्र सिंह भाटी ने राजस्थान हाईकोर्ट में उपयोग की जाने वाली टेक्नोलॉजी से अवगत करवाया। कार्यक्रम में सुप्रीम कोर्ट जज पंकज मित्तल, जज संदीप मेहता,राजस्थान हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश एमएम श्रीवास्तव व अधिवक्ता मौजूद रहे।

राजस्थान सरकार का उपक्रम
RIICO GROW WITH RAJASTHAN

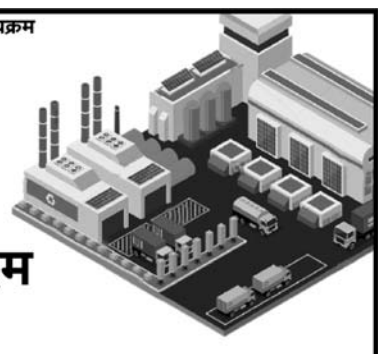

स्थापित करें नए उद्यम विकास की ओर बढ़ाएं कदम
सरल ई-नीलामी के माध्यम से
आधारभूत सुविधाओं युक्त औद्योगिक क्षेत्रों में करें उद्यम की स्थापना

कुल भूखण्ड	औद्योगिक भूखण्ड	व्यावसायिक भूखण्ड	दुकानें	कियोस्क
77	57	5	14	1

ईएमडी	ऑनलाईन बिड
प्रारम्भ तिथि : 29 जुलाई, 2024 (प्रातः 10:00 बजे)	प्रारम्भ तिथि : 13 अगस्त, 2024 (प्रातः 10:00 बजे)
अंतिम तिथि : 12 अगस्त, 2024 (सायं 06:00 बजे)	अंतिम तिथि : 16 अगस्त, 2024 (सायं 05:00 बजे)

05 आबू रोड़	07 अजमेर	04 अलवर	02 बालोतरा	03 बांसवाड़ा
03 भीलवाड़ा	08 भिवाड़ी-II	02 बीकानेर	01 दौसा	01 धिलोठ
05 जयपुर (उत्तर)	02 जयपुर (दक्षिण)	02 ईपीआईपी, सीतापुरा (जयपुर)	02 झालावाड़	03 जोधपुर
01 कोटा	04 किशनगढ़	07 नागौर	01 नीमराना	02 पाली
03 राजसमंद	02 सवाई माधोपुर	02 सीकर	03 श्रीगंगानगर	02 उदयपुर

25% भुगतान के बाद, शेष 75% भुगतान 11 किस्तों में 8.5% ब्याज के साथ या 120 दिनों के भीतर ब्याज रहित भुगतान या टर्म लोन स्कीम के तहत भूमि की लागत का 75% तक का ऋण 5 साल की पुनर्भुगतान अवधि एवं 8.5% ब्याज के साथ
*T&C Apply
सामान्य प्रश्नों के लिए स्कैन करें
Raj.Samvad/C/24/2912

राजस्थान स्टेट इण्डस्ट्रियल डवलपमेन्ट एण्ड इन्वेस्टमेन्ट कॉर्पोरेशन लिमिटेड
उद्योग भवन, तिलक मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर-302005
ई-नीलामी हैल्पलाइन नं. 0141-4593250, 4593237, व्हाट्सएपः +91 9001306515, ई-मेलः riico@riico.co.in
ईएमडी विवरण, रजिस्ट्रेशन एवं भूखण्ड से सम्बंधित जानकारी के लिए देखें www.riico.co.in

भारत विश्व का सबसे बड़ा और सफल लोकतंत्र : देवनानी

युवा संसद में विधानसभाध्यक्ष ने कहा कि देश के युवा जातिवाद, क्षेत्रवाद से ऊपर उठकर नेशन फर्स्ट की भावना के साथ कार्य करें

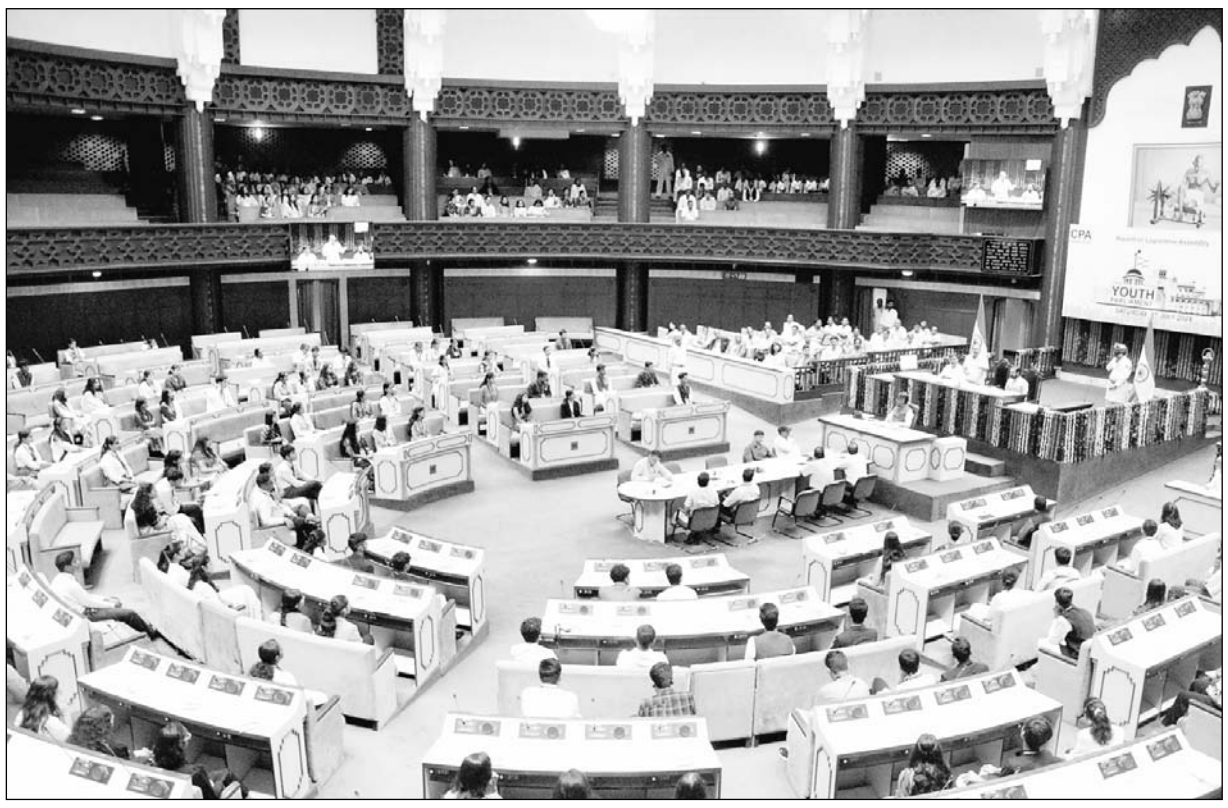

विधानसभा में शनिवार को राष्ट्र मण्डल संसदीय संघ की राजस्थान शाखा की ओर से युवा संसद समारोह का आयोजन हुआ।

- 'वर्तमान में कई बार असंसदीय घटनाओं के कारण मन व्यथित होता है। असहनशीलता इसका प्रमुख कारण है'
- देवनानी की पहल पर युवाओं को हुआ विधानसभा का अनुभव

जयपुर, (वि.सं.)। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा है कि भारत विश्व का सबसे बड़ा एवं सफल लोकतंत्र है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र को महान बनाने में यहाँ की समृद्ध संवैधानिक परम्पराए, नियम और प्रक्रियाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भविष्य में इस महान लोकतंत्र को इसी प्रकार जीवित रखने में देश के युवाओं का अहम योगदान होगा। विधानसभा में शनिवार को राष्ट्र मण्डल संसदीय संघ की राजस्थान शाखा के तत्वावधान में आयोजित युवा संसद समारोह को स्पीकर देवनानी संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भारत में प्राचीन काल से ही न्याय सभा तथा राज सभा के रूप में लोकतांत्रिक व्यवस्थाएं रही हैं। भारत के जन जन के मन में लोकतांत्रिक सिद्धांतों और व्यवस्थाओं के प्रति गहरी आस्था है। उन्होंने युवा संसद में उपस्थित युवाओं का आव्हान किया कि इस संसदीय व्यवस्था में भागीदार बनकर इस महान लोकतंत्र में एक नयी ऊर्जा का संचार करें।

देवनानी ने कहा कि वर्तमान में कई बार असंसदीय घटनाओं के कारण मन व्यथित होता है। असहनशीलता इसका प्रमुख कारण है। उन्होंने युवाओं को कहा कि सहनशील और शिक्षित बनकर वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से राष्ट्र निर्माण के लिए हमेशा कार्य करते रहे।देवनानी ने कहा कि संविधान के आधार पर ही देश में विधायिका, न्यायपालिका और कार्यपालिका कार्य करती है इसलिए देश के युवाओं को संविधान में अपनी गहरी आस्था रखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि देश के युवा जातिवाद, क्षेत्रवाद से ऊपर उठकर नेशन फर्स्ट की भावना के साथ कार्य करें। राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए एक भारत श्रेष्ठ भारत की दिशा में काम करें।

विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि हमेशा दीन-दुखी, पिछड़े और गरीबों के उत्थान के लिए कार्य करें और समाज में अंधकार और अशिक्षा को दूर करने में अपने तन-मन-धन से हर संभव सहयोग करें। उन्होंने स्वयं के शिक्षक रहते हुए अपने अनुभव साझा करते हुए सदन में उपस्थित विद्यार्थियों को कहा कि मन में जिज्ञासा और गुणात्मक कार्यों में हमेशा अपनी रूचि बनाये रखे।

नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि प्रदेश के विकास, कानूनों की क्रियान्विति आदि का निर्धारण विधानसभा से ही होता है। इस पवित्र सदन में आना बहुत सौभाग्य की बात है। उन्होंने उपस्थित विद्यार्थियों को कहा कि सदन में बैठकर यहाँ की कार्यप्रणाली को बारीकी से समझकर एक जागरूक नागरिक बने। उन्होंने विद्यार्थियों को सोशल मीडिया के सीमित उपयोग और फेक न्यूज़ के प्रति जागरूक रहने को कहा। विधायक और राष्ट्रमंडल संसदीय संघ की राजस्थान शाखा के सचिव संदीप शर्मा ने समारोह में स्वागत और आभार ज्ञापित करते हुए कहा कि संघ द्वारा आयोजित किये जा रहे युवा संसद कार्यक्रमों से युवाओं को लोकतंत्र की स्वस्थ परम्पराओं, दूसरे के विचारों का सम्मान और विधायिका के कामकाज को बारीकी से समझने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

कार्यक्रम में विधान सभा के प्रमुख सचिव महावीर प्रसाद शर्मा, विशिष्ट सचिव भारत भूषण शर्मा सहित विधानसभा के अधिकारी व कर्मचारीगण तथा एस.एम.एस विद्यालय के अध्यापकगण मौजूद थे। इस कार्यक्रम में 41 विद्यालयों के 181 विद्यार्थियों द्वारा विधायक के रूप में सदन में बैठकर जनहित के प्रश्न पूछे गए एवं उनके द्वारा ही स्पीकर, मुख्यमंत्री, नेता प्रतिपक्ष व मंत्री की भूमिका निभाई गयी। उल्लेखनीय है कि कार्यक्रम में 20 जयपुर के और 21 राज्य के अन्य जिलों व राज्यों के विद्यालयों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

खट्टर आज जयपुर में केंद्रीय बजट की जानकारी देंगे

जयपुर। भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष मुकेश दाधीच ने कहा कि केंद्रीय बजट की जन कल्याणकारी नीतियों को आमजन तक पहुंचाने के उद्देश्य से भाजपा की ओर से प्रदेश के संभाग मुख्यालयों पर प्रेसवार्ता आयोजित की जा रही है। इस दौरान प्रेसवार्ता में केंद्रीय मंत्री के साथ राज्य सरकार के मंत्री और भाजपा प्रदेश पदाधिकारी उपस्थित रहेंगे। आज अजमेर और कोटा संभाग मुख्यालय पर प्रेसवार्ता आयोजित की गई। इसमें अजमेर में केंद्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी, भाजपा प्रदेश मंत्री महेंद्र कुमावत और देवनारायण बोर्ड के अध्यक्ष ओमप्रकाश भडाना तथा कोटा में केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गुर्जर के साथ उर्जा मंत्री हीरालाल नागर और भाजपा उपाध्यक्ष मोतीलाल मीणा ने प्रेसवार्ता की।

भाजपा हरियाणा प्रभारी एवं भाजपा राजस्थान पूर्व प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया ने गुरुग्राम पहुँचकर भाजपा के वरिष्ठ नेता और पूर्व राज्यसभा सांसद प्रभात झा के दु:खद निधन पर उनकी पार्थिव देह के अंतिम दर्शन कर श्रद्धांजलि अर्पित की और परिवारजनों को ढांढस बंधाया।

पी.टी.आई.भर्ती परीक्षा में पास हुए पांच अभ्यर्थियों के खिलाफ में एफ.आई.आर. दर्ज

- एस.ओ.जी. की जांच में डिग्रियां फर्जी निकलीं, डमी अभ्यर्थी बैठाकर पास हुए।
- पी.टी.आई. को क्रिकेट, बैडमिंटन और बॉक्सिंग के बेसिक नहीं पता।

जयपुर। पीटीआई भर्ती परीक्षा 2022 में पास हुए पांच अभ्यर्थियों पर एसओजी ने एफआईआर दर्ज की है। अब जल्द ही इनकी गिरफ्तारी हो सकती है। जांच में सामने आया कि इन पीटीआई ने डमी अभ्यर्थी बैठकर परीक्षा पास की है। इनकी डिग्रियां भी फर्जी हैं। साथ ही इन्हें क्रिकेट बैडमिंटन, वॉलीबॉल और बॉक्सिंग जैसे खेलों की बेसिक जानकारी भी नहीं है। इसके लिए एसओजी ने एक महीने से जांच कर रही थी। अब एसओजी ने जांच रिपोर्ट सीनियर अधिकारियों को सौंप दी है।

सूत्रों के अनुसार, एसओजी की जांच में सामने आया है कि पीटीआई भर्ती परीक्षा-2022 में पास हुए अभ्यर्थियों के पास बैचलर ऑफ फिजिकल एजुकेशन (बीपीएड) की सामान्य डिग्री तक नहीं है। आरोपियों ने फर्जी डिग्री लेकर सरकारी नौकरी हासिल की है। एसओजी द्वारा की गई जांच में अब तक पांच पीटीआई के खिलाफ मिली शिकायत की पुष्टि हो चुकी है।

सूत्रों के अनुसार, एसओजी की जांच में सामने आया है कि इन पांच पीटीआई को बेसिक गेम क्रिकेट, बैडमिंटन, वॉलीबॉल और बॉक्सिंग के यार्ड की जानकारी भी नहीं है। दो पीटीआई को टी-20 क्रिकेट मैच और टैस्ट मैच के बेसिक क्लियर नहीं हैं। क्रिकेट बॉल की मोटाई पूछने पर एक पीटीआई ने तो हाथ से इशारा करके बता दिया कि इतनी मोटी होती है।

एसओजी का कहना है कि राजस्थान स्टाफ सलेक्शन बोर्ड की ओर से शारीरिक शिक्षक भर्ती परीक्षा 2022 परीक्षा का आयोजन 25 सितम्बर 2023 को हुआ था। इस परीक्षा में बड़ी संख्या संख्या में डमी अभ्यर्थी बैठे। इनके कारण बड़ी संख्या में अयोग्य लोग राजस्थान सरकार के सरकारी स्कूलों में पीटीआई लग गए। पेपर लीक के आरोपियों की परीक्षा के दिन की मोबाइल लोकेशन चैक की गई। उनकी लोकेशन सेंटर के आसपास की नहीं मिली। ये लोग सेंटर ही नहीं जिले से भी बाहर थे।

एसओजी को हेल्पलाइन नम्बर से अलवर जिले में तैनात सरकारी स्कूल के पीटीआई के बारे में भी जानकारी मिली है। अलवर में लगे हुए कुछ पीटीआई भी इसी प्रकार से परीक्षा पास करके नौकरी पर लगे हैं। एसओजी ने उनके दस्तावेजों की जांच कर रही है। जांच पूरी होने पर उन के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर जांच आगे की कार्रवाई की जाएगी।

एसओजी के अनुसार, जांच में पुष्टि होने के बाद पांच पीटीआई के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। एसओजी को उनके खिलाफ शिकायत मिली है। उनकी जांच चल रही है। इन लोगों से जल्द पूछताछ कर इनकी गिरफ्तारी की जाएगी। संबंधित जिला एसपी और हमारी यूनिट को एक्टिव कर दिया गया हैं।

सूत्रों के अनुसार जोधपुर के बिलाड़ा में रहने वाले महेन्द्र कुमार बिश्नोई के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। महेन्द्र का सेंटर शास्त्री नगर स्थित टैगोर विद्या भवन में था। आरोप है कि महेन्द्र ने अपनी जगह डमी कैंडिडेट बिठाकर परीक्षा पास की। जब आरोपी से बीपीएड का सर्टिफिकेट मांगा गया तो आरोपी ने अमरावती विवि से बीपीएड की फर्जी डिग्री दे कर नौकरी ले ली। वहीं श्रवण सिंह के खिलाफ भी एफआईआर दर्ज की गई है। श्रवण सिंह का सेंटर मुरलीपुरा में शहीद मेजर योगेश अग्रवाल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में आया था। उसने अपनी जगह पर डमी कैंडिडेट बिठा कर परीक्षा पास की और पीटीआई बन गया। आरोपी ने एकलव्य यूनिवर्सिटी मध्य प्रदेश से बीपीएड की डिग्री लगाई, जो फर्जी निकली।

सांचोर के रहने वाले मनोहर लाल का जयपुर के मुरलीपुरा में सेंटर आया था। उसकी जगह डमी कैंडिडेट ने परीक्षा दी थी। शिकायत मिलने के बाद अभ्यर्थी मनोहर लाल के दस्तावेजों की जांच की। जांच में आवेदन पत्र, परीक्षा प्रवेश पत्र और जेएस विश्वविद्यालय शिकोहाबाद (उत्तर प्रदेश) से प्राप्त बीपीएड की डिग्री फर्जी पाई। जालोर के सायला का रहने वाले ईश्वर सिंह का परीक्षा केंद्र मुरलीपुरा के प्रिंस स्कूल में आया था। उसकी जगह डमी कैंडिडेट ने परीक्षा दी थी। ओपीजेएस विश्वविधालय में बीपीएड सत्र 2018-20 अभ्यर्थी ईश्वर सिंह का नाम नहीं मिला। उसने शारीरिक शिक्षक की नौकरी बैक डेट में फर्जी तरीके से ओपीजेएस विश्वविधालय की डिग्री और मार्कशीट से प्राप्त की है। सांचोर के रहने वाले सुरेश कुमार का परीक्षा केंद्र महात्मा गांधी स्कूल में आया था। सुरेश के स्थान पर डमी कैंडिडेट ने परीक्षा दी थी। सुरेश कुमार ने जेएस विश्वविद्यालय शिकोहाबाद (उत्तर प्रदेश) से बीपीएड की डिग्री प्राप्त की थी। आवेदन पत्र में बीपीएड उत्तीर्ण करने का साल 2021 अंकित किया गया है। वहीं, जेएस विश्वविद्यालय शिकोहाबाद द्वारा जारी मॉर्कशीट में चौथे सेमेस्टर का परिणाम 23 सितम्बर 2022 को जारी होना बताया है। इस प्रकार फर्जी डिग्री प्राप्त की गयी थी।

सुमेल एनीकट के अति.जल भराव की समस्या के निस्तारण के लिए क्या कर रही है सरकार?

- अदालत ने मामले में मुख्य सचिव और जल संसाधन विभाग के अधिकारियों सहित अन्य को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने राज्य सरकार से पूछा है कि गंगापुर सिटी के पास सुमेल नदी पर बने एनीकट के अतिरिक्त जल भराव से स्थानीय निवासियों को हो रही समस्या के निस्तारण के लिए क्या किया जा रहा है। अदालत ने मामले में मुख्य सचिव और जल संसाधन विभाग के अधिकारियों सहित अन्य को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है। सीजे एमएम श्रीवास्तव और जस्टिस आशुतोष कुमार की खंडपीठ ने यह आदेश भरत सिंह व अन्य की ओर से दायर जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

जनहित याचिका में अधिवक्ता सुरेन्द्र कुमावत लांबा ने अदालत को बताया कि मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन योजना के तहत सुमेल नदी पर एनीकट का निर्माण किया गया है। एनीकट के सर्वेक्षण और निर्माण के दौरान प्रशासन की ओर से यह बताया गया था कि इसकी भराव क्षमता 46.20 एमसीटी रहेगी और इसका जल भराव क्षेत्र बामन बड़ौदा की संपर्क रोड के पुल के स्तर तक रहेगा। जबकि नौगांवा इसके अपस्ट्रीम में रहेगा। वहीं एनीकट की दोषपूर्ण डिजाइन और गलत निर्माण के कारण इसका जलमग्न एरिया 46.20 से करीब चार गुणा बढकर 184 एमसीटी हो गया। इसके अलावा अपस्ट्रीम एरिया से पांच किलोमीटर आगे तक जलभराव हो रहा है। जिसके कारण नौगांवा, बिदरखा, बामन बड़ौदा सहित आसपास के गांवों के निवासियों के खेतों और मकानों में जलभराव की स्थिति पैदा हो गई है। याचिका में बताया गया कि याचिकाकर्ताओं की भूमि को डूब क्षेत्र के उद्देश्य से न तो अधिग्रहित किया गया और ना ही उन्हें कोई मुआवजा मिला। वहीं हर मौसम में जलभराव होने के कारण खेतों में फसल की पैदावार खराब हो रही है, लेकिन उसका भी मुआवजा नहीं दिया गया। यहां हो रहे जलभराव के कारण उन्हें जीवन यापन में कठिनाई का सामना करना पड रहा है। इस संबंध में स्थानीय अधिकारियों को कई बार शिकायत दी गई, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। जिस पर सुनवाई करते हुए खंडपीठ ने संबंधित अधिकारियों से जवाब तलब किया है।

चयन प्रक्रिया में शामिल करने के आदेश

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने महात्मा गांधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को इन्हीं स्कूलों के रिक्त पदों की चयन प्रक्रिया में शामिल करने के आदेश देते हुए उनके ऑफ लाइन आवेदन स्वीकार करने को कहा है। वहीं अदालत ने मामले में शिक्षा सचिव और माध्यमिक शिक्षा निदेशक से जवाब तलब किया है। जस्टिस महेन्द्र गोयल की एकलपीठ ने यह आदेश गजानंद यादव व अन्य की याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता रामप्रताप सैनी ने अदालत को बताया कि राज्य सरकार ने राजकीय अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में शिक्षकों के खाली पदों पर भर्ती के लिए गत 11 जुलाई को भर्ती विज्ञापन निकाला। जिसमें यह शर्त रखी गई कि विशेष चयन प्रक्रिया से चयन के बाद अंग्रेजी माध्यम में पदस्थापित शिक्षक इसमें आवेदन करने के पात्र नहीं होंगे। याचिका में कहा गया कि याचिकाकर्ता शिक्षक अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में ही दूसरे जिलों में कार्यरत हैं।

वकील को केस की फाइल नहीं देने वाले जिम्मेदारों के खिलाफ क्या कार्रवाई की : हाईकोर्ट

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने वन विभाग के कर्मचारी के चयनित वेतनमान नहीं देने से जुड़े मामले में सरकारी वकील के पास फाइल नहीं होने पर नाराजगी जताई है। इसके साथ ही अदालत ने अतिरिक्त मुख्य वन सचिव को निर्देश दिए हैं कि वह 29 जुलाई को व्यक्तिगत या वीसी के जरिए अदालत में उपस्थित होकर इस संबंध में अपना शपथ पत्र पेश करें। अदालत ने एसीएस को कहा है कि शपथ पत्र में बताए प्रकरण की सरकारी वकील को फाइल नहीं देने के क्या कारण हैं। इसके अलावा इसके लिए दोषी अधिकारी के खिलाफ क्या कार्यवाही अमल में लाई जा रही है। जस्टिस महेंद्र कुमार गोयल की एकलपीठ ने यह आदेश राम प्रसाद मीणा की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान सरकारी वकील ने कहा कि उन्हें प्रकरण की फाइल उपलब्ध नहीं कराई गई है। ऐसे में वे प्रकरण में बहस नहीं कर सकते हैं। ऐसे में उन्हें चार सप्ताह का समय दिया जाए। वहीं याचिकाकर्ता के वकील विजय पाठक ने कहा कि गत सुनवाई को भी इसी आधार पर तारीख ली गई थी। इस पर अदालत ने नाराजगी जताते हुए कहा कि कोर्ट में रोजाना वन विभाग के ऐसे कई केस आ रहे हैं, जिनमें विभाग के वकील को प्रकरण की फाइल ही मुहैया नहीं कराई गई है। जिसके कारण मुकदमों की सुनवाई प्रभावित हो रही है। इस मामले में भी पूर्व में सरकारी वकील को फाइल नहीं होने के आधार पर बहस के लिए समय दिया गया था, लेकिन अभी तक उनके पास फाइल नहीं पहुंची है। ऐसे में विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव व्यक्तिश: या वीसी के जरिए हाजिर होकर इस संबंध में शपथ पत्र पेश कर सरकारी वकील को फाइल नहीं पहुंचाने के कारण और इसके दोषी अधिकारी के खिलाफ की गई कार्रवाई की जानकारी अदालत में पेश करें।

'आवंटी बिल्डर से जमा राशि वापस लेने का अधिकारी'

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान रियल एस्टेट अपीलीय अधिकरण ने एक महत्वपूर्ण फैसले में कहा है कि कंप्लीशन सर्टिफिकेट व ऑक्यूपेंसी सर्टिफिकेट बिना प्रोजेक्ट व बिल्डिंग के निर्माण को पूरा नहीं माना जा सकता। यदि बिल्डर ने ये सर्टिफिकेट प्राप्त नहीं किए हैं तो ऐसी स्थिति में आवंटी बिल्डर से अपनी जमा राशि वापस लेने का अधिकारी होगा। इसके साथ ही अधिकरण ने बिल्डर को निर्देश दिया कि वह अपीलार्थी को उसकी जमा राशि 45 दिन में ब्याज सहित लौटाए। अधिकरण ने यह आदेश आवंटी कैलाश गुप्ता की अपील को मंजूर करते हुए और सिक्विन रियल एस्टेट की अपील को दस हजार रुपए हर्जाने सहित खारिज करते हुए दिया। अधिवक्ता मोहित खंडेलवाल ने बताया कि अपीलार्थी बिल्डर ने वर्ष 2006 में स्टार सिटी के नाम से एक आवासीय प्रोजेक्ट शुरू किया।

नीट की तैयारी कर रही छात्रा 5वीं मंजिल से कूदी

जयपुर (कासं)। परिवार के साथ अपना 18वां जन्मदिन मनाने के दूसरे दिन युवती ने बिल्डिंग की 5वीं मंजिल से छलांग लगाकर सुसाइड कर लिया। वह नीट परीक्षा की तैयारी कर रही थी। मरने से पहले एक सुसाइड नोट भी लिखा, जिसमें परिजनों से माफी मांगी है। विद्याधर नगर थाना पुलिस ने सुसाइड नोट जब्त किया है। शव को कांवटिया हॉस्पिटल की मॉर्च्यूरी में रखवाया गया है।

पुलिस ने बताया कि छात्रा यति अग्रवाल (18) द्वारिका अपार्टमेंट विद्याधर नगर की रहने वाली थी। उसने 12वीं क्लास पास कर नीट परीक्षा की कोचिंग कर रही थी। गुरुवार को उसका जन्मदिन था। उसने अपना 18वां जन्मदिन अपने परिवार और दोस्तों के साथ मिलकर मनाया था। शुक्रवार को उसने बिल्डिंग की 5वीं मंजिल से छलांग लगाकर सुसाइड कर लिया। छात्रा को लहूलुहान हालत में जमीन पर गिरा देखकर लोगों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए कांवटिया हॉस्पिटल लेकर गई। पुलिस को मृतका के पास से नोटबुक में एक सुसाइड नोट मिला, जिसमें परिवार की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरने के लिए माफी मांगी है।

जयपुर फुट के विशेषज्ञ अब कोलकाता के तकनीशियनों को प्रशिक्षित करेंगे

जयपुर, (का.सं.)। भारत सरकार के संस्थान नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर लोकोमोटर डिसएबिलिटी और विश्व प्रसिद्ध जयपुर फुट की निर्माता संस्था भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (बी.एम.वी.एस.एस.) के बीच एक एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर हुए। इस एम.ओ.यू. के अन्तर्गत दोनों संस्थाएँ आपसी सहयोग से कोलकत्ता स्थित इस राष्ट्रीय शारीरिक गतिशील द्विव्यांगजन संस्थान के तकनीशियनों के बी.एम.वी.एस.एस. के विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षित करेगा।

नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर लोकोमोटर डिसएबिलिटी (एन.आई.एल.डी.) के निदेशक डॉ. ललित नारायण और बी.एम.वी.एस.एस. के सचिव (तकनिकी) डॉ. दीपेन्द्र मेहता ने एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर बी.एम.वी.एस.एस. के संस्थापक और मुख्य संरक्षक डी.आर. मेहता, सचिव भूपेन्द्र राज मेहता, बी.एम.वी.एस.एस. के तकनिकी परामर्शदाता डॉ. एम.के. माथुर और एन.आई.एल.डी. के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रसन्ना लेंका भी उपस्थित थे। एन.आई.एल.डी. केन्द्रीय सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण मंत्रालय के द्विव्यांगों के पुर्नवास विभाग के अन्तर्गत कोलकत्ता के बोनहुगली स्थित संस्था है।

सचिव डॉ. दीपेन्द्र मेहता ने बताया कि एन.आई.एल.डी. और बी.एम.वी.एस.एस. के बीच आपसी सहयोग के अन्तर्गत दोनों संस्थाऐं द्विव्यांगों के पुर्नवास के लिए प्रशिक्षण और अन्वेषण कार्य करेगा और एन.आई.एल.डी. के प्रशिक्षुओं को जयपुर फुट की निर्माण संस्था प्रशिक्षित करेगी। बी.एम.वी.एस.एस. एन.आई.एल.डी. के अपने एक केन्द्र की स्थापना कर प्रशिक्षण कार्य चलाएगी और इसके अन्तर्गत जयपुर फुट और अन्य उपकरणों के निर्माण की विधि का प्रशिक्षण देगा। इस अनुबन्ध के अन्तर्गत एन.आई.एल.डी. में द्विव्यांगजनों को जयपुर फुट और अन्य उपकरण उपलब्ध किए जाऐंगे, जिससे पश्चिम बंगाल और पूर्व भारत के बड़ी संख्या में द्विव्यांगजन लाभान्वित होंगे।

बी.एम.वी.एस.एस. के संस्थापक और मुख्य संरक्षक डी.आर. मेहता ने कहा कि एन.आई.एल.डी. से अनुबन्ध से जयपुर फुट की गुणवत्ता और प्रौद्योगिकी का विस्तार होगा, जिसका लाभ देश भर के द्विव्यांगों को विशेष कर पूर्व और पूर्वोत्तर के राज्यों के द्विव्यांगों को मिलेगा। एन.आई.एल.डी. के निदेशक डॉ. ललित नारायण ने कहा कि इस एम.ओ.यू. के अन्तर्गत अब द्विव्यांगों को एन.आई.एल.डी. के माध्यम से जयपुर फुट लगाकर उनका पुर्नवास किया जा सकेगा।

भारत सरकार के संस्थान नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर लोकोमोटर डिसएबिलिटी और विश्व प्रसिद्ध जयपुर फुट की निर्माता संस्था भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति के बीच एक एम.ओ.यू. पर नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर लोकोमोटर डिसएबिलिटी के निदेशक डॉ. ललित नारायण और बी.एम.वी.एस.एस. के सचिव डॉ. दीपेन्द्र मेहता ने हस्ताक्षर किए। इस दौरान बी.एम.वी.एस.एस. के संस्थापक और मुख्य संरक्षक डी.आर. मेहता मौजूद रहे।

नाटक '12 एंग्री मैन' का मंचन

- रविवार सुबह 11 बजे संवाद प्रवाह, शाम 7 बजे भोपा भैरूनाथ का मंचन होगा

जयपुर । जवाहर कला केंद्र की सहभागिता में जारी नटराज महोत्सव के 5वें दिन शनिवार को नाटक '12 एंग्री मैन' का मंचन हुआ। नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा से स्नातक कर चुके विशाल विजय के निर्देशन में फोर्थ वॉल ड्रामेटिक सोसाइटी के कलाकारों ने बेहतरीन अभिनय से रंगकर्मियों ने सुधि दर्शकों को एकटक नाटक देखने पर मजबूर कर दिया। आलम यह रहा कि रंगायन सभागार दर्शकों से पूरी तरह आबाद नजर आया। 12 एंग्री मैन अमरीकी लेखक रेजीनॉल्ड रोज कृत कोर्टरूम ड्रामा है। रंजीत कपूर ने इसका रूपांतरण किया है। नाटक में उस समय का जीवंत दृश्य देखने को मिलता है जब अदालती फैसले ज्यूरी मेंबर किया करते थे। अदालत में एक हत्या का मामला आता है। कार्यवाही के दौरान मेंबर्स के असली चेहरे, निजी विचार, पूर्वाग्रह उभरने लगते हैं। अंत में बड़ी मशक्कत के बाद वे निष्पक्ष फैसला सुनाते हैं। यह न्याय की जीत को दर्शाता है। बेहतर निर्देशन और बेजोड़ अभिनय दर्शकों के दिलों पर छाप छोड़ गया। 12 एंग्री मैन शीर्षक वाले नाटक में बीच-बीच में व्यंग्यात्मक संवाद के जरिए रंगकर्मियों ने दर्शकों को हँसने का मौका भी दिया। संचित जैन, अंकित शर्मा, योगेन्द्र सिंह, चित्रार्थ मिश्रा, कमलेश बैरवा, राहुल पंवार, रितिक शर्मा, संदीप मिश्रा, गौरव कुमार, आकिब मिर्ज़ा, दीपक गुर्जर, दीक्षांक शर्मा, विनय सैनी ने मंच पर किरदार निभाए। देशराज गुर्जन ने लाइट, विमल मीणा ने संगीत संयोजन संभाला व वरिष्ठ रंगकर्मी रुचि भार्गव नरुला ने जज के किरदार के लिए अपनी आवाज दी। गौरतलब है कि 28 जुलाई को नटराज महोत्सव के आखिरी दिन सुबह 11 बजे कृष्णायन में "संवाद प्रवाह" का आयोजन होगा, जिसमें भारत रत्न भार्गव, प्रेरणा श्रीमाली (जयपुर घराने की कथक नृत्यांगना), गोपालाचार्य जी एवं विशाल विजय विचार रखेंगे और बातचीत करेंगी रुचि भार्गव नरूला।

'एलिवेटेड रोड के नाम पर उदयपुर की जनता को गुमराह कर रही भाजपा'

पूर्व पार्षद ने पत्रकारों के समक्ष रखी बात, कहा डीपीआर बनाकर लाखों खर्च किए जा रहे

उदयपुर, (कासं)। 'एलिवेटेड रोड के नाम पर भाजपा शहर को गुमराह कर रही है। वहीं वर्ष 2008 से शहर में एलिवेटेड रोड़ के नाम पर डीपीआर बनाकर लाखों रूपए खर्च किए जा रहे है बल्कि एलिवेटेड रोड अब तक नहीं बन पाई है और अब निगम चुनाव आने वाले है तो शहर की जनता को भ्रमित किया जा रहा है।'

यह बात पूर्व पार्षद अजय पोरवाल ने पत्रकारों से मुखातिब होते हुए कही। उन्होंने कहा कि नगर निगम एलिवेटेड रोड के पक्ष में केस जीती तो भाजपा के ही निगम में उप महापौर पारस सिंघवी इस एलिवेटेड रोड का विरोध करने लगे। इसका कारण यह है कि नगर निगम ने पिछले सालों में स्मार्ट सिटी, हॉस्पीटल के बाहर वे ब्रिज, टाउनहॉल में हाथी वाला पार्क की पार्किंग, सूरजपोल चौराहे पर मैकेनाईज्ड पार्किंग और सूरजपोल का चप्पल चौराहा, हिरणमंगरी की स्मार्ट रोड, गोवर्धन विलास स्मार्ट रोड, उदयपुर के वरिष्ठ इंजीनियर महापौर जीएस टांक के निर्देशन में बने प्रतापनगर, सेवाश्रम और कुम्हारों का भट्टे का ओवर ब्रिज , सभी फेल हो गए है। उदयपुर की जनता के करोडों रूपयों को विकास के नाम पर डुबाया गया है।

उदयपुर के नगर निगम में पूर्व पार्षद व कांग्रेसी नेता अजय पोरवाल पत्रकारों को संबोधित करते हुए।

- उदयपुर की जनता के करोड़ों रूपये विकास के नाम पर डुबाए गए : अजय पोरवाल

एलिवेटेड रोड को लेकर पूर्व यूआईटी चैयरमेन शिवकिशोर सनाढ य ने वर्ष 2008 में डीपीआर बनाई, जिसमें लाखों रूपए खर्च किए गए। पहले इस रोड को सिटी स्टेशन से कोर्ट चौराहे तक बनाने की योजना थी पर डीपीआर में इस एलिवेटेड रोड को उदियापोल से शुरू कर कोर्ट चौराहे तक बनाना प्रस्तावित कर दिया। लाखों रूपए खर्च कर बनाई यह डीपीआर रिपोर्ट कागजों में खो गई और इस पर किसी ने भी चर्चा नहीं की। दूसरी बार वर्ष 2014 में इसी भाजपा ने एलिवेटेड रोड को लेकर एल एन टी कम्पनी से डीपीआर बनवाई, जिसमें भी लाखों रूपए खर्च किए। इस डीपीआर के विरोध में भाजपा समर्थित व्यापारी उच्च न्यायालय की शरण में चले गए और स्टे लेकर आ गए। इसके बाद यह मुद्दा भी ठंडे बस्ते में चला गया। तीसरी बार भाजपा के वरिष्ठ नेता गुलाबचंद कटारिया केन्द्र सरकार के परिवहन मंत्री नीतिन गडकरी से 400 करोड रूपए की स्वीकृति ले आए और एनएचएआई ने लाखों रूपए खर्च कर एलिवेटेड रोड की डीपीआर बनाई पर इसमें भी तकनीकी कारण बताते हुए रिजेक्ट कर दिया गया।

अब चौथी बार निगम के भाजपा बोर्ड ने लाखों रूपए खर्च कर अहमदाबाद की किसी ऐजेन्सी से एक फिर से डीपीआर बनवाकर उच्च न्यायालय में पेश किया और एलिवेटेड रोड के बनाने के पक्ष में फैसला लेकर आए।

पोरवाल ने कहा कि मेरा मानना है कि ये सब मुद्दे नगर निगम के आने वाले चुनाव में जनता भाजपा का विरोध नहीं करे इसके लिए अब फिर से एलिवेटेड रोड का मुद्दा लाया गया है। इसमें भाजपा का ही एक पक्ष इसका विरोध कर रहा है और दूसरा पक्ष समर्थन कर रहा है और जनता को बेवकूफ बनाया जा रहा है। उप महापौर भी स्मार्ट सिटी की कम्पनी का सदस्य होता है पहले विरोध क्यों नहीं किया, विधायक बनने का सपना था, पार्टी ने दूसरे को मौका दे दिया तो विरोध शुरू कर दिया । जनता की इतनी ही चिंता थी तो उस समय ही विरोध करते जब बन रहा था ,बनने के बाद विरोध करना पारस सिंघवी की स्वार्थसिद्धि की मानसिकता को साबित करता है।

मृत शिक्षक का नहीं हुआ पोस्टमार्टम

हत्या के आरोपी का शव ले गए परिजन

उदयपुर, (कासं)। सलूम्बर जिले के जावर माइंस थाना इलाके में स्थित अद्वास गांव शिक्षक शंकर मेघवाल की हुई नृशंस हत्या को ले कर पीडित परिवार को सरकार की मदद मिलने और अन्य मांगों को लेकर समाजजन उदयपुर के एमबी अस्पताल की मोर्चरी में अभी भी जुटे हुए हैं और कहा कि जब तक मांगे पूरी नहीं होगी नहीं हटेंगे और आंदोलन को बडा रूप देंगे। एक बैठक प्रशासन के साथ भी हुई लेकिन सदस्यों का कहना है कि बात नहीं बनी है।

- मृत शिक्षक के परिजनों को मुआवजा दिलाने डटा समाज

उनकी शंकर के परिवारजनों को मुआवजा और नौकरी को लेकर अभी बात नहीं बनी है जिसके कारण शंकर का शव अभी भी मोर्चरी में रखा है । इधर हत्यारे फतेह सिंह का पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सुपुर्द कर दिया गया है। शाम करीब पौने पांच बजे फतह सिंह के रिश्तेदार यहां आए और शव का पोस्टमार्टम कराने की पूरी प्रक्रियां कराने के बाद उसका शव गांव ले गए। शिक्षक के परिवार को न्याय दिलाने के लिए समाज के लोग आंदोलनरत हैं और कहा है कि जब तक उसको मुआवजा और मृतक के परिवार के सदस्य को सरकारी नौकरी नहीं मिलती तब तक उसका पोस्टमॉर्टम नहीं होने देंगे। इस बीच संभागीय आयुक्त राजेंद्र भट्ट, आईजी अजयपाल लांबा और सलूंबर कलेक्टर जसमीत सिंह संधु के साथ मांगों को लेकर एक प्रतिनिधिमंडल के साथ बैठक भी हुई लेकिन सहमति एमबी अस्पताल में समाजजन बडी संख्या में जुटे हुए है और उन्होंने मोर्चरी के बाहर की तरफ ही डेरा डाल रखा है। सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस बल तैनात कर रखा है। इस मामले में बीती शाम को इस तरह की समझाइश का कोई परिणाम नहीं निकला।

प्रदर्शन करने वालों ने केंद्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, सलूंबर विधायक के खिलाफ भी नारेबाजी की। इधर गुजरात के विधायक जिग्नेश मेवाणी ने एक्स पर पोस्ट शेयर करते हुए लिखा कि सलूंबर जिले में असामाजिक तत्वों द्वारा एक दलित शिक्षक पर तलवार से हमला करने के मामले में इस परिवार को कई दिनों से धमकियां दी जा रही थी और मामला पुलिस के संज्ञान में भी था लेकिन परिवार को कोई सुरक्षा नहीं दी गई। उन्होंने कहा कि यह दिल दहला देने वाली घटना पुलिस और प्रशासन की विफलता को उजागर करता है। राज्य के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से मांग है कि वह कुछ ऐसे कदम उठाए जिससे पूरे प्रदेश के दलितों को उनकी सरकार पर सुरक्षा देने के लिए भरोसा कायम हो। हत्या को लेकर परिजन और समाज में रोष व्याप्त है और वे एमबी अस्पताल की मोर्चरी के बाहर परिजनों को एक करोड रूपये मुआवजा देने, अनुकम्पा नौकरी के अलावा मृतक के दो परिजनों को सरकारी नौकरी देने तथा पीडित परिवार को हथियार का लाइसेंस देने की मांग कर रहे है।धरना स्थल पर भीम सेना के गीगराज-जयपुर, रवि मेघवाल-नागौर,धर्मेन्द्र खटीक-नीम का थाना डटे हुए है।मृतक शंकरलाल के पत्नी के अलावा 3 बच्चे हैं। इसमें 2 साल का बेट 5 और 9 साल की बेटियां हैं।

गुरुवार रात को टीचर शंकरलाल मेघवाल (40) की उसके दोस्त फतह सिंह (30) ने गला काटकर हत्या कर दी थी। इस दौरान बेटे को बचाने आए पिता डालचंद मेघवाल (60) पर भी हमलावर ने ताबडतोड वार किए। हमले में पिता का हाथ कट गया। उनका उदयपुर के एमबी हॉस्पिटल में इलाज चल रहा है। शाम को जंगल में आरोपी फतह सिंह ने भी जंगल में खुद के गले में तलवार लगा दी। खून से लथपथ फतह सिंह के नजदीक पहुंची पुलिस ने उसे लालच देकर पास बुलाया और अस्पताल लेकर आए लेकिन डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। टीचर की हत्या के पीछे जादू टोना को कारण बताया जा रहा है।

बासना गांव के बांध में डूबने से भाई-बहन की मौत

भानपुर कलां, (निसं)। बासना गांव स्थित पानी से भरे बांध में डूबने से शनिवार को भाई-बहन की मौत हो गई। बांध में दोनों के डूबने की सूचना के बाद आसपास के ग्रामीण एकत्रित हो गए व डूबे भाई-बहन को पानी से बाहर निकाला।

जानकारी के अनुसार टोडामीणा के मानतवाल की ढाणी निवासी 13 साल की मुस्कान व 10 वर्षीय विशाल पुत्र शंकरलाल मीना बासना गांव की सीमा पर बने बांध के पास चरागाह भूमि पर चर रही भैंस को लेने स्कूल के बाद गए थे। इस दौरान भैंस बांध में भरे करीब 6 फीट गहरे पानी में चली गई। भैंसों को निकलने के लिए पानी में उतरे विशाल व 13 वर्षीय मुस्कान की मौत हो गई। इस दौरान मौके पर मौजूद अन्य बच्चों ने भाग कर पास ही ढाणी वासियों को बताया।

- ग्रामीणों ने डूबे भाई-बहन को पानी से बाहर निकाला

सूचना के बाद मौके पर पहुंचे परिजनों व ग्रामीणों ने बांध में उतर कर पानी में डूबे दोनों बच्चों की तलाश की। काफी मशक्कत के बाद ग्रामीणों ने दोनों को बांध से बाहर निकाला व निम्स अस्पताल ले गए। निम्स में चिकित्सकों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया। घटना के करीब 2 घण्टे बाद जमवारामगढ थानाधिकारी हरदयाल मीणा ने भी घटनास्थल का मौका मुआवना किया। ग्रामीणों ने बताया कि दोनों मृतक पांच भाई-बहनों में सबसे छोटे है। मृतक बच्चों के माता-पिता मेहनत मजदूरी कर अपना गुजरा करते हैं।

युवक ने की आत्महत्या

टोंक, (निसं)। पुरानी टोंक थाना क्षेत्र के दाईयों की गली मियाओ का चौक निवासी एक 39 वर्षीय युवक ने कमरे में लगे बिजली के तारों से लटककर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली।

थानाधिकारी उदसवीर सिंह ने बताया कि 27 जुलाई को प्रात: 9.30 बजे सूचना मिली, जहां मौके पर थाना पुलिस पहुंची और शव को अपने कब्जे में लिया। मृतक का नाम रईस मोहम्मद पुत्र मसरूदीन उम्र 39 वर्ष बताया गया है। मौके पर एफएसएल टीम को बुलाया गया, बाद पोस्टमार्टम के शव परिजनों को सुपुर्द कर दिया। सूत्रों के अनुसार मृतक डिप्रेशन का शिकार बताया गया है।

राजस्थान वि.वि. में पीजी फर्स्ट सेमेस्टर की पहली वरीयता सूची जारी

जयपुर। राजस्थान विश्वविद्यालय में पीजी फर्स्ट सेमेस्टर सत्र 2024-25 में प्रवेश के लिए शनिवार को पहली वरीयता सूची जारी की गई। वरीयता सूची में शामिल पात्र छात्रों को 29 से 31 जुलाई के बीच दस्तावेजों का भौतिक सत्यापन कराना होगा। साथ ही 1 अगस्त तक छात्र अपनी फीस ऑनलाइन जमा करा सकेंगे।

यूनिवर्सिटी ऑफ राजस्थान पोस्ट ग्रेजुएट एडमिशन टेस्ट 2024 में सफल रहे छात्रों की पहली वरीयता सूची जारी की गई। एडमिशन कन्वीनर प्रो. राम अवतार शर्मा ने बताया कि वरीयता सूची में शामिल होने वाले छात्रों को अपनी एबीसी आईडी बनानी होगी। इसके बाद 29 से 31 जुलाई के बीच छात्र अपने दस्तावेजों का सत्यापन करा सकेंगे। वहीं, छात्र विश्वविद्यालय की ऑफिशल वेबसाइट पर 29 जुलाई से 1 अगस्त तक ऑनलाइन फीस जमा करा सकेंगे।

उन्होंने बताया कि छात्र को अगर प्रवेश संबंधित किसी भी तरह की सहायता की आवश्यकता हो तो वो संबंधित विभाग में भी संपर्क कर सकते हैं। उन्होंने ये भी स्पष्ट किया कि जो छात्र तय समय पर फीस जमा नहीं कराएंगे, उनका एडमिशन स्वत: निरस्त माना जाएगा। विश्वविद्यालय की ओर से ऑफिशल वेबसाइट पर विषय वार एडमिशन लिस्ट अपलोड कर दी गई है। छात्र विषयावार लिस्ट पर क्लिक कर अपना एडमिशन सुनिश्चित कर सकते हैं।

उधर, विश्वविद्यालय के पीजी थर्ड सेमेस्टर लॉ बी लिब, डिप्लोमा, सर्टिफिकेट कोर्स और यूजी थर्ड ईयर के रीएडमिशन का शुल्क जमा कराने के लिए तीन दिन का समय और दिया गया है। अब ये शुल्क 29 से 31 जुलाई तक जमा करवाया जा सकेगा। एडमिशन कन्वीनर ने स्पष्ट किया कि छात्रों के लिए रीएडमिशन शुल्क जमा कराने का ये अंतिम मौका होगा। 31 जुलाई के बाद विद्यार्थियों को कोई अवसर नहीं दिया जाएगा। इसके साथ ही मेरिट आधारित बी लिब डिप्लोमा, सर्टिफिकेट कोर्सेज की पहली सूची 2 अगस्त को जारी की जाएगी। इसके बाद छात्रों को 3 और 5 अगस्त को दस्तावेज सत्यापन कराने होंगे। वहीं, छात्र 6 अगस्त तक अपनी फीस ऑनलाइन जमा करा सकेंगे।

कृषि के बाद टैक्सटाइल उद्योग सबसे बड़ा रोजगार देने वाला क्षेत्र : गिरीराज सिंह

'जोधपुर बड़ा सेंटर है होने से यहां हैण्डीक्राफ्ट, हैण्डलूम और टैक्सटाइल के बहुत आसार'

जोधपुर, (कासं)। केंद्रीय वस्त्र मंत्री गिरीराज सिंह ने कहा कि कृषि के बाद रोजगार देने वाला क्षेत्र है तो वह टैक्सटाइल हैण्डलूम और हैण्डक्राफ्ट है। जोधपुर एक बहुत बड़ा सेंटर है। हैण्डीक्राफ्ट, हैण्डलूम और टैक्सटाइल के बहुत आसार यहां है। भारत सरकार हर क्षेत्र में नए- नए विकास कर रही है। राजस्थान में भी जितना हो सकेगा उसमें कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

वे आज जोधपुर प्रवास पर कई कार्यक्रमों में भाग लेने आए और यहां एयरपोर्ट पर मीडिया से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने पत्रकारों के सवाल पर कहा कि देश में बढ़ती आबादी से आज भारत पूरे विश्व का पहली आबादी वाला देश बन गया है। यह मेरे लिए अवसर भी है और चुनौती भी है। आने वाले समय में भारत बीस प्रतिशत आबादी वाला देश होगा, मगर हमारे पास मात्र 4 प्रतिशत जमीन है। दो ढाई प्रतिशत पानी है। इसलिए इस पर अब कोई कानून बनना चाहिए। उन्होंने कहा- निश्चित रूप से इस पर सडक़ से लेकर संसद तक बहस होनी चाहिए।

एयरपोर्ट पर भाजपा नेताओं ने किया अभिनंदन :- केंद्रीय वस्त्र मंत्री गिरीराज सिंह के जोधपुर पहुंचने पर यहां एयरपोर्ट पर भाजपा के कई नेताओं ने उनकी अगवानी करने साथ दुपट्टा पहिना कर स्वागत और अभिनंदन किया। एयरपोर्ट पर जै श्रीराम के नारे भी गूंज उठे। भाजपा के राज्यसभा सांसद राजेंद्र गहलोत, स्थानीय विधायकों सहित भाजपा के कई कार्यकर्ता एयरपोर्ट पर मौजूद रहे।

दुकान का ताला तोड़कर चोरी की

मकराना, (निसं)। शहर में टंकी चौराहे पर स्थित एक कपड़े और शूज की दुकान के शटर का ताला तोड़कर चोरी की वारदात को अंजाम दिया गया। चोर दुकान से करीब 40 हजार रुपए के जूते और कपड़े चोरी कर ले गए हैं।

सूचना मिलने पुलिस भी मौके पर पहुंची और मौका मुआयना किया।शहर के मिनारा मस्जिद निवासी शहजाद अली पुत्र अब्दुल सत्तार तेली ने बताया कि टंकी चौराहे पर उसकी कपड़े और जूतों की दुकान है। रोजाना की तरह गुरुवार रात को वह अपनी दुकान बंद कर घर चला गया। सुबह पड़ोस के दुकानदार ने फोन कर बताया कि उसकी दुकान का शटर टूटा हुआ हैं। जिसके बाद वो तुंरत दुकान पहुंचा तो देखा दुकान का शटर बाहर की ओर मोड़कर तोड़ा हुआ था और दुकान के अंदर कपड़े जूते बिखरे पड़े थे। उसने बताया कि चोर उसकी दुकान से करीब 40 हजार रुपए के टी शर्ट, पाजामे, शर्ट, जीन्स, कपड़े और चप्पल आदि चोरी कर ले गए। जिसके बाद उसने पुलिस को सूचना दी। मकराना थाना के हेड कॉन्स्टेबल सुरेश मीणा ने दुकान का मौका मुआयना किया। दुकानदार शहजाद ने पुलिस को चोरों के खिलाफ परिवाद हैं। थानाधिकारी राजेश कुमार ने बताया की मामले की जांच जारी है।

स्कूटी सवार बदमाशों ने युवक से छीना मोबाइल

अजमेर, (कासं)। अलवर गेट थाना क्षेत्र में शातिर दो स्कूटी सवार बदमाशों ने एक युवक से मोबाइल छीन कर फरार हो गए। जैन ने बदमाशों का पीछा किया लेकिन वह उसके हाथ नहीं आए। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर क्षेत्र में लगे सीसी टीवी कैमरे खंगाल रही है।

बाइक सवार युवक को हार्न बजाना पड़ा महंगा :- गंज पुलिस थाना इलाके में स्थित कमला बावडी चैहारा के पास बीती रात एक युवक को बीच रास्ते में खडे 10-15 लड़कों को हटाने के लिए बाइक का हार्न बजाना महंगा पड़ गया, क्योंकि चैराहे पर खडे पर 10-15 युवकों ने बाइक सवार रितिक जाटव द्वारा हार्न बजाना नागवार गुजरा ओर युवकों ने रितिक के साथ बेहरमी से मारपीट कर दी। सूचना मिलते ही रितिक के जीजा मनमोहन जाटव बीच-बचाव करने पहुंचाए तो युवकों ने उसके साथ भी मारपीट कर दी। देर रात जाटव के समर्थन सैंकडों युवा गंज पुलिस थाने पहुंचे और रिपोर्ट लिखवाने की कार्यवाही करते हुए नजर आए।

युवक ने आत्महत्या की

बूंदी (निसं)। ऑनलाइन गेम खेलने की लत के शिकार एक युवक ने ट्रेन के आगे आकर आत्महत्या कर ली। ट्रेन की टक्कर से युवक का सिर क्षत-विक्षत हो गया था। सदर थाना पुलिस ने शव को जिला अस्पताल की मॉर्च्युरी में रखवाया। पुलिस ने बताया कि युवक परिजनों द्वारा मोबाइल पर अधिक समय तक गेम खेलने से टोकने पर नाराज था। सदर थाने के एएसआई जितेन्द्र ने बताया कि बूंदी-चित्तौड़ रेलवे लाइन की सिलोर पुलिया से एक कि.मी आगे युवक का शव पटरियों के पास पड़े होने सूचना मिली थी। मौके पर पहुंचे तो एक युवक का शव नजर आया। ट्रेन की टक्कर से युवक का सिर क्षत-विक्षत हो गया था। मोबाइल व अन्य साधनों से युवक की पहचान नैनवां रोड संजय कॉलोनी निवासी 21 वर्षीय रोहित मीणा पुत्र रामदेव के रूप में हुई है। प्रथम दृष्टया मामला आत्महत्या का लग रहा हैं। युवक ऑनलाइन गेम खेलने की लत का शिकार था। इसे लेकर परिजनों ने उसे टोका, जिससे नाराज होकर उसने ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या कर ली।

उपकारागृह का औचक निरीक्षण

छबड़ा (निसं)। डीएसपी जेपी अटल के नेतृत्व में शनिवार सुबह उप कारागृह का औचक निरीक्षण किया गया। यहां बंदी बैरिक, रसो घर, शौचालय, स्नानघर आदि की सघन तलाशी ली गई। तलाशी के दौरान यहां किसी भी प्रकार की कोई निषेध सामग्री की बरामदगी नहीं हुई। यहां उप कारापाल सुरेंद्रसिंह सिसोदिया व एएसआई संपतराज भी उपस्थित थे।

नशे की लत पूरी करने के लिए चोरी करने वाला गिरफ्तार

जयपुर। हरमाड़ा थाना पुलिस ने एक शातिर चोर को गिरफ्तार किया है। आरोपित के पास से लाखों रुपए का माल बरामद किया गया है। प्रारंभिक पूछताछ में सामने आया कि आरोपित नशे का आदी है। नशा नहीं मिलने पर चोरी करता है। उसे खुद नहीं पता अब तक कितनी वारदात को अंजाम दे चुका है। चोरी का सामान बाजार में बेचकर स्मैक खरीदकर नशा करता है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर पश्चिम अमित कुमार बुडानिया ने बताया कि दौलतपुरा रोड पर विजय नगर विस्तार में रहने वाली कुसुम कंवर 18 जुलाई को हरमाडा थाने पहुंची। बताया कि 15 जुलाई को अज्ञात बदमाश ने मकान का ताला तोड कर नकदी व गहने चोरी कर लिए। इस पर हरमाड़ा थाना पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू की। विशेष टीम लगाई गई। टीम ने जयपुर शहर में हो रही चोरी व नकबजनी की वारदातों पर काम करना शुरू किया।

इससे पुलिस को पता चल गया कि वारदात करने वाला बदमाश आदतन अपराधी है। इस पर पुलिस टीम ने चोरी करने वाले बदमाशों की सूची तैयार की। टीम ने पीडिता के घर के आसपास लगे हुए सीसीटीवी कैमरों को चैक किया। संदिग्ध को चिह्नित कर उसके आने जाने के रास्ते को चिह्नित किया गया। इस दौरान रास्ते में लगे सैकड़ों सीसीटीवी कैमरे चौक किए गए। सीसीटीवी में आ रहे हुलिए के अनुसार आरोपित मनीष स्वामी उर्फ मन्नू उर्फ मन्या निवासी शास्त्रीनगर हाल हरमाड़ा जयपुर को गिरफ्तार किया गया। आरोपित से चोरी किया गया कुछ माल भी बरामद हो गया। पुलिस पूछताछ में आरोपित से बताया कि वह नशे का आदि है। नशा करने के लिए वह कुछ भी चोरी कर लेता है। उसके कुछ अन्य साथी हैं। जो लोग चोरी की वारदात करते हैं। पुलिस उनकी भी तलाश में लग गई है।

लूट मामले में एक आरोपी गिरफ्तार

रावतभाटा, (निसं)। पारसोली थाना क्षेत्र के राजगढ़ रेलवे फाटक के पास से गत बुधवार को अज्ञात बदमाशों द्वारा ट्रैक्टर ट्रॉली लूट के मामले का खुलासा करते हुए पारसोली थाना पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार कर लूटी गई ट्रैक्टर व ट्रॉली बरामद की है। पुलिस अधीक्षक सुधीर जोशी ने जानकारी देते हुए बताया कि बुधवार को व्यास जी का बडला पुलिस थाना मंगरोप जिला भीलवाडा निवासी शिवलाल पुत्र देवीलाल मीणा अपने गांव से ट्रैक्टर ट्रॉली में अनाज लेकर पालका गांव में खाली करने गया जो खाली करके पुन: लौट रहा था। रास्ते में राजगढ रेलवे फाटक पर शराब की दुकान के पास तीन अज्ञात लोगो ने ट्रेक्टर को रुकवा लिया और उसके साथ जोर जबरदस्ती कर ट्रेक्टर-ट्रोली को लूटकर ले गए। जिस पर थाना पारसोली पर लूट का प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया गया।

घटना में लुटे गए ट्रैक्टर व ट्रॉली की तलाश व आरोपियों की गिरफ्तारी हेतु अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रावतभाटा भगवत सिंह हींगड व पुलिस उपाधीक्षक बेगूं अंजली सिंह के निर्देशन में थानाधिकारी पारसोली प्रेम सिंह उपनिरीक्षक के नेतृत्व में थाने के सहायक पुलिस उपनिरीक्षक भवानी सिह, कानि. बाबूलाल, गिर्राज व गिरधारी लाल द्वारा मामले में आरोपी बल्दरखा पुलिस थाना बस्सी निवासी 28 वर्षीय रतनलाल पुत्र उदयलाल मीणा को गिरफतार किया जाकर बापर्दा रखा गया है। आरोपी के कब्जे से ट्रेक्टर मय ट्रोली व घटना में प्रयुक्त मोटरसाकिल को बरामद किया।

रावतभाटा में बारिश का दौर जारी

रावतभाटा, (निसं)। रावतभाटा उपखंड क्षेत्र के नगर एवं ग्रामीण अंचल में इन्द्रदेव मेहबान हुए। क्षेत्र में तेज बारिश का दौर शुक्रवार रात्रि से शनिवार रात्रि तक जारी रहा। बारिश होने के बाद ठंडी हवाएं चलने से तापमान में काफी कमी आ गई। इससे मौसम सुहाना हो गया। विशेषज्ञों के अनुसार पश्चिमी विक्षोभ से मौसम में आए बदलाव का फायदा क दिन तक मिलेगा। जिले का औसत तापमान न्यूनतम 26 और अधिकतम 30 डिग्री सेल्सियस रहा। शहर में क क्षेत्रों में अच्छी बारिश भी हुई। इससे जलभराव की स्थिति भी देखने को मिली। 2 दिन से चल रही तेज बारिश से नगर की सडक पुलिया, छोटे-बडे नाले एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित तालाब, बावडीयां, छोटे नाले, पुलिया पर पानी उफान पर बहने लगा। बारिश के दौर से किसानों ने राहत की सांस ली।

रावतभाटा तहसील क्षेत्र एंव ग्रामीण अंचल क्षेत्र में शनिवार को सुबह से काली घटाएं छायी रही। प्रात: से सायं तक रूक-रूक कर मुसलाधार एंव तेज हवा के साथ आए पानी से लोगों ने वर्शा का मजा लेते हुए लोगों ने पिकनिक, तीर्थस्थलों आदि जगहों पर आन्नद उठाया। अपरान्ह से उमड रही काली घटाओं एंव तेज हवा के साथ सबसे तेज वर्शा आने लगीं। जो रात्रि तक जारी रही। षानिवार अपरान्ह एंव सांय तेज हवा के साथ आई बारिष से दिन में रात जैसा एहसास होने लगा। तहसील क्षेत्र मे तेज हवा के साथ बरसात आने से कई छोटे-बडे नाले उफान पर बह निकले एंव सडकों में पडे गडड्ो की वजह से दुपहिया वाहनों वालो को चलाने में दिक्कतें महसूस होने लगी एंव बडी गाडियां धीमि गति से चल रही थी। आकाश में काली घटा छाई एंव घुमडकर क्षेत्र में तेज मुसलाधार वर्शा हुई। वर्शा से आकाष में बिजलीयों की गडगडहाहट के बिच तेज वर्शा से आम जनजीवन रूक सा गया। इस वर्शा के साथ ही सडको पर पानी बह निकला एवं लोगों ने ठडक का अहसास हुआ।

हैपेटाइटिस नियंत्रण कार्यक्रम का प्रदेश में हो रहा सुचारू संचालन

सात माह में 3 लाख 51 हजार की स्क्रीनिंग

जयपुर। प्रदेश में राष्ट्रीय वायरल हैपेटाइटिस नियंत्रण कार्यक्रम का सुचारू संचालन कर हैपेटाइटिस-बी एवं सी के उन्मूलन की दिशा में प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित की जा रही है। वर्ष 2019 में प्रारम्भ किए गए इस कार्यक्रम के तहत वर्ष 2030 तक हैपेटाइटिस सी के उन्मूलन का लक्ष्य रखा गया है।

प्रदेश में दिसम्बर 2023 से अब तक 3 लाख 51 हजार से अधिक लोगों की हैपेटाइटिस बी एवं सी के लिए स्क्रीनिंग की गई। इनमें से 2 लाख 61 हजार से अधिक लोगों की हैपेटाइटिस-बी के लिए स्क्रीनिंग की गई। जिनमें 8 हजार 400 मरीज पॉजिटिव पाए गए। इनमें वायरल लोड के लिए पाए गए 2 हजार 892 रोगियों में 1005 रोगियों का उपचार प्रारम्भ किया गया है। इसी प्रकार इस अवधि में हैपेटाइटिस सी के लिए स्क्रीन किए गए 90 हजार से अधिक रोगियों में 2622 से अधिक रोगी हैपेटाइटिस सी के पॉजिटिव पाए गए। इनमें से वायरल लोड वाले 1542 रोगियों में से 896 उपचार योग्य रोगियों का इलाज प्रारम्भ किया गया है। इनमें से 477 रोगियों का उपचार पूर्ण हो चुका है।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव शुभ्रा सिंह ने बताया कि राष्ट्रीय वायरल हैपेटाइटिस नियंत्रण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य हैपेटाइटिस बी, सी, ए एवं ई से होने वाली मृत्यु एवं जोखिम में कमी लाना है। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम के प्रबंधन के लिए राज्य स्तर पर मैनेजमेंट यूनिट संचालित की जा रही है। इस रोग के जांच एवं उपचार के लिए जयपुर, जोधपुर, उदयपुर एवं अजमेर में मेडिकल कॉलेज से सम्बद्ध अस्पतालों में मॉडल ट्रीटमेंट सेन्टर तथा माइक्रोबायोलॉजी विभाग में स्टेट लैब का संचालन किया जा रहा है।

प्रदेश में 35 जिला अस्पतालों में ट्रीटीमेंट सेन्टर एवं लैब संचालित की जा रही है। वर्ष 2024-25 में नए जिलों में ट्रीटमेंट सेन्टर एवं लैब प्रारम्भ करने की कार्यवाही शुरू कर दी गई है। उन्होंने बताया कि प्रदेश के सभी जेलों, नारी निकेतन, किशोर गृह आदि में भी हैपेटाइटिस संबंधी रोगों की स्क्रीनिंग कर रोगियों का उपचार संबंधित ट्रीटमेंट सेन्टर पर किया जाता है। इसी प्रकार उच्च जोखिम वाले समूहों में भी स्क्रीनिंग एवं उपचार कार्यवाही सुनिश्चित की जा रही है।

मुझे गौतम पर यकीन है कि वे भारतीय टीम को भी ज्यादा ऊंचाइयों पर ले जाएंगे। मैने उन्हें मैदान पर अपना सर्वश्रेष्ठ देते हुए देखा है। गौतम में दृढ़ता और हार न मानने की आदत देखी है। मैं गौतम को भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूं। - राहुल द्रविड़

पूर्व भारतीय कोच, गौतम गंभीर को शुभकामनाएं दी।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

जो रूट

वेस्टइंडीज के खिलाफ जो रूट ने अपना 63वां अर्धशतक लगाया। साथ ही उन्होंने टेस्ट क्रिकेट में अपने 12000 रन भी पूरे कर लिए। जो रूट अब टेस्ट क्रिकेट में ब्रायन लारा से ज्यादा रन बना लिए और वो टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाजों की लिस्ट में 7वें नंबर पर पहुंच गए। लारा ने टेस्ट क्रिकेट में 131 मैचों में 11953 रन बनाए थे। लेकिन अब रूट उनसे आगे निकल गए हैं। रूट इंग्लैंड की तरफ से टेस्ट क्रिकेट में एलिएस्टर कुक के बाद दूसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं।

क्या आप जानते हैं ?... सबसे कम टेस्ट मैचों में 3000 रन बनाने और 350 विकेट लेने का रिकॉर्ड पाकिस्तान के इमरान खान के नाम है। इमरान ने मात्र 79 टेस्टों में 3262 रन बनाए व 351 विकेट लिये।

मनु भाकर ने रचा इतिहास

ओलिंपिक में 20 साल बाद किसी भारतीय महिला शूटर ने फाइनल में बनाई जगह

मनु भाकर 10 मीटर पिस्टल के फाइनल में पहुंची, रिदम सांगवान नहीं कर पाई क्वालीफाई

मनु भाकर से आज रहेगी पदक की उम्मीद

पेरिस, 27 जुलाई। भारत की स्टार शूटर मनु भाकर महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा के फाइनल में पहुंच गई हैं। उन्होंने क्वालिफिकेशन दौर में 580-27 का स्कोर बनाया और तीसरे स्थान पर रहीं। इसी के साथ मनु भाकर ने इतिहास रच दिया है, ओलिंपिक में 20 साल बाद किसी भारतीय महिला शूटर ने फाइनल में बनाई जगह है। वहीं भारत की ही रिदम सांगवान 15वें स्थान पर रहकर पदक की दौड़ से बाहर हो गईं। वहीं रविवार यानी 28 जुलाई को फाइनल भारतीयसमयानुसार दोपहर 3.50 तीन बजे खेला जाएगा। वहीं मनु भाकर देश केलिए मेडल का खाता खोल सकती हैं। फाइनल में आठ शूटर्स के बीच तीन मेडल गोल्ड, सिल्वर और ब्रॉन्ज के लिए स्पर्धा होगी।

इस दौरान हंगरी की वेरोनिका मेजर 582-22 अंकों के साथ पहले स्थान पर रहीं। जबकि दक्षिण अफ्रीका की जिन ये ओह 582-20 अंक के सात दूसरे स्थान पर रहीं। मनु ने 6 प्रयासों में 97,97, 98, 96, 96 और 96 का स्कोर बनाया। इन तीनों के अलावा वियतनाम की विन्ह थू त्रिन, दक्षिण कोरिया की येजी किम, चीन चुए ली, तुर्किए की इलायदा सेवाल तरहान और चीन रैंक्सिन जियांग ने फाइनल्स के लिए क्वालिफाई किया है।

सांस रोक देने वाले मैच में भारत ने न्यूज़ीलैंड को हराया

पेरिस ओलिंपिक में भारतीय हॉकी टीम का जीत से आगाज

भारतीय टीम अपने दूसरे मुकाबले में सोमवार को अर्जेंटीना से भिड़ेगा

पेरिस, 27 जुलाई। भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने पेरिस ओलंपिक में जीत से शुरुआत की है। भारत ने पूल बी के अपने पहले मैच में न्यूजीलैंड को 3-2 से पराजित किया। 0-1 से पिछड़ने के बावजूद भारत ने शानदार तरीके से जीत दर्ज की। हरमनप्रीत सिंह की अगुआई वाली भारतीय हॉकी टीम में 5 खिलाड़ी ऐसे हैं जो इस बार ओलंपिक में डेब्यू कर रहे हैं। कप्तान तीसरी बार ओलंपिक खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। इस जीत से भारत को 3 अंक मिले। भारतीय टीम अपने दूसरे मुकाबले में सोमवार को अर्जेंटीना से भिड़ेगी।

कीवी टीम की ओर से साइमन चाइल्ड ने पेनाल्टी कॉर्नर पर गोल कर टीम को बराबरी दिला दी। भारतीय टीम बढ़ त की फिराक में है। टीम इंडिया के लिए इस मैच में जीत बेहद जरूरी है। भारत की ओर से हरमनप्रीत सिंह ने तीसरा गोल दागकर भारत को शानदार जीत दिलाई।

भारत की ओर से विवेक सागर ने तीसरे क्वार्टर में गोल कर भारत को 2-1 से आगे कर दिया। न्यूजीलैंड ने रेफरेल लिया लेकिन इसका फायदा उसे नहीं हुआ।। भारतीय टीम ने शुरुआती दो क्वार्टर में ज्यादा गलत पास दिए। हालांकि बाद में टीम इंडिया ने वापसी की। शुरुआती दो क्वार्टर का खेल खत्म होने के बाद स्कोर 1-1 की बराबरी पर है। भारत की ओर से मनदीप सिंह ने पेनाल्टी के सहारे गोल दागा। भारत की ओर से बराबरी का गोल मनदीप सिंह ने दागा। मनदीप ने 24वें मिनट में पेनाल्टी कॉर्नर पर गोल कर भारत को 1-1 की बराबरी दिलाई। भारत ने पहले ही पेनाल्टी कॉर्नर को गोल में तब्दील कर न्यूजीलैंड के खिलाफ धमाकेदार पलटवार किया।

पूल बी के मैच में न्यूजीलैंड ने 8वें मिनट में भारत के खिलाफ शुरुआती गोल दागा। कीवी खिलाड़ी सैम लैन ने पेनाल्टी कॉर्नर के सहारे गोल किया। पहले क्वार्टर के 10वें मिनट में गुरजंट सिंह को ठीन कार्ड दिखाया गया। भारतीय टीम इस मैच को जीतकर ओलंपिक में धमाकेदार शुरुआत करने की ओर देख रही है।

जो रूट व स्टोक्स के नाबाद अर्द्धशतक

नई दिल्ली, 27 जुलाई। वेस्टइंडीज और इंग्लैंड के बीच तीन मैचों की सीरीज का आखिरी टेस्ट मैच खेला जा रहा है। इस टेस्ट मैच की पहली पारी में वेस्टइंडीज ने 282 रन बनाए। इसके बाद पहली पारी में इंग्लैंड की टीम ने 6 विकेट के नुकसान पर 231 रन बना लिए हैं। वहीं खबर लिखे जाने तक जो रूट ने 122 गेंदों में 87 रन बनाकर नाबाद रहे। वहीं बेन स्टोक्स ने 54 रन दोनों ने ही अपने-अपने अर्धशतक पूरे कर लिए थे। जो रूट ने अपनी इस पारी के दौरान टेस्ट क्रिकेट में 12 हजार रन पूरे कर लिए है। हालांकि, इस मैच में स्टोक्स फिर पहली पारी में 54 रन बनाकर आउट हो गए।

मेंस सिंगल स्कल्स हीट इवेंट में बलराज पंवार चौथे नंबर पर रहे, अब भी मेडल की आस

पेरिस, 27 जुलाई। फिलहाल भारत की तरफ से शनिवार को सबसे पहले रोइंग इवेंट में बलराज पंवार एक्शन में दिखे। वह पुरुषों के सिंगल स्कल की हीट्स राउंड में हिस्सा लिया। हालांकि, बलराज पंवार ने रोइंग स्पर्धा में चौथा स्थान प्राप्त किया और वे रेपचेज में पहुंच गए हैं। पुरुष एकल स्कल्स क्वालिफिकेशन के लिए रेपचेज जाएंगे। बलराज ने 7:07.11 मिनट का समय निकाला, जो मिस्त्र के लिए अब्देलखलेक एल्बाना के 7:05.06 मिनट से कम है, जिन्होंने पहले हीट से क्वार्टर फाइनल के लिए अंतिम स्थान प्राप्त किया है। वहींपुरुष एकल स्कल्स क्वालिफिकेशन के लिए रेपचेज इवेंट भारतीय समयानुसार रविवार 28 जुलाई को दोपहर 1 बजे होगा।

पुरुषों की स्ट्रीक स्केटबोर्डिंग बारिश के कारण कल तक स्थगित

पेरिस, 27 जुलाई। पेरिस ओलंपिक खेलों में शनिवार को होने वाली पुरुषों की स्ट्रीट स्केटबोर्डिंग प्रतियोगिता को भारी बारिश के कारण सोमवार तक के लिए स्थगित कर दिया गया। वर्ल्ड स्केट के स्केटबोर्डिंग निदेशक लुका बेसिलिको ने यहां जारी एक बयान में कहा, दोपहर तक प्रतिकूल पूर्वानुमानों के कारण पुरुषों की स्ट्रीट स्केटबोर्डिंग प्रतियोगिता को सोमवार को पुनर्निर्धारित की गई है जो मूल रूप से नियोजित समय के अनुसार ही शुरू होगी। पुनर्निर्धारित प्रारंभिक प्रतियोगिता चरण दोपहर के समय शुरू होगा जिसमें चार हीट से शीर्ष आठ प्रतियोगी फाइनल में पहुंचेंगे। प्रतियोगिता स्थल के कर्मचारियों ने कहा कि यह निर्णय एथलीटों की सुरक्षा चिंताओं से लिया गया है क्योंकि लगातार बारिश के कारण मैदान फिसलन हो गई है। सफाई के प्रयासों के बावजूद स्ट्रीट-स्टाइल कोर्स में अभी भी पानी जमा है।

बेहद कम अंतर से सरबजोत पेरिस ओलिंपिक में मेडल राउंड से चूके

पेरिस, 27 जुलाई। भारतीय निशानेबाज सरबजोत सिंह शनिवार को पेरिस ओलिंपिक में पुरुषों की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में पदक राउंड के लिए क्वालीफाई करने के बेहद करीब पहुंच गए, लेकिन बेहद कम अंतर के कारण अंतत: उन्हें पोडियम पर जगह नहीं मिल पाई। सिंह ने असाधारण कौशल और फोकस का प्रदर्शन करते हुए अपनी एक श्रृंखला में 100 के पूर्ण स्कोर के साथ उल्लेखनीय प्रदर्शन किया। इस प्रभावशाली उपलब्धि के बावजूद, उनकी अंतिम श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण गलती महंगी साबित हुई। वह मेडल टेली में नौवें स्थान पर रहे और फाइनल में मात्र एक अंक से चूक गये। अंतिम परिणाम में सिंह जर्मनी के रॉबिन वाल्टर के साथ बराबरी पर रहे, दोनों ने 577 अंक बनाए।

पेरिस ओलिंपिक का धांसू आगाज, सीन नदी के किनारे ओपनिंग सेरेमनी

सिंधु-शरत कमल ने की भारतीय दल की अगुवाई

पेरिस, 27 जुलाई। फ्रांस की राजधानी पेरिस में 33वें ओलिंपिक का आयोजन हो गया है। इस दौरान ओपनिंग सेरेमनी का आयोजन किया गया, हालांकि ये आयोजन किसी स्टेडियम में नहीं बल्कि सीन नदी पर किया गया। वहीं इस सेरेमनी में सबसे पहले ग्रीस देश की परेड निकली। बता दें कि, ग्रीस को ओलिंपिक खेलों का जन्मदाता भी कहा जाता है।

26 जुलाई से 11 अगस्त तक चलने वाले इस ओलिंपिक में भारत की तरफ से ध्वजवाहक पीवी सिंधु और टेबल टेनिस के दिग्गज शरत कमल रहे। ये दोनों खिलाड़ी अपने-अपने खेल में ओलिंपिक की ओपनिंग सेरेमनी में भारत के ध्वजवाहक बनने वाले पहले खिलाड़ी हैं।

भारत के 117 खिलाड़ी इन खेलों में भाग ले रहे हैं, इनमें 47 महिलाएं हैं। कई खिलाड़ियों की शनिवार को प्रतिस्पर्धा है इसलिए तैयारियों का प्राथमिकता देते हुए उन्होंने ओपनिंग सेरेमनी में हिस्सा लिया। नावें शह की ऐतिहासिक इमारतों कैथेड्रल आफ नोत्रे डेम, लावरे म्युजियम और कुछ आयोजन स्थलों से होकर गुजरी। शहर में उद्घाटन समारोह के लिए दो लाख से ज्यादा मुफ्त टिकट दिए गए थे जबकि एक लाख से ज्यादा टिकट बिके थे। सेरेमनी के दौरान फ्लोटिंग परेड के बीच कलाकारों का धांसू परफॉर्मेंस भी देखने को मिला। लगभग 80 कलाकारों ने प्रसिद्ध फ्रांसीसी कैबरे नृत्य कैन-कैन का प्रदर्शन भी किया। इससे पहले लेडी गागा ने अपने परफॉर्मेंस से समां बांधा। लेडी गागा ने फ्रांस की दिवंगत अभिनेत्री जिजी जीनमैरे का फेमस सॉन्ग मॉन ट्रुक एन प्लम्स प्रस्तु किया। जीनमैरे की साल 2020 में 96 वर्ष की उम्र में निधन हो गया था।

ओलिंपिक आयोजकों ने मांगी माफी

पेरिस, 27 जुलाई। ओलिंपिक खेलों के आयोजकों ने कहा कि वे पेरिस में उद्घाटन समारोह के दौरान दक्षिण कोरिया के खिलाड़ियों को उत्तर कोरिया के रूप में पेश करने के लिए 'तहे दिल से माफी' मांगते हैं। उद्घाटन समारोह के दौरान शुक्रवार शाम जैसे ही दक्षिण कोरिया के दल ने सीन नदी में तैरती एक नाव पर अपने देश का झंडा लहराया, तो उन्हें फ्रेंच और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में 'डेमोक्रेटिक पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ कोरिया (उत्तर कोरिया)' घोषित किया गया। दक्षिण कोरिया को कोरिया गणराज्य के तौर पर जाना जाता है।

पेरिस ओलिंपिक में भारत की खराब शुरुआत, शूटिंग में निराशा हाथ लगी

पेरिस, 27 जुलाई। पेरिस ओलिंपिक 2024 में प्रतिस्पर्धाएं शुरू हो चुकी हैं। पहले दिन 27 जुलाई भारतीय शूटर्स से मेडल की उम्मीद थी लेकिन भारत को निराशा मिली। 10 मीटर एयर राइफल मिक्स्ड टीम इवेंट में भारत की दोनों जोड़ियां फाइनल के लिए भी क्वालिफाई नहीं कर सकीं। इलावेनिल वलारिवन और संदीप सिंह 12वें स्थान पर रहे। जबकि रमिता जिंदल और अर्जुन बाबुता ने छठा स्थान हासिल किया। रमिता-अर्जुन ने कुल मिलाकर 628.7 अंक हासिल किए जबकि इलावेनिल-संदीप 626.3 अंक जुटा पाए। बता दें कि, टॉप 4 टीमों ने ही 10 मीटर एयर राइफल मिक्स्ड टीम इवेंट में मेडल राउंड के लिए क्वालिफाई किया। इस इवेंट का फाइनल 27 जुलाई को ही होना है, ध्यान रहे कि भारत के लिए आज सिर्फ यही एक मेडल इवेंट था। भारत की ओर से ओलिंपिक गेम्स के पहले दिन मेडल जीतने का रिकॉर्ड वेटलिफ्टर मीराबाई चानू के नाम हैं, चानू ने टोक्यो ओलिंपिक 2020 के पहले दिन सिल्वर मेडल जीता था।

बैडमिंटन में लक्ष्य सेन का जीत से आगाज

टेबल टेनिस में हरमीत देसाई ने पुरुष एकल मुख्य ड्रॉ में बनाई जगह

पेरिस, 27 जुलाई। भारतीय बैडमिंटन स्टार लक्ष्य सेन ने पेरिस ओलिंपिक की शुरुआत शानदार जीत के साथ की है। पहले ग्रुप मुकाबले में ग्वाटेमाला के केविन कॉर्डन के खिलाफ खेलते हुए धमाकेदार प्रदर्शन किया। पहला गेम महज 14 मिनट में जीतने के बाद दूसरे गेम में पीछे होने के बाद वापसी करते हुए मुकाबला अपने नाम किया। लक्ष्य ने ग्वाटेमाला के खिलाड़ी को खिलाफ मैच 21-8 और 22-20 से जीता।

लक्ष्य से ने पेरिस ओलिंपिक की शुरुआत अपने ही अंदाज में जीत के साथ की है। भारत के स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी से देश को पदक की उम्मीद है। पहले ग्रुप मुकाबले में इस खिलाड़ी का सामना ग्वाटेमाला के केविन कॉर्डन के खिलाफ था। आक्रामक शुरुआत करते हुए लक्ष्य ने पहले गेम में महज 14 मिनट में खत्म कर दिया। 21-8 के बड़े अंतर से गेम को एकतरफा बनाते हुए बढ़त हासिल की। दूसरी तरफ पेरिस 2024 ओलिंपिक के पुरुष टेबल टेनिस प्रिलिमिनरी राउंड में भारत के हरमीत देसाई ने जॉर्डन के जैद अबो यमन को हराया। साउथ पेरिस एरिना में खेलते हुए देसाई ने 30 मिनट तक चले मुकाबले में 4-0 (11-7, 11-9, 11-5, 11-5) से जीत हासिल की। 31 वर्षीय खिलाड़ी का रविवार को राउंड ऑफ 64 में फ्रांस के फेलिक्स लेब्रून से मुकाबला होगा।

टेबल टेनिस में हरमीत की विजयी शुरुआत

पेरिस, 27 जुलाई। भारतीय टेबल टेनिस खिलाड़ी हरमीत देसाई ने शनिवार को पेरिस ओलंपिक में जॉर्डन के जायद एबो यमन पर 4-0 से जीत दर्ज करते हुये अपने विजयी अभियान की शानदार शुरुआत की। आज यहां खेले ये मुकाबले में हरमीत शानदार लय में रहे और उन्होंने शुरुआत से ही अपने प्रतिद्वंद्वी एबो यमन पर दबाव बनाये रखा।

भारतीय खिलाड़ी आज इन खेलों में लेंगे हिस्सा

पेरिस, 27 जुलाई। पेरिस ओलिंपिक 2024 का आगाज हो चुका है। पहले दिन भारतीय टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रही। 10 मीटर एयर राइफल मिश्रित स्पर्धा में टीम कुछ खास नहीं कर पाई। हालांकि, 10 मिटर एयर पिस्टल इवेंट के फाइनल में अपनी जगह बनाई। इलावेनिल वलारिवन और संदीप सिंह की जोड़ी 12वें स्थान पर और रमिता जिंदलकी-अर्जुन बबुता की जोड़ी छठे स्थान पर रही। वहीं अब रविवार 28 जुलाई को भारत निशानेबाजी, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, बॉक्सिंग और तीरंदाजी में चुनौती पेश करेगा।

मनु भाकर से भारत को पदक की उम्मीद है। उन्होंने 10 मीटर पिस्टल इवेंट के क्वालिफिकेशन राउंड के खत्म होने के बाद तीसरे स्थान पर रहते हुए फाइनल में जगह बनाई और उनके इस प्रदर्शन से इस बात की संभावना जग गई है कि वह इस प्रतियोगिता में भारत को मेडल दिला सकती है। हालांकि, उनकी साथी रिदम सांगवान क्वॉलीफाई करने में असफल रहीं।

28 जुलाई को भारत का शेड्यूल-

महिलाओं के 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा का क्वालीफिकेशन राउंड मुकाबला होगा। वहीं इसी दिन पुरुषों के क्वालिफिकेशन राउंड में 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा होगी।

बैडमिंटन-पीवी सिंधु महिला एकल ग्रुप में तो पुरुष एकल में एचएस प्रणय एक्शन में होंगे।

टेबल टेनिस-श्रीजा अकुला, शरत कमल और मनिका बत्रा एक्शन में दिखेंगे।

बॉक्सिंग-निखत जरीन खेलते हुए नजर आऐंगी। वहीं तीरंदाजी में भारतीय महिला टीम क्वालिफिकेशन मुकाबला खेलेगी।

चीन ने पेरिस ओलिंपिक खेलों के पहले दो स्वर्ण पदक जीते

पेरिस, 27 जुलाई। चीन ने पेरिस ओलिंपिक 2024 खेलों में प्रतिस्पर्धा के पहले दिन दो स्वर्ण पदक जीते। इन पदकों में खेलों का पहला स्वर्ण पदक भी शामिल है। विश्व चैंपियन निशानेबाज चीन के हुआंग युटिंग और शेंग लिहाओ ने शनिवार को 10 मीटर एयर राइफल मिश्रित टीम स्पर्धा में जीत हासिल कर अपने देश को पेरिस ओलिंपिक का पहला स्वर्ण पदक दिलाया। चीन ने 10 मीटर एयर राइफल मिश्रित टीम के फाइनल में दक्षिण कोरियाई निशानेबाजों पर 16-12 से करीबी जीत दर्ज की। कजाकिस्तान ने पहले इस स्पर्धा में कांस्य पदक जीता था। चीनी जोड़ी ने चेटेउरौक्स शूटिंग सेंटर में अपने असाधारण कौशल और धैर्य का प्रदर्शन करते हुए दक्षिण कोरिया के क्यूम जी-ह्योन और पार्क हा-जून को हराया। इससे पहले दिन में कजाकिस्तान की एलेक्जेंड्रा ले और इस्लाम सतपायेव की जोड़ी ने कांस्य पदक जीता। उन्होंने प्रभावशाली प्रदर्शन करते हुए जर्मनी की अन्ना जानसेन और मैक्सिमिलियन उलब्रिच को 17-5 के स्कोर से हराया।

महिला एशिया कप 2024 : श्रीलंका को हराकर 8वां खिताब जीतने उतरेगा भारत

नई दिल्ली, 27 जुलाई। मौजूदा चैंपियन भारतीय टीम महिला एशिया कप टी20 क्रिकेट टूर्नामेंट में अपना दबदबा बरकरार रखकर श्रीलंका के खिलाफ रविवार को यहां होने वाले फाइनल में जीत दर्ज करके रिकॉर्ड आठवां खिताब जीतने की कोशिश करेगी। भारत ने टूर्नामेंट में अभी तक शानदार प्रदर्शन किया है। उसने लीग चरण में पाकिस्तान को सात विकेट से, संयुक्त अरब अमीरात को 78 रन से और नेपाल को 82 रन से हराया था।

सेमीफाइनल में उसने बांग्लादेश को 10 विकेट से पराजित किया था। भारत के शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों और गेंदबाजों ने अभी तक बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है। उन्होंने अभी तक अपनी प्रतिद्वंद्वी टीमों को कोई मौका नहीं दिया है। सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना और शेफाली वर्मा ने अभी तक टीम को अच्छी शुरुआत दिलाई है लेकिन टीम प्रबंधन गेंदबाजों विशेषकर दीप्ति शर्मा और रेणुका सिंह के प्रदर्शन से काफी खुश होगा। दीप्ति ने टूर्नामेंट में अभी तक सर्वाधिक 9 विकेट लिए हैं जबकि रेणुका सात विकेट लेकर तालिका में तीसरे नंबर पर है। इन दोनों का इकोनॉमी रेट भी शानदार है जिसका मतलब है कि उन्होंने विरोधी टीम के बल्लेबाजों को खुलकर खेलने का मौका नहीं दिया है। इन दोनों की कसी गेंदबाजी का फायदा भारत के अन्य गेंदबाजों को भी मिला है। बाएं हाथ की स्पिनर राधा यादव इसका उदाहरण है जिन्होंने अभी तक 5.5 के इकोनॉमी रेट से 6 विकेट लिए हैं। भारतीय टीम के लिए कोई विभाग चिंता का विषय नहीं है लेकिन कप्तान हरमनप्रीत कौर और और जेमिमा रोड्रिग्स को बल्लेबाजी के कम मौके मिलने से वह थोड़ा चिंतित हो सकता है।

कवीन क्विंटल और मोहसीन पराम्बन ने 19वें और 22वें स्थान पर

इंडोनेशिया, 27 जुलाई। आईडेमिट्सु होण्डा रेसिंग इंडिया टीम के राइडरों ने इंडोनेशिया में 2024 एफआईएम एशिया रोड रेसिंग चैम्पियनशिप के चौथे राउण्ड की पहली रेस में मजबूत प्रदर्शन किया। भारतीय जोड़ी कवीन क्विंटल और मोहसीन पराम्बन ने आज की रेस दृढ़ संकल्प और स्थिरता के साथ पूरी की। ग्रिड पर 27वें पॉज़िशन से शुरूआत करने के बाद चेन्नई के 19वर्षीय राइडर कवीन क्विंटल ने पहले लैप के बाद तेज़ी से बढ़त ली और पूरी रेस के दौरान स्थिरता बनाए रखी। अपने अनुभव का उपयोग करते हुए और योजनाओं को प्रभाविता से अंजाम देते हुए, उन्होंने इंटरनेशनल राइडरों को कड़ी टक्कर दी और चोट के बावजूद अपने परफोर्मेन्स में निरंतर सुधार लाते रहे। उन्होंनें 18:37.226 के कुल टाईम के साथ 19वें पॉज़िशन पर रेस पूरी की।

एफसीजी ने हरेरा के साथ किया स्थायी अनुबंध

पणजी, 27 जुलाई। इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) की टीम एफसी गोवा ने बोर्जा हरेरा के साथ स्थाई अनुबंध की घोषणा की है। कैनरी द्वीप के लास पालमास में जन्मे 31 वर्षीय हरेरा ने लास पालमास की अकादमी में फुटबॉल में पदार्पण किया था, उन्होंने तब से स्पेन, इज़रायल और भारत के विभिन्न क्लबों में अपनी प्रतिभा को निखारा है और खुद को मिडफील्ड में एक प्रतिभाशाली खिलाड़ी के तौर पर स्थापित किया है। हरेरा के करियर में ला लीगा में यूडी लास पालमास, सेगुंडा डिवीज़न में रियल वलाडोलिड और आईएसएल में हैदराबाद एफसी के साथ काम शामिल हैं जहाँ उन्होंने 2022-23 लीग शील्ड की दौड़ में अपनी टीम को उपविजेता बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने डूरंड कप 2023, इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) 2023-24 सीज़न के पहले हाफ़ और कलिंगा सुपर कप 2024 में ईस्ट बंगाल एफसी का प्रतिनिधित्व किया जहाँ वे चैंपियन बनकर उभरे। हरेरा ने कहा मैं एफसी गोवा के साथ अपने सहयोग को आगे बढ़ाने में सक्षम होने के लिए बहुत खुश हूं। पिछले सीज़न के अंत के बाद से यह मेरी एकमात्र इच्छा थी।

भारत ने 43 रन से जीता पहला टी-20, अच्छी शुरुआत के बाद फिर हारा श्रीलंका

श्रीलंका के खिलाफ टी-20 सीरीज में 1-0 की बढ़त, कप्तान सूर्या की फिफ्टी, रियान पराग को 3 विकेट

पल्लेकल, 27 जुलाई। वर्ल्ड चैंपियन भारत ने श्रीलंका के खिलाफ टी-20 सीरीज का पहला मुकाबला 43 रनों से जीत लिया है। इस जीत से टीम इंडिया ने 5 मैचों की सीरीज में 1-0 की बढ़त हासिल की है। दूसरा मुकाबला 28 जुलाई को खेला जाएगा। पल्लेकेले में श्रीलंका ने टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी। भारतीय टीम ने 20 ओवर में 7 विकेट पर 213 रन बनाए। टीम इंडिया ने टी-20 में 35वीं बार 200 से ज्यादा का स्कोर बनाया। रन चेज में श्रीलंकाई टीम 19.2 ओवर में 170 रन पर ऑलआउट हो गई। रियान पराग ने 3 विकेट झटके। अर्शदीप सिंह और अक्षर पटेल को 2-2 विकेट मिले।

श्रीलंका से पथुम निसांका ने 79 रन बनाए। उनकी पारी के दम पर श्रीलंकाई टीम ने 14 ओवर में एक विकेट पर 140 रन बना लिए थे और आसानी से जीतती दिख रही थी। उन्हें अक्षर पटेल ने आउट करके भारत की मैच में वापसी कराई। कुसल मेंडिस (45 रन) रन बनाकर आउट हुए। श्रीलंका ने टॉस जीतकर भारत को बल्लेबाजी का न्यौता दिया। बल्लेबाजी करने उतरी यशस्वी जयसवाल और शुभमन गिल की सलामी जोड़ी ने बेहतरीन शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिये 74 रन जोड़े। छठें ओवर में दिलशान मदुशंका ने शुभमन गिल को आउट कर भारत का पहला झटका दिया। गिल ने 16 गेंदों में 34 रनों की पारी खेली। अगले ही ओवर में हसरंगा ने जयसवाल को के मेंडिस के हाथों स्टंप आउट कराकर भारत को दूसरा झटका दिया।

जयसवाल ने 21 गेंदों में 40 रन बनाये। बल्लेबाजी करने आये कप्तान सूर्यकुमार यादव ने ऋषभ पंत के तेजी से रन बटोरे। दोनों बल्लेबाजों के बीच 76 रनों की साझेदारी हुई। 14वें ओवर में पतिराणा ने सूर्यकुमार यादव को पगबाधा आउट कर पवेलियन भेज दिया। सूर्यकुमार यादव ने 26 गेंदों में आठ चौके और दो छक्के लगाते हुये (58) रनों की पारी खेली। ऋषभ पंत ने 33 गेंदों में छह चौके और एक छक्का लगाते हुये (49) रन बनाये। हार्दिक पंड्या (9), रियान पराग (7) और रिंकू सिंह (1) रन बनाकर आउट हुये।

अक्षर पटेल पांच गेंद में 10 रन और अर्शदीप सिंह (1) रन बनाकर नाबाद रहे। भारत ने निर्धारित 20 ओवरों में सात विकेट पर 213 रन का स्कोर खड़ा किया। श्रीलंका की ओर से मतीशा पतिराणा ने चार विकेट लिये। दिलशान मदुशंका, असिथा फर्नांडो और वानिंदु हसरंगा ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

नीति आयोग की गवर्निंग काउन्सिल की नवीं बैठक में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा शामिल हुये। बैठक में मुख्यमंत्री ने प्रदेश को 350 बिलियन डॉलर की इकॉनमी बनाने का खाका पेश किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बुनियादी सुविधाओं के विकास, किसानों का सशक्तिकरण, एम.एस.एम.ई. योजनाओं को विशेष प्रोत्साहन देने की योजनाओं पर विशेष बल दिया जा रहा है। राजस्थान को रिन्युएबल एनर्जी निर्माण क्षेत्र में अग्रणी बनाने की योजनाओं पर भी प्रदेश सरकार विशेष ध्यान दे रही है।

भाजपा मुख्यालय में भाजपाई मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक ली प्र.मंत्री मोदी ने

केन्द्र में तीसरी बार प्र.मंत्री बनने के बाद यह पहला मौका है जब मोदी इस तरह की बैठक कर रहे हैं

- **इस बैठक में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह, भाजपा अध्यक्ष एवं केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री जे.पी. नड्डा भी शामिल हुये। बैठक की शुरुआत में प्र.मंत्री मोदी का तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने के लिए अभिनंदन किया गया।**
- **बैठक के दूसरे दिन सभी भाजपाई मु.मंत्री अपने राज्यों में चल रही विकास योजना की अप-टू-डेट रिपोर्ट पेश करेंगे तथा प्र.मंत्री मोदी सभी मुख्यमंत्रियों के साथ चर्चा भी करने वाले हैं।**

नई दिल्ली, 27 जुलाई। नीति आयोग गवर्निंग काउन्सिल की बैठक में शामिल न होकर विपक्ष ने विकसित भारत के मोदी सरकार के लक्ष्य में असहयोग का बिगुल भले ही फूंक दिया हो, लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी डबल इंजन सरकार के सहारे अपने संकल्प रथ को गति देने के लिए तैयार हैं। शनिवार को भाजपा मुख्यालय में शुरू हुई भाजपा मुख्यमंत्री परिषद की दो दिवसीय बैठक में पार्टी का जोर इसी पर है।

हर राज्य की ओर से विकास का खाका पेश किया जाना है। बैठक को प्रधानमंत्री भी संबोधित करेंगे। केंद्र में लगातार तीसरी बार राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की सरकार बनने के बाद यह पहला अवसर है, जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सभी भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों और उप मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक कर रहे हैं।

शनिवार शाम को प्र.मंत्री के अलावा रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा भी पार्टी मुख्यालय पहुंचे। पार्टी सूत्रों ने बताया कि सबसे पहले प्रधानमंत्री का तीसरी बार लगातार विजय के लिए अभिनंदन किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बैठक के उद्देश्य पर विचार रखा।

बताया गया है कि पार्टी की ओर से सभी भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों और उप मुख्यमंत्रियों से पहले ही कह दिया गया था कि अपने-अपने राज्यों में चल रही केंद्र सरकार की योजनाओं की अद्यतन स्थिति, उनकी सफलता और लागू करने में आ रही बाधा पर रिपोर्ट सहित प्रदेश सरकारों ने सभी वर्गों के कल्याण को लक्षित करते हुए जो भी योजनाएं और नवाचार शुरू किए हों उनका ब्योरा लेकर आएं। सभी मु.मंत्री और डिप्टी मु.मंत्री इस तैयारी के साथ पहुंचे हैं।

गौरतलब है कि इस तरह की बैठक कर एक दूसरे की अच्छी योजनाओं का अनुसरण करने को कहा जाता है। ऐसी ही एक बैठक में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गरीब कल्याण योजना के लिए पूरा ड्राफ्ट तैयार करने का निर्देश दिया था, जिसे अब केंद्र सरकार और भाजपा शासित राज्यों में क्रियान्वित किया गया है। बैठक में अपने नवाचार साझा करने का क्रम शनिवार को शुरू हो गया और रविवार को भी मुख्यमंत्री व उपमुख्यमंत्री अपने राज्यों के कार्यकलापों का प्रस्तुतीकरण करेंगे।

बैठक में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, ब्रजेश पाठक, मध्य प्रदेश से डॉ. मोहन यादव, राजस्थान से भजनलाल शर्मा, उत्तराखंड से पुष्कर सिंह धामी, गुजरात से भूपेंद्र पटेल, छत्तीसगढ से विष्णुदेव साय, हरियाणा से नायब सिंह सैनी, असम से हिमंत बिस्वा सरमा पहुंचे।

ओडिशा से मु.मंत्री मोहन चरण माझी, त्रिपुरा से माणिक साहा, अरुणाचल प्रदेश से पेमा खांडू, गोवा से प्रमोद सावंत, मणिपुर से बिरेन सिंह, बिहार से उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, विजय सिन्हा और महाराष्ट्र से डिप्टी मु.मंत्री देवेंद्र फडणवीस समेत कई केंद्रीय मंत्री शामिल हो रहे हैं। संभावना है कि रविवार को सभी मुख्यमंत्री प्रधानमंत्री के मन की बात को भी एक साथ सुनें।

विकसित भारत 2047 की तर्ज पर तैयार किया जा रहा है विकसित राजस्थान 2047 का रोड मैप

नीति आयोग की गवर्निंग काउन्सिल की नवीं बैठक में शामिल हुए राजस्थान के मुख्यमंत्री

- **मुख्यमंत्री ने बिजली उत्पादन के क्षेत्र में प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उठाए गए कदमों की जानकारी दी और बताया कि राज्य सरकार में डेढ़ लाख करोड़ रूपए के एम.ओ.यू. किए हैं।**
- **मुख्यमंत्री ने ई.आर.सी.पी. और यमुना जल समझौते के लिए प्रधानमंत्री मोदी का आभार जताया और कहा कि इससे राज्य के 21 जिलों की जनता को पानी मिलेगा।**
- **मुख्यमंत्री ने विकसित राजस्थान को पूर्ण विकसित बनाने के लिए चिकित्सा, शिक्षा एवं सड़क निर्माण के क्षेत्र में उठाए गए महत्वपूर्ण कदमों की जानकारी भी दी।**

नई दिल्ली, 27 जुलाई (का.सं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में नीति आयोग की गवर्निंग काउन्सिल की नवीं बैठक में शिरकत करते हुए विकसित राजस्थान 2047 का रोड मैप काउन्सिल के सामने रखा। शर्मा ने बैठक में कहा कि विकसित राजस्थान 2047 की संकल्पना को साकार करने के लिए हमारी सरकार ने वर्ष 2024-25 के बजट में 10 संकल्प लिए हैं जिसमें आगामी 5 वर्षों में प्रदेश की इकोनमी को 350 बिलियन डॉलर बनाने, बुनियादी सुविधाएं, शहरी ग्रामीण एवं क्षेत्रीय तथा मानव संसाधनों का विकास, किसानों का सशक्तिकरण, एम.एस.एम.एस.ई. को प्रोत्साहन देना तथा विरासत संरक्षण के साथ-साथ सबके लिए स्वास्थ्य, सुशासन जैसे महत्वपूर्ण घटकों को शामिल किया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा, हमारी सरकार ने कार्यभार संभालते ही बिजली के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण एवं निर्णायक कदम उठाए हैं। हमनें एन.टी.पी.सी., एन.टी.पी.पी. ग्रीन, कोल इंडिया, एन.एल.सी और आर.ई.सी. जैसे केंद्रीय उपक्रमों के साथ 1 लाख 50 हजार करोड़ के एम.ओ.यू. संपादित किए हैं। जिसके तहत 32 हजार मेगावाट बिजली का उत्पादन किया जा सकेगा, जो कि राजस्थान को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण साबित होगा।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने 2950 मेगावाट की सोलर परियोजना हेतु भूमि आवंटित कर दी है तथा पीएम कुसुम योजना के तहत 7 महीने की अल्पावधि में 4386 मेगावाट क्षमता के प्रोडक्ट्स हेतु लैटर ऑफ इन्टैन्ट जारी किए हैं।

बैठक में मुख्यमंत्री ने ई.आर.सी.पी. परियोजना तथा यमुना जल समझौते के लिए प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त किया और कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा ई.आर.सी.पी. परियोजना को रिवर लिंकिंग प्रोजेक्ट में सम्मिलित कर राज्य के 21 जिलों के 3 करोड़ 25 लाख लोगों का सपना साकार हुआ है तथा हमने जल जीवन मिशन के तहत इस वर्ष 15 हजार करोड़ रुपए व्यय करके 25 लाख घरों में जल पहुंचाने का लक्ष्य रखा है।

मुख्यमंत्री ने राज्य सरकार की प्राथमिकताओं में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं को सम्मिलित करते हुए कहा कि हमारी सरकार ने चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार हेतु बजट में 27 हजार 660 करोड रुपए का प्रावधान किया है जो राज्य बजट का 8.26 प्रतिशत है। राज्य में फरवरी, 2024 से "मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना" प्रारंभ कर दी गई है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने स्कूली शिक्षा को मजबूत बनाने के लिए 134 राजकीय स्वामी विवेकानंद मॉडल स्कूलों में प्राईमरी कक्षाओं का संचालन प्रारंभ कर दिया है तथा 402 पी.एम.श्री. विद्यालयों में वर्चुअल ऑनलाइन लैब स्थापित किया जा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि विकसित राजस्थान 2047 की दिशा में राज्य सरकार द्वारा पिछले 7 माह में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं। जिसमें 2,750 किलोमीटर लंबाई के नौ ग्रीन फील्ड एक्सप्रेस वे का निर्माण, राज्य के हर जिले में मातृ वन बनाने, किसान सम्मान निधि की राशि को 6,000 से बढ़कर 8,000 करने तथा इस समयावधि में 20 हजार युवाओं को नियुक्ति प्रदान करने के साथ-साथ राज्य में "वन स्टेट-वन इलेक्शन" व्यवस्था लागू करने हेतु आवश्यक कार्यवाही शामिल है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि भाखड़ा और पोंग बांध को पूर्ण क्षमता तक भरने के संबंध में शीघ्र निर्णय लिया जाना आवश्यक है ताकि राज्य को उसके हिस्से का पानी आसानी से मिल सके। उन्होंने जल जीवन मिशन की अवधि मार्च 2027 तक बढ़ाई जाने का आग्रह भी किया। उन्होंने राज्य को आवंटित 2 लाख सोलर पंप के लक्ष्य को बढ़ाकर 6 लाख किए जाने का अनुरोध भी केंद्र सरकार से किया।

राजस्थान रिफाइनरी परियोजना के संबंध में भी मुख्यमंत्री ने केंद्र सरकार से अनुरोध किया कि परियोजना की बढ़ी हुई लागत 72 हजार 937 करोड़ रुपए का अनुमोदन शीघ्र किया जाए ताकि रिफायनरी के काम को जल्द पूर्ण किया जा सके। शर्मा ने राजस्थान के विकास में पर्यटन की भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा कि राज्य में धार्मिक पर्यटन की बहुत बड़ी भूमिका है इसलिए धार्मिक स्थलों के विकास हेतु केंद्रीय सहयोग अति आवश्यक है। उन्होंने कहा कि ब्रज चौरासी कोस परिक्रमा मार्ग को जल्द राष्ट्रीय राजमार्ग घोषित कर विकसित किया जाए।

राहुल ने मोची को भेजा गिफ्ट

- **राहुल गांधी शुक्रवार को सुल्तानपुर में जिस मोची की गुमटी पर उससे मिलने गये थे, शनिवार को उन्होंने उस मोची के लिए जूते सिलने वाली मशीन भिजवा दी।**

नई दिल्ली, 27 जुलाई। सुलतानपुर में अपने चिर-परिचित अंदाज में नजर आए राहुल गांधी की चर्चा इस समय शहर से लेकर गांव तक हो रही है। शुक्रवार को राहुल गांधी एक मुकदमे में एम.पी.-एम.एल.ए. कोर्ट में बयान दर्ज कराने आए थे। दिल्ली वापस लौटते समय वे गुप्तारगंज कस्बे के विधायकनगर में अचानक मोची चैतराम की दुकान पर रुक गए। उन्होंने मोची से जूता बनाने की विधि के बारे में पूछा और उनके साथ कोल्ड ड्रिंक पी। थोड़ी देर बातचीत की और आगे बढ़ गए। शनिवार को उन्होंने दिल्ली से अपनी टीम भेजकर मोची को जूता बनाने की मशीन भेज दी। बदले में मोची चैतराम ने भी राहुल गांधी को रिटर्न गिफ्ट दिया। मोची ने उपहार में चमड़े के दो जूते भिजवाए।

शनिवार को मोची चैतराम के पास दिन में करीब 11 बजे फोन आया कि आपको राहुल ने जूता बनाने की मशीन भिजवाई है।

पुतिन से हो चुकी बात अब यूक्रेन के प्रधानमंत्री से बात करने जायेंगे मोदी

यूक्रेन-रूस युद्ध को खत्म करने पर बातचीत के लिए प्र.मंत्री मोदी 23 अगस्त को यूक्रेन की यात्रा पर जाने वाले हैं

- **प्रधानमंत्री मोदी की, लोकसभा चुनावों में लगातार तीसरी जीत के बाद प्रधानमंत्री ज़ैलैंस्की ने उन्हें बधाई दी थी और यूक्रेन की यात्रा करने के लिए आमंत्रित किया था।**

नई दिल्ली, 27 जुलाई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 2022 में रूस द्वारा यूक्रेन पर आक्रमण करने के बाद पहली बार अगले महीने कीव की यात्रा कर सकते हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, प्र.मंत्री मोदी 23 अगस्त को यूक्रेन जा सकते हैं। आपको बता दें कि करीब एक महीना पहले इटली में जी7 शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री मोदी और यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोडिमिर ज़ेलेंस्की की मुलाकात हुई थी।

इटली में दोनों नेताओं को मिलते समय गले मिलते देखा गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा चुनावों में लगातार तीसरी जीत के बाद ज़ेलेंस्की ने उन्हें बधाई दी थी और यूक्रेन की यात्रा करने के लिए आमंत्रित किया था।

प्रधानमंत्री की यूक्रेन की यात्रा से इसलिए भी युद्ध की समाप्ति के आसार बन रहे हैं क्योंकि वह रूस की यात्रा के ठीक बाद यूक्रेन की यात्रा करने वाले हैं। इससे पहले जेलेंस्की ने प्र.मंत्री मोदी से मध्यस्थता करने की अपील की थी।

इससे पहले सितंबर 2022 में उज्बेक शहर समरकंद में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ द्विपक्षीय बैठक में प्र.मंत्री मोदी ने कहा था, "आज का युग युद्ध का नहीं है।" उन्होंने पुतिन से यूक्रेन संघर्ष को समाप्त करने के लिए कहा। उनके संदेश को दुनिया का तमाम नेताओं से प्रशंसा मिली।

इस साल मार्च में राष्ट्रपति ज़ेलेंस्की के साथ एक फोन कॉल में प्र.मंत्री मोदी ने भारत-यूक्रेन साझेदारी को मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा की। उन्होंने इस दौरान संघर्ष के समाधान के लिए बातचीत और कूटनीति का रास्ता अपनाने का आ ान किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत शांतिपूर्ण समाधान का समर्थन करने के लिए अपनी क्षमता के अनुसार हरसंभव प्रयास करता रहेगा।

युद्ध शुरू होने के बाद से ही भारत का मानना रहा है कि इसे केवल बातचीत और कूटनीति के माध्यम से ही सुलझाया जा सकता है। प्रधानमंत्री ने कहा है कि भारत किसी भी शांति प्रयास में योगदान देने के लिए तैयार है।

दिल्ली: कोचिंग...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बेसमेंट में पानी भर गया है और कुछ लोगों के फंसे होने की आशंका है। उन्होंने कहा कि शाम को भारी बारिश के कारण सड़क पर जलभराव हो गया था। डीसीपी हर्षवर्धन ने कहा कि हम मामले की जांच कर रहे हैं कि पूरा बेसमेंट कैसे भर गया।

उन्होंने कहा कि ऐसा लगता है कि बेसमेंट में बहुत तेजी से पानी भर गया और कुछ लोग बेसमेंट के अंदर फंस गए। दिल्ली फायर सर्विस और एनडीआरएफ की बचाव टीमें यहां मौजूद हैं। तलाशी और बचाव अभियान जारी है। अब तक दो स्टूडेंट्स की बॉडी बरामद हुई है।

भाजपा अध्यक्ष जे.पी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के आम चुनावों में मोदी अल्पमत में आ गये थे, उस समय आर.एस.एस. की योजना उनके स्थान पर किसी और नेता बनाने की थी।

लेकिन मोदी ने भाजपा या भाजपा संसदीय दल की मीटिंग ही नहीं बुलाई। इसके स्थान पर, उन्होंने एन.डी.ए. की मीटिंग बुलाई तथा एन.डी.ए. सदस्यों से अपना समर्थन करवा लिया।

यह बात स्वयं में कितनी महत्वपूर्ण है कि भाजपा संसदीय दल का कोई पत्र राष्ट्रपति के पास नहीं गया था तथा राष्ट्रपति ने भी इस प्रकार का कोई पत्र माँगना उचित नहीं समझा।

अब यह लड़ाई पूरी तरह खुले में आ गई है। मोहन भागवत और नरेन्द्र मोदी में इस समय खूली अनबन है।

यह देखना बड़ा दिलचस्प होगा कि कौन टिका रहता है और कौन बाहर कर दिया जाता है।

ऐसी सम्भावना है कि अगर संघर्ष की स्थिति बनती है तो आर.एस.एस. मूल के सांसदों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाएगी।

ऐसी स्थिति में, जब मोदी-शाह योगी आदित्यनाथ से छुटकारा पाने के लिये पूरी-पूरी कोशिश एवं मेहनत कर रहे हैं तब योगी-प्रकरण क्या रूप लेता है, उससे यह स्पष्ट संकेत मिल जायेगा कि भाजपा की राजनीति किस दिशा में जा रही है।

अनंतनाग में...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सिन्हा ने दुखद सड़क दुर्घटना पर दुख व्यक्त किया। सिन्हा ने कहा, आज अनंतनाग के डकसुम में एक दुर्भाग्यपूर्ण सड़क दुर्घटना में बहुमूल्य जिंदगियों के नुकसान के बारे में जानकर मुझे गहरा दुख हुआ है। दुख की इस घड़ी में मेरी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं शोक संतप्त परिवार के सदस्यों के साथ हैं। मैंने जिला प्रशासन को प्रभावित परिवारों को सभी आवश्यक सहायता प्रदान करने के निर्देश जारी किए हैं।

पूर्व मुख्यमंत्रियों फारूक अब्दुल्ला, उमर अब्दुल्ला, गुलाम नबी आजाद और महबूबा मुफ्ती सहित कई राजनीतिक नेताओं ने भी इस दुखद दुर्घटना पर दुख व्यक्त किया है।

जम्मू-कश्मीर में एक माह में नवां आतंकी हमला

शनिवार सुबह ही आतंकियों और सुरक्षाबलों के बीच मुठभेड़ शुरु हो गई, जिसमें सुरक्षाबलों के तीन जवान घायल हो गये तथा एक जवान शहीद हो गया

- **सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ में एक आतंकी को मारने में कामयाबी हासिल की है। संदेह जताया जा रहा है कि यह आतंकी पाकिस्तानी सेना का एस.एस.जी कमाण्डो हो सकता है।**

श्रीनगर, 27 जुलाई। जम्मू-कश्मीर के एल.ओ.सी. के पास वाले जिले कुपवाड़ा में आज सुबह सेना और आतंकियों के बीच हुई मुठभेड़ में एक जवान शहीद हो गया है इसके साथ ही मेजर समेत तीन और जवानों के घायल होने की खबर है। इस मुठभेड़ में एक आतंकी के भी ढेर होने की खबरें सामने आई है। घायल सैनिकों घटनास्थल से निकाल कर इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। कुपवाड़ा में यह पिछले एक महीने में चौथी आतंक की घटना है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक जवान मुच्छल सेक्टर के कुमकाडी इलाके में सर्च ऑपरेशन चला रहे थे तभी आतंकियों ने फायरिंग शुरू कर दी। सेना को कुमकाडी इलाके में आतंकियों के छिपे होने की सूचना मिली थी, जिसके बाद सैनिकों ने यह सर्च ऑपरेशन चलाया था। सेना के द्वारा और सैनिकों को भेजकर इन आतंकियों की तलाश की जा रही है। रक्षा सूत्रों के द्वारा मिली जानकारी के अनुसार इस हमले में पाकिस्तानी बैट(बॉर्डर एक्शन टीम) टीम का हाथ है। हमले में शामिल बैट टीम में पाकिस्तान के एसएसजी कमांडो सहित पाकिस्तान की नियमित सेना के सैनिक होने का संदेह है जो आतंकवादी संगठनों के साथ मिलकर काम करते हैं।

बुधवार को कुपवाडा जिले में ही सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच गोलीबारी हुई थी, जिसमें एक आतंकी मारा गया था। एक सैनिक भी घायल हो गया था। सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर सेना की तरफ से बताया गया था कि आतंकियों की मौजूदगी के संबंध में खबर मिली थी।

नीति आयोग प्रकरण में...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आयोग की गवर्निंग काउंसिल बैठक में भाग ले रही थीं। विपक्षी गठबंधन इंडिया ब्लॉक से एकमात्र ममता बनर्जी ही थीं, जिन्होंने नीति आयोग की बैठक में भाग लिया था जबकि अन्य ने यह आरोप लगाकर बैठक का बहिष्कार किया था कि केन्द्र ने बजट में उनकी मांगों की अनदेखी की है। विपक्ष की राजनीति में खुद को अलग-थलग पाकर ममता बनर्जी बैठक बीच में ही बायकॉट का नाटक किया।

प्रैस इन्फॉमेशन ब्यूरो, जिसने ममता बनर्जी के दावे का फैक्ट चैक किया था, ने बयान जारी किया कि ममता बनर्जी का दावा "भ्रामक" है। ब्यूरो ने कहा "ऑफिशियल क्लॉक" बता रही है कि वे अपने निर्धारित समय से ज्यादा देर बोली। यहां तक कि उनको टाइम खत्म होने की सूचना देने वाली घंटी भी नहीं बजाई गई। ममता बनर्जी का दावा था कि उनका माइक्रोफोन बंद कर दिया गया, जबकि वरिष्ठ नेता होने के नाते उनसे अच्छा व्यवहार किया जाना चाहिए। सत्य तो यह हे कि ममता बनर्जी विपक्ष से अलग-थलग पड़ गई हैं, अन्य नेताओं को ज्यादा तवज्जो मिल रही है।

इसके अलावा विपक्ष का सारा फोकस राहुल गांधी पर है। इसके अलावा अन्य विपक्षी दलों की राजनीति नहीं समझ पाने के कारण नीति आयोग की मीटिंग में शामिल होने वाली वही एकमात्र विपक्षी मुख्यमंत्री थीं, बाकी सब एन.डी.ए के सहयोगी दल थे। वह अक्सर अपनी वरिष्ठता का ढोल पीटती रहती हैं और यह बताती हैं कि वे कई बार सांसद चुनी जा चुकी हैं। प्रैस की सुर्खियों में आने के लिए नियमित रूप से वे ऐसी हरकते करती रहती हैं।

जे.डी.ए. सचिव...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बताया गया कि परिवादी पी.आर.एन. का सफल आवंटी है, लेकिन उसे पी.आर.एन. में भूखंड का कब्जा नहीं दिया गया, जिस पर उसने उपभोक्ता आयोग में परिवाद दायर किया। आयोग ने 26 जुलाई 2013 को फैसला देते हुए जे.डी.ए. पर 2500 रुपए हर्जाना लगाते हुए निर्देश दिया कि वह परिवादी को पी.आर.एन. में ही भूखंड दे। जे.डी.ए. ने आदेश की पालना करने के बजाय, इसे राज्य उपभोक्ता आयोग और बाद में राष्ट्रीय उपभोक्ता आयोग में चुनौती दी, लेकिन दोनों ही जगह पर जे.डी.ए. हारा और जिला उपभोक्ता आयोग का फैसला बरकरार रखा गया। इस पर जे.डी.ए. ने राष्ट्रीय उपभोक्ता आयोग के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने भी गत 13 फरवरी को जे.डी.ए. की एस.एल.पी. खारिज कर दी। इस पर परिवादी ने उपभोक्ता आयोग में चल रहे अवमानना मामले में आदेश की पालना करवाने का आग्रह किया, जिस पर आयोग ने जे.डी.ए. सचिव के गिरफ्तारी वारंट व जे.डी.सी. के जमानती वारंट जारी कर उन्हें तलब किया है।

राजस्थान से...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रुप से डॉग मीट खाया जाता है, वहां भी मांस के लिए कुत्ते को मारना प्रतिबंधित है। बेंगलुरू पुलिस ने कहा कि राजस्थान से आने वाले मीट को मटन कहकर बेचा जा रहा है, जबकि वास्तव में, वो मटन नहीं है। यदि लैब परीक्षणों में इस बात की पुष्टी हो गई कि यह कुत्ते का मांस है तो आरोपियों के खिलाफ सख़्त कार्यवाही की जाएगी।

ममता बनर्जी ने...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

दोनों से मुलाकात की थी। मुख्य बात यह है कि बनर्जी ने कई बार इंडिया गठबंधन के सहयोगी दलों से भिन्न रुख अपनाया था, परन्तु मोटे तौर पर वह भाजपा का विरोध करने वाली ताकतों के साथ प्रतिबद्ध रही हैं। मनोज झा ने यह भी कहा कि "भाजपा यदि यह सोचती है तो यह उसकी गलतफहमी है कि विपक्षी समूह में समन्वय की कमी है। समन्वय है या नहीं है यह एक बिलकुल ही अलग बात है। परन्तु, सार यह है कि हब सब एकजुट हैं और एकसाथ खड़े हैं।"

महबूबा मुफ्ती ने अमित शाह से कश्मीर मसले पर खास अपील की

महबूबा मुफ्ती ने अमित शाह से कहा, आप कश्मीर और पी.ओ.के मसले पर शांति स्थापित करने के लिए दोंनो देशों के 20-20 प्रतिनिधियों की एक समिति बनाइये

- **महबूबा मुफ्ती ने अमित शाह से कहा कि राष्ट्र हित में वे अपना अहंकार त्याग दें और लाइन ऑफ कन्ट्रोल (एल.ओ.सी.) के दोनों ओर के लोगों के प्रतिनिधियों की बैठक कराएं, जैसा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने कार्यकाल के दौरान किया था।**

श्रीनगर, 27 जुलाई। पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू कश्मीर को वापस लाने के लिए पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की प्रमुख महबूबा मुफ्ती ने एक सुझाव दिया है। महबूबा मुफ्ती ने शनिवार को क्षेत्र के मुद्दों पर चर्चा के लिए जम्मू कश्मीर में नियंत्रण रेखा के दोनों ओर के लोगों के प्रतिनिधियों की एक समिति बनाने का आव्हान किया। पीडीपी के 25वें स्थापना दिवस समारोह में महबूबा ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से प्रत्येक पक्ष के 20 प्रतिनिधियों की एक समिति बनाने की अपील की।

उन्होंने कहा, "अमित शाह कहते हैं कि वह कश्मीर (पाकिस्तान के कब्जे वाला कश्मीर) वापस लाएंगे, जबकि आप हम मुसलमानों से कहते हैं कि पाकिस्तान चले जाओ।" पीडीपी अध्यक्ष ने कहा, "हालांकि मेरा आपसे एक अनुरोध है। जब तक आप उस हिस्से को वापस नहीं लाते, तब तक इस कश्मीर और उस कश्मीर के प्रतिनिधियों की एक समिति बनाइए तथा हमें साथ लाइए। हम साल में दो बार एक साथ बैठेंगे और हमारे सामने आने वाले मुद्दों पर चर्चा करेंगे।"

उन्होंने शाह से कहा कि राष्ट्र के हित में वह अपना अहंकार त्याग दें और नियंत्रण रेखा (एलओसी) के दोनों ओर के लोगों के प्रतिनिधियों की बैठक कराएं जैसा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने कार्यकाल के दौरान किया था। महबूबा ने कहा, "क्या आपमें हिम्मत है अमित शाह साहब? आप कहते रहते हैं कि आप उस कश्मीर को वापस लाएंगे। वह कश्मीर बहुत दूर है, उनके 20 प्रतिनिधि और हमारे 20 प्रतिनिधि लाइए और हमें एकसाथ बैठने दीजिए।" उन्होंने सवाल किया, "क्या आप ऐसा कर सकते हैं? क्या आपमें ऐसा करने की हिम्मत है? क्या आपमें वाजपेयी की तरह देशभक्ति है कि आप जम्मू कश्मीर के लिए अपने अहंकार का त्याग कर दें?" महबूबा ने देशभर की जेलों में बंद कश्मीरी युवाओं को रिहा करने का भी आव्हान किया।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू (राज.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2009/28296 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600